

Lala Balgovind

। रहस्य काव्य शृङ्गार ।

अर्थात्

साहित्य और सङ्गीत का एक अपूर्व ग्रन्थ ।

जिसे बहुत परिश्रम से जिला गोरखपूर परगना सिधुआ पड़रौना निवासी श्री मान् ईश्वरी प्रताप नारायण राय भक्त शिरोमणि ने सन्तों तथा रसिकों के चित्त विनोदार्थ रचना किया ।

तिसे बाबू मदनगोपाल राय वो बाबू उदित नारायणराय की आज्ञाऽनुसार

पी० सी० चौधुरी एंड को ने बनारस न्यूमेडिकल हाल् प्रेस में छापा ।

दोहा

गिरि गुन ग्रह भू संवतै माघ मास ससिवार।
चन्द्र बसू सिधि स्वर्ग सन् जनवरिविंशतिचार ॥

। रहस्य काव्य शृङ्गार ।

अर्थात्

साहित्य और सङ्गीत का एक अपूर्व ग्रन्थ ।

जिसे बहुत परिश्रम से जिला गोरखपूर
परगना सिधुआ पडरौना निवासी श्री
मान् ईश्वरी प्रताप नारायण राय भक्त
शिरोमणि ने सन्तों तथा रसिकों के
चित्त विनोदार्थ रचना किया ।

तिसे बाबू मदनगोपाल राय वो बाबू
उदित नारायणराय की आज्ञाऽनुसार

पी० सी० चौधुरी ऐंड को ने बनारस
न्यूमेडिकल हाल् प्रेस में छापा ।

दोहा

गिरि गुन ग्रह भू संवतै माघ मास ससिवार ।
चन्द्र बसु सिधि स्वर्ग सन् जनवरिविंशतिचार ॥

। श्रीगणेशायनमः ।

वृन्दावनं सुखनिधिं कुसुमाकराढ्यं श्रीभानविपुलिनकांच
नभूमिकान्तम् । वैदूर्य्यपल्लवहुरत्नसुरत्ननीलं नानाखगैर्मृग
गणैः परितोविभान्तम् ॥ १ ॥ तन्मध्यगोवर्द्धनराजसंगीरीम्
कल्पद्रुमैश्शोभितकाननोत्तमम् । विचित्रसिंहासनसुप्रकाशितं
तत्रैवराधाप्रियवल्लभंभजे ॥ २ ॥ श्रीराधारसिकंशिरोमणि
वरंसद्गोपवृन्दैर्वृतं मुग्धादिविविधांगनाश्रितपदंध्यातंहृद-
ब्जे सदा । योगीन्द्रैरपिपूजितंगुणिजनैः संवर्णितंनित्यशो वृ
न्दारण्यविहारिणंचिरतरंगोगोपिकासेवितम् ३॥ वृन्दावना
न्तर्गतेगिरिराजमुर्द्धनि श्रीरामकृष्णचरणाब्जपुरंनमस्ये ।
गोगोपिकाधरणिमंडनमेवनित्यम् ब्रह्मादिभिःसुरगणैःपरि-
चिन्तनीयम् ॥ ४ ॥ नीलेन्दीवरतुल्यकृष्णवदनं स्वर्णाम्बरालंकृ
तं मुद्रांज्ञानमयींदधानमपरं हस्ताम्बुजंजानुनि । राधांपार्श्वं
गतांसरोरुहकरांविद्युत्प्रभांपादवं पशान्तंमुकुटांगदादिवि
विधाकल्पोज्वलाङ्गंभजे ॥ ५ ॥ श्रीपालवनोत्तमधामजन्मा
श्रीलाडिलालासुभक्तिकर्म्मा । नारायणीसंभवसिद्धसन्नारा
जेश्वरीयुक्तप्रतापधर्म्मा ॥ ६ ॥ तस्माज्जातस्तनयवरःश्रीमान्म
दनगोपालरायः । वल्लविप्रियजनसेवि हरिभक्तःश्रीहरिदास
दासानुदासः ॥ ७ ॥ स्वराजधानीपरिपालनाय सत्साधु
गोविप्रसुरार्च्चनाय । पुत्रोभवत्तस्यसुवंशकर्म्मा उद्योतनारा-

यणरायनामा ॥८॥ तस्माज्जातोराजकुमारः सचिरंजीव्यात्साधुद्विजाशिषावै । भूयात्सहजोह्यकुमारः मातापित्रोस्वकुटुम्बसुखदाता ॥ ९ ॥ चन्द्रनागवसुचन्द्रसम्मिते माघशुक्लवरपञ्चमीतिथौ । श्रीप्रतापकृतरागसंचय रहसिकाव्यशृङ्गारसंग्रहः ॥ १० ॥ कलिन्दजाकूलनिकुञ्जपुञ्जे रासेश्वरो रासप्रियाभियुक्तः । अनेकगोपीपरिसेवितांघ्रिर् मुदामहारासकरोननर्त ॥ ११ ॥ श्रीरासलीलाविजयप्रदास्यात् रुक्काव्यकर्तुःपरिषज्जनस्य । साम्राज्यवंशोद्भववृद्धिदात्री सद्भक्तिकर्त्रीहरिराधयोर्भृशम् ॥ १२ ॥

अथ पञ्चरत्न लिख्यते ।

श्यामारासविलासिनीरसिकिनीफुल्लारविन्दाशनीरासोल्लासप्रकाशिनीविलसिनीविज्ञानसंकाशिनी । कृष्णाकृष्णविहारिणीसुनयनीसंसारसंतारिणी । दास्यंदेहिव्रजेश्वरी सुखकरी प्रियसर्वेश्वरीराधिके ॥ १ ॥ विद्यासिद्धिकरीमहाद्युतिकरी दीनानुकम्पाकरी वीणापद्मधरी सदाशिवकरी वृन्दावनाधीश्वरी । भक्तानन्यकदम्बपालनकरी श्रीकृष्णप्राणेश्वरी दास्यंदेहिव्रजेश्वरी सुखकरीसर्वेश्वरीराधिके ॥ २ ॥ गुञ्जाकुञ्जविहारिणीसुहरिणीहारामनोहारिणी गांधर्वीरसमञ्जरीरसमयीशृङ्गारसंजीविनी । गत्यामत्तगजेन्द्रदर्पदमनीआनन्दसंवर्द्धिनी दास्यंदेहिव्रजेश्वरीसुखकरी सर्वेश्वरीराधिके ॥ ३ ॥ कान्त्याचंपकनिन्दिनीन्दुवदनीसंमोहिनी माधवी कृष्णप्राणप्रियाचकृष्णरमणीनीलाम्बरीसुन्दरी ।

गत्याचित्तसुनर्तिनीकमलिनी मञ्जीरभङ्कारिणी दास्यंदेहिव्रजेश्वरीसुखकरीसर्वेश्वरीराधिके ॥ ४ ॥ प्रेमानन्दस्वरूपिणीसुतरुणीदेवैस्सुदुर्दर्शिनी भक्तामानसगोचरारतिपरा संभुक्तिमुक्तिप्रदा । कैशोरीकमलाननाद्भुतमना बालाविशालेक्षणा दास्यंदेहिव्रजेश्वरीसुखकरीसर्वेश्वरीराधिके ॥ ५ ॥ इतिश्री राधा पञ्चरत्न संपूर्ण । द्वितीय पञ्चरत्न लिख्यते । वैराग्येनचमेनशास्त्रव्यसनं ध्यानंचवैनिर्मलं नोविप्रनसरचकाकयातुविहिते धर्मेहिनोमेमतिः । तस्मात्त्वंकृपयासत्करुणया मांपाहिदुःखार्णवात् दास्यंदेहिदयानिधे सुखनिधेशोभानिधेमाधव ॥ १ ॥ तीरेशंकलितेकलिन्दतनयावानीरकुञ्जेवरे पर्य्यंकेकुसुमेनिधायललिते स्वांकेप्रियांराधिकां । नित्यंकेलिकलारतंसुललितंसख्यादिभिःसेवितं दास्यंदेहिदयानिधेसुखनिधेशोभानिधेमाधव ॥ २ ॥ राधाकान्तप्रभांनिधेरसनिधेकंदर्प्पक्रीडानिधे सान्द्रानन्दनिधेमहागुणनिधेशृङ्गारलीलानिधे । रासोल्लासकलानिधेरतिनिधेभक्तानुकंपानिधे दास्यंदेहिदयानिधेसुखनिधेसोभानिधेमाधव ॥ ३ ॥ हेवृन्दावननाथगोकुलपतेगोलोकनाथप्रभो राधानाथरमापतेरतिपतेगोपीपतेश्रीपते । हेकृष्णकमलापतेव्रजपतेवृन्दापतेहेविभो दास्यंदेहिदयानिधेसुखनिधेशोभानिधेमाधव ॥ ४ ॥ आदर्शसुकपोलकुण्डलचलन्नीलालकंश्रीमुखं श्रीराधावदनारविंदमधुपंपीताम्बरंसुंदरं । कारुण्यंकुरुदीननाथनितरांदीनंप्रपन्नंचमां दास्यंदेहिदयानिधेसुखनिधेशोभानिधेमाधव ॥ ५ ॥ इति ।

। ध्यानमञ्जरी ।

जय श्री नंदकिशोर जयति वृषभान किशोरी । जीवन रसिक अनन्य सदा सुंदर यह जोरी ॥ सुन्दर स्यामल गौर वेनु वीनाकर भ्राजे । नव यौवन मदमत्त सदा घूर्णित दृग राजे ॥ क्रीड़त कुञ्ज कुटीर कोटि क्रीड़ा रस रासी । वारत ब्रह्मानंद वृन्द वृंदावन बासी ॥ कञ्चन मनिमय रचित पंच जोजन वृंदावन । जेहि सेवत सुरवृंद धारि खग मृग द्रुम तृन तन ॥ १ ॥ फूलि रहे फलि रहे फैलि रहें लता ललित द्रुम । राजत विविधि निकुंज पुंज अलि कुल मद विभ्रम ॥ कलसु कलित द्रुम अवलि काहु कहिये छवि ता कर । जेहि साजत नित रहत आय माली कुसुमाकर ३ ॥ फल फूलनि के भोर अवनि द्रुम साख रहे झुमि । जनु मन सामा साम अंहि अंभज चाहत चुमि ॥ तापर प्रफुलित जाल माल वेलिन की सोहैं । झूमि रहे छवि भौर भुराड भवरन की मोहैं ॥ ४ ॥ राजत खराडरि साल पुंज संजर सिर धारैं । गुंजत अलिकुल मत्त मत्त कलरव किलकारैं । अभिनव विटप असोक सोक हारी छवि छाजैं । सुर मुनि मन रमनीय पुंज कोमल दल राजैं ॥ ५ ॥ वल्लि मल्लिका जाल मालती चहुंदिसि फूले । मानहुं विसद वितान कुंज प्रति कुंजन झूले ॥ विविधि भांति के वृच्छ वृंदारक राजैं । सुखमा सुखद अनूप रूप अदभुत अति छाजैं ॥ ६ ॥ किसलय कोस प्रसून पुंज अदभुत छवि

वन को । निरखि रुचिरता कुंज रहत नहि सुधि तन मन
को ॥ तिन पर अधिक सोहात भांति बहु सुंदर राजै ।
रंग रंग विहंग विलास ललित द्रुम डारन साजैं ॥ ७ ॥
सारिक कीर चकोर मोर कोकिल किलकारत । मानहु
मुनिजन वृंद वेद की रिचा उचारत । छाया सुखद नि
कुञ्ज पुञ्ज आनंद उर सरसत ॥ डोलत त्रिविधि समीर
धीर सौरभ रस बरसत ॥ ८ ॥ सुमन अलिन को पुञ्ज
कुञ्ज वीथी सब सांकर । सन्तत सुखद बिलास बास
कीन्ही कुसुमाकर ॥ वृंदावन छवि छाइ चारु चित सुर
मुनि लोभा । साज्यौं सकल सकेलि मनो त्रिभुवन की
शोभा ६ ॥ पुरुष प्रकृति तें परे धाम वृंदावन भाई । अति
दुर्गम दुरलक्ष भेद वेदहू नहि पाई ॥ गुल्म लता तन धारि
वास ब्रह्मादिक चाहैं । प्राकृत उक्त न कौन रूप ताको
अवगाहैं ॥ १० ॥ वहति कुण्डलाकार भानु नंदिनी सोहा
वन । सेवत अन्तर धरे निरन्तर वर मन भावन ॥ राजत
अति सति जल रल सोपान संवारे । झलकत झलक वि
चित्र चित्र जगमग मनिवारे ॥ ११ ॥ जलक्रीड़ा थल घने
बने जल मन आकरसैं । विविधि रंगीली सजी मोर पंखी
तहं दरसैं ॥ गरजत मंद प्रवाह नाभ लौं जल बड़ भागी ।
विचरत जलचर विविधि सराम सरामा अनुरागी ॥ १२ ॥
फैलि रहे प्रतिबिंबु अंबु मधि सोभा निकसे । रंग रंग के
सत्पत्र पूरि मकरंदन विकसे ॥ अलिकुल कल चल भुंड

पुण्डरीकन पर राजैं। मुखरव मधुर विलास बास मद विभ्रम साजैं ॥ १३ ॥ बर सौरभी समीर तीर तीरन कल डोलत। सीतल मंद सुगन्ध चित्त अति आनंद खोलत ॥ कुल चकई चकवाक क्रौंच कारंड विसोहत । मण्डल कुल कल हंस अंबु कुक्कुट मन मोहत ॥ १४ ॥ बैठत किलकि मृनाल जाल जल विहरत डोलत। मिथुनी भूत विमत्त पद्म खंडन कल बोलत ॥ रङ्ग रङ्ग दिव्य विहंग मंजु कूजन मन भावै। तपन सुता को रम्य रूप कापै कहि आवै १५॥ नाम लेत कल्यान पुञ्ज सुकृत जन मंजै। करि जग विविधि विलास अन्त गोपुर रमि रंजै॥ हरो मनोहर नीर धीर धारा मनभावनि। मन वांछित फल देनि जनन जमुना जग पावनि ॥ १६ ॥ गोपद सम भव सिन्धु तरत नर कर छिन परसत। दुस्तर त्रिविधि कलेस लेस स्वप्नेहु नहि दरसत। द्रुम कदमन की भीर तीर सोभा सरसाये। साख सघन जल मध्य मध्य झुकि झुकि छबि छाये॥ १७॥ कलित ललित लपटाय जाल बेली बर झूले। रितु अनरितु के फूल पीत सित असित सुफूले॥ ऐसे बन के बीच दिव्य द्रुक थल मनभावन । भूमि रहे जहां लता ललित अति सघन सोहावन ॥१८॥ तहां कुंडलाकार सुष्ट अष्टनि कुञ्जावलि। जहां निरन्तर वास अष्ट सहचरि पुञ्जावलि॥ प्रति कुञ्जनि के द्वार दिव्य द्वै द्वै कल्पद्रुम। भँवर करत गुञ्जार माधवी लता रहे झुमि ॥ १९ ॥ राजत प्रति द्रुम

दिव्य कीर मण्डली स्वतन्तर। राधा राधा कृष्ण कृष्ण
धुनि पढ़त निरन्तर॥ नाना मनिमय खचित दिव्य अति
अजिर बिलासै। जहां निति गगन अखण्ड मण्डि सर इंदु
प्रकाशै॥२०॥ ताके मधि इक स्वच्छ इच्छ हरिचंदन राजै।
ता तल इक अभिराम धाम चिन्तामणि भ्राजै॥ अष्टकोन
आकार अष्टद्वारा मन मोहै। मनिमय जटित कपाट जोति
जगमग झलको है॥२१॥ मनि मोतिन की द्वार द्वारप्रति
झालरि झूलै। जगर मगर दुति देखि देखि मन के मन
भूलै॥ राजत वंदनवार चारु तुलसी कुसुमावलि। बैठत
लपटत उड़त झुकत गुञ्जत भृङ्गावलि॥२२॥ मंदिर मध्य
अनूप रूप रचना मनमोहैं। कल दरपन के कुण्ड अकृत
दरपन के सोहैं॥ चारौ चित्र विचित्र चित्र श्रेनी बर दर
सैं। बिछी सुकोमल दिव्य लाल मखमल की फरसैं॥२३॥
मधि अभूत अभविष्य दिव्य इक रत्न सिंहासन। कोटिक
दिनकर निकर प्रभासम प्रभा प्रकाशन॥ ताके मधि दे
दीप्त लिप्त सोभा मनमोहै। पद्मराग मनि जलज मंजु षो
ड़स दल सोहै॥२४॥ तामधि जुगल किशोर गौर श्या
मल छवि छाजै। अद्भुत प्रभा प्रकाश धाम लावन्य विरा
जै॥ मूरति प्रेम सिङ्गार चारु आशन विलसत कल।
किधौं मयंक पतंग सङ्ग उदये उदयाचल॥२५॥ घन दा
मिनि तन धरे काम रति धौं सुखदायन। किधौं लसत इ
न्दिरा सङ्ग श्री मन्नारायण॥ चपला चम्पा कनक निका

वर गौर वरन की। थकित जकित अति होति जोति वर नत गति मन की॥ २६॥ नगन जरे छबि भरे विविधि भूषन तन चमकैं। जगमग जगमग जोति अङ्ग दामिनि सी दमकैं॥ मेचक बेनी विनी पीठ ऊपर परिआयो। मनु मतवारो नाग केलि दल पर अरसायो॥२७॥ रत चन्द्रिका चूड़ चारु चिकुरन विच सरसै। किधौं नील नग सिपर दिव्य दीपक दुति दरसै॥ अद्भुत उज्जल मंजु मांग मोती छवि छाई। जनु कालिंदी मध्य गङ्ग धाराधसि आई॥ २८॥ सुख मण्डल सुअनूप रूप उपमा सब हारैं। कोटि मुकुर अरविंद इंदु सुखमा सुख वारैं॥ गजमुक्ता सब गुथे केस मेचक मैं चमकैं। मनो निवि उत्तम मध्य जोति उड़ मण्डल दमकै॥ २९॥ बंदी कनक जराव भाल मंडन अद्भुत लसि। जनु ससि घन के बीच दामिनी लता रही धसि॥ सुभग सोहावन माल लाल वेना मनि भाजै। मनु विधु मण्डल मध्य भिन्न मण्डल धसि राजै॥ ३०॥ ता तल वेंदी लाल सयाम विंदी सङ्ग सोहै। जनु कुजसनि आसीन चन्द्र मण्डल मधि मोहै॥ लसैं सचिक्कन चपल शयाम तिरछी द्वौ भौंहै। किधौं सरद विधु बीच नाग छवना है सोहै॥३१॥ प्रफुलित नैन विशाल हास्य चितवन छविछाजैं। दुहूं नोकीले द्रूचे रेख अंजन मधि भ्राजैं॥ चखे चपन छवि शयाम रंग पलकन लपटाने। लखत लखत धौं सयाम भृङ्ग किमलों सरसाने॥ ३२॥ खंजन सारस

लक्षणसार उपमा सब भूले। मनो सरद विधु बीच इंद इंदीवर फूले॥ करन करन फुल फलैं कनक तल झूमक भूमैं। अद्भुत परि प्रतिविम्ब गण्ड मंडल अति घूमैं ३३॥ उरझि करन फूल कनक स्याम अलकनि यों दमकैं। मनो समनि फनि फंद इंद दिनमनि परि चमकैं॥ झलकत अद्भुत गोल गंड मंडल छवि छाई। जामैं सजत स्वरूप ल.ल दर्पन बिसराई॥ ३४॥ कल अलकैं मुख परी पुञ्ज सुखमा सरसाने। मनो सरद विधु अंग नाग छवना लपटाने॥ नासा बेसरि लसै मंजु मुकता कल हेलैं। मनो मुदित मन शुक्र चन्द्र मंडल मधि खेलैं॥ ३५॥ अरुन अधर मृदु लसैं बिम्ब विद्रुम छवि छीने। तापर अति छवि देत नाग बल्ली रंग भीने॥ अरुन बिरी छवि भरी शुभ्र दन्तावलि सोहै। छिन छिन प्रति छवि देखि जासु मन मोहन मोहै॥ ३६॥ सारद विधु अकलंक नीलगिरि शृङ्ग जुनिकसैं। ता विधु मंडल मध्य लाल सरसिज इक विकसै॥ ता सरसिज के बीच दिव्य दामिनि जौं दमकै। तऊ प्रिया मुसक्यान रूप उपमा नहि जमकै॥ ३७॥ रुचिर चिवुक विच ललित स्याम लीला छवि सरस्यो। मनहु गुलाब प्रसून मत्त अलि छवना अरस्यो॥ कलित किनारी जरी नील अम्बर मुख राजै। मनहु सुधाकर सघन विज्जु परिवेष विराजै॥३८॥ गोर प्रभा झलमलै स्याम अंबर मधि अद्भुत। स्याम घटा के ओट व्यक्त बैठी जनु विद्युत॥ स्तम्ब कनक प्रति दिव्य

अंबु कालिंदी कलकै। मधि मरकत फानूस दिव्य दीपक धौं झलकै ॥ ३९ ॥ पीक प्रभा झल मलै ग्रीव सुंदर मृदु सोहै। भरे बचन अनुराग लाल ग्रैवेय किधौं है ॥ चंपा कली जराव ल.लनग जगमगराई । मनु शोभागर परी गर्ब शोभा बिसराई ॥ ४० ॥ तुङ्ग ललित अति पीन स्वच्छ वक्षज छबि सोहै। शोभा गढ के सुदृढ गूढ द्वै बुर्ज किधौं है॥ छबि सरवर के उभै चारु चकवाक बिराजै। किधौं स्वर्न के बेलि स्वर्न श्रीफल द्वै राजै॥ ४१ ॥ ऊपर उरज उतंग रंग मेचक छबि छायो। पीत कमल के कोस मत्त मनु अलि अरसायो॥ पूरि हृदय छबि स्याम अंग मन उमगि रह्यो है। हिलत मिलत धौं श्याम श्याम शोभा उमह्यौ है॥ ४२ ॥ अरुन कंचुकी लसै कोर मंडित जरतारी। छाय रही धौं हृदय प्रेम अनुराग बिहारी॥ कढि आंगी तैं अंग ओप ऊपर सरसायो। ज्यौं पर ब्रम्ह प्रकाश बिश्व मंडल भरि छायो॥ ४३ ॥ दिव्य कलस द्वै लाल लालपट बंधे बिलासै। किधौं कमल के कोस इंद इंदिरा प्रकासै॥ गज मोतिन की हार चारु बिलसत परि तापर। बैठि रही जनु चौलि इंदु सिंदूर सिला पर ॥ ४४ ॥ झलक पटिक क.लधौत नील अंबर कटि सरसै। मनु दिनमनि प्रति बिंब अंबु कालिंदी दरसै॥ जुगल कमल के बीच बैठि क.ला मन मोहै। संधि रिला सिंदूर किधौं प्रद्योतन सोहै ॥ ४५ ॥ सुभग उभै भुजलता

लाल करतल कल सोहै। प्रफुलित वास मृनाल लाल है कमल किधौं है॥ मंडित रुचिर चुनिन जुग्म बाजू बंद राजै। और प्रकोष्टन बीच हरी चुरियां छवि छाजै॥ ४६॥ कंकन कनक जराव चारु शोभा सरसानी। मनु मृदु जुग्म मृनाल जुग्म दामिनि लपटानी॥ करपृष्टन करफुलन अछवि छटा अलेषित। मधि मरकत नग लसै लाल चूनिन परि वेषित॥ ४७॥ कर पल्लौ मृदु लसै स्वर्न मुंदरी दुहु दमकैं। जगर मगर उद्दोत जोति चूनीगन चमकैं॥ लसत अरुन नख अवलि आरसी प्रभाप्रकासन। जनौ बिपुल छबि मान भान बैठे कमलासन॥ ४८॥ सरसिज दल नवनीत नर्मउदरो परवारौं। जापर फिरत सुदृष्टि लाल बिछलत से चारौं॥ नाभी ललित गंभीर भौर उपमा सब भूलैं। जामैं परि दृग स्याम और रोहित लौ घूमैं॥ ४९॥ बिलसत चलचल स्वास बलनु त्रिवली दल परके। जामौं मन चित बुद्धि रूंधि रहे श्री नटवर के॥ अति सूक्षम कटि लसै नीठ निरखै प्रिय जानैं। ज्यौं सूक्षम गति ब्रह्म ब्रह्मग्यानी पहिचानैं ५०॥ सुचि मंदिर लावन्य सुख श्रोणि थलराजै। अति अद्भुत अभिराम स्याम अम्बर छबि छाजै॥ तापर कल किंकिनी जाल माला बर सोहै। डोलत गति कलहंस मंद मुखरव मन मोहै॥ ५१॥ बिलसै तोइ हरि हेरि नीबी मन भूलैं। कल फूदना है दिव्य हेमत्तारीको भूलैं॥ रम्भ तरुण से ललित युग्म जंघा बर सोहै। केलि जग्य के सुदृढ सुख्म

एजूपननो है॥ ५२॥ जानु पार्ष्णि छवि गूढ़ गुल्फ सून्ब्र
वनि आयो । तापर अति छवि देत नील दामन छवि
छायो॥ जरतारिन की कोर दिव्य तापर कलचलकै। टके
सुनहरे बोर छोर गोषरू अति झलकै॥ ५३॥ मनु दिनम
नि दुरि अम्बअम्ब कोरन आभाभिनि। किधौं प्रियातन रंग
देखि पायन परिदामिनि॥मंडित मणिमंजीर मंजु पायल
बिच जोरी। उठत मधुर झंकार रास जब रचति किशोरी
॥ ५४॥ नाना मनिगन रचित वांक बिछिया छवि मोहैं।
जटित सुभग नग लाल स्वर्न अनवट अति सोहैं॥ ललित
अरुन नख क्रांति अंघ्रि पल्लव मृदु राजैं। सहज अरुन तलचर
न पक्व बिंबा फल लाजैं॥ ५५॥ चपि भूषन के भार लाल
आभा कढि आई। रसिकन को अनुराग भीनि धौं अति
छवि छाई। दृग्यौं दृगन पसारिकंही उपमा नहि दरसैं॥
गुडहर होत गुलाब तल्प जाके छिन परसैं॥ ५६॥ हरि
हद कै एउभै लाल सरसीरुह सोहै। किधौं हृदय आकास
दास के दिन मनि मोहैं॥ या विधि निधि सौंदर्य वर्य रा
जति श्री राधा। झलकत झलकत रंग अंग प्रत्यङ्ग अगा
धा ५७ अंग परसि प्रषदस्व हृत्तवल्ली जो परसत।सो दिसि
पूरि सुवासु आसु मलयज ह्वै सरसत॥ वय पंचादस वर्ष
भाव भावित कछु भोरी। वीना मंडित पानि प्रेम मूरति
सोगोरी॥५८। भ्राजत दक्षिन भाग नंदनंदन सुष दाता।
इन्द्र नीलमणि मेघ इन्दिवर सम छवि गाता॥ ललित अरु

न तल चरन चिन्ह कुलिसादिक मंडे। प्रणत जननकी सदा अद्रि संकट जो खंडे ॥ ५९ ॥ पद पह्नौ अति मृदुल सराम सोभा अति पैनी। संतन के मन रूसे किधौविलसैं नष श्रेनी ॥ मण्डित मृग मद मलय मोद मिश्रित कुंकुम जटि। गुञ्जत मधुर विमत्त भृङ्ग सौरभ रस लंपट ॥ ६० ॥ जाकी छवि अवलोकि थोक कमला निज कीनी। शंभु सनंदन आदि चित्त जापै दृढ़ दीनी ॥ त्रिभुवन को सुख त्यागि जाहि जोगी जन ध्यावैं। ता पद की माधुरी कहो कापै कहि आवैं ॥ ६१ ॥ मनि रञ्जित मञ्जीर मंजु पायन विच सोहैं। सुनि सुनि धुनि मधु मन्द होहिं नहि वस अस को हैं ॥ सुंदर कोमल चरन वरन लखि सरसिज लाजैं। जानु उभै मृदु मूढ़ गूढ़ द्वौ गुल्फ विराजैं ॥ ६२ ॥ विलसत श्रोणी सुष्ट पुष्ट जुग जंघ सोहाए। तापर पट परिधान पीत सुंदर छवि छाए ॥ सूक्ष्म कटि परजाल भाल किंकिनि कल राजैं। नृत्यत गति संगीत मन्द मधुरी धुनि बाजैं ॥ ६३ ॥ नाभि रुचिर गम्भीर वलगु त्रिवली छवि छाई। उदरो पर अभिराम रोम श्रेनी वनि आई ॥ गज मोतिन की हार तुंग वक्षो परभाकर। मरकत मनि के सैल उए जनु सहस सुधाकर ॥ ६४ ॥ उर झलकत श्री वत्स कंठ कौस्तुभ मणि झलकैं। त्रिवली ग्रीव विलोकि नेक लागति नहि पलकैं ॥ उन्नत कल भुज मूल गूढ़ द्वौ सम छवि छाए सारूल भुजा प्रलम्ब सुमनि भुजबंद सोहाए ॥ ६५ ॥

नाना मनिगन जटित रुक्म कंकन कर दमकैं। सुन्दरी र चित चुनिन पानि पल्लव प्रति चमकैं॥ नख स्रेनी छबि देति जोति जगमगत बिलासन। बैठि रही जनु चन्द्र मण्डली कमल दलासन॥ ६६॥ सुन्दर गोल कपोल लोल कुंडल छबि छाई। सांचे भए समीर गण्ड सोभा सर पाई॥ कुटिल सचिक्कन नील गण्ड जुग राजित अलकैं। नासा मधि सुचि शुभ्र नाग मुक्ता छबि झलकैं॥ ६७॥ प्रफुलित राजिव नैन वंक भृकुटी द्वौ सोहैं। सर चितवन के चांप अभ्भली औलि किवौं हैं॥ केसर तिलक विशाल पट्टल मधि भ्राजत। रुचिर रदन की पांति अरुन अधराधर राजत॥ ६८॥ मन्दमन्द मुसुक्यान घ्रान सुर मुनि मन मोहैं। मुख सुखमा कहि सकै कहो अस बड़ कवि को हैं॥ अद्भुत लसत किरीट कोटि नाना मनि मण्डित। जनु राजत रवि अग्र चक्र घनस्याम अखण्डित॥ ६९॥ मण्डन मुकुट विचित्र सीस नग जगमग राजैं। तापर स्वच्छ सुगुच्छ मोर चन्द्रिका विराजैं॥ चरचित चंदन पिंग अंग सोभा सरसाई मनहु प्रिया उरवसी रूप ऊपर कढ़ि आई॥ ७०॥ उर भलकत बनमाल प्रत्त कुंकुम रतनारे। उड़त करत भंकार भौर भंवरा मतवारे॥ षोड़श वरस किशोर पिंग अम्बर वर भ्राजै मृदु मूरति रसराज स्याम सुंदर छबि छाजै॥ ७१॥ मनिमय रचित विचित्र मंजु मुरली मन मोहैं। शप्त सुरन सौं भरी लाल करतल विच सोहैं॥ यौं राजत श्रीकृष्ण सवि

दानंद विहारी। कोटिक मित्र मयङ्क मेव मनसिज छवि वारी ॥ ७२ ॥ नागर युगल किशोर कोर है दृगन लड़ावत। चञ्चल भुवन विशाल चित्त अन्योन्य चोरावत ॥ मन्द मन्द बतरात हाथ गहि हंसत हंसावत। परसि पसीजत जात गात पुलकत पुलचावत ॥ ७३ ॥ छनिक बिरी मुख देत लेत लालन छिन रोकत। छनिक चिवुक गहि लाल लाड़िली वदन विलोकत ॥ छन इक परसि कपोल लाड़िली अल क सुधारत। निरखि प्रिया मुसक्याति और उरभात न सं भारत ॥ ७४ ॥ छनिक परस्पर दोऊ सिंधु अधराधर पीवत छनिक प्रिया वक्षोज लाल डरपत से छीवत ॥ छनिक सु रति सुख हेत लाल जोरेकर एरत। सलज सरोस सहास नीठ लाड़िली तरेरति ॥ ७५ ॥ छनिक गरे लपटाय सभुज भरे दै अरसत। छिनक छवीले लाल गराड सों गराडनि प रसत ॥ छनिक प्रिया मुसुक्याइ ल ल सों नैन लड़ावै। छ निक सुग्रीव लच य ल ल कर करूल नचावै ॥ छनिक रं- गीलो कान्ह तान बंसी विच गावै। गति पर व ल मञ्जीर बीन लाड़िली बजावै ॥ छनिक छवीली छीनि आपु बांसु री बजावति। गति पर स्याम प्रवीन बीन मञ्जीर मिला वत ॥ ७६ ॥ छनिक दोऊ मिलि मन्द मंद मधुरे धुनि गावैं। नैनन सैनन बीच परस्पर दोऊ रिझावैं ॥ छिन द्वौ दै गलवांह मत्त प्यारी अरु प्यारे। हंसि हंसि झुकि झुकि जात नवल जोबन मतवारे ॥ ७७ ॥ छनिक दोऊ अैंडात

अंग तोरत भुज उलटत। ललकि हिये लपटात जनों हिय सो हिय लपटत। छिन द्वौ रसिक अनूप रूप आरसी निहारत। पुलकि परस्पर रीझि रीझि तन मन धन वारत॥ ७८॥ छनिक प्रिया ह्वै स्याम स्याम सुंदर छिन गोरे। रसिक सिरोमणि दोऊ प्रीति की रीति ठगोरे॥ छनिक सुनिज प्रतिबिम्ब वक्ष थल स्याम निहारी। करति रिसौं हैं भौंह सौंह चकित चित प्यारी॥ छनिक छबीली भूलि फूलिचय चपल उछालत। लचकात कल वस लंक श्रवन कुंडल कल हालत॥ छनिक रंगीलो मुकुट नीठ प्यारी सिर धारैं। निज घूंघट पट मारि मंजु मुख मुकुर निहारैं॥ ७६॥ छन दोउ हंसि हंसि फूल गण्ड मण्डल न चलावत। छनिक परस्पर दोऊ आपने वसन ओढ़ावत॥ या विधि राजत दोऊ रत्न सिंहासन संपटु। अति विह्वल आसक्त नर्म क्रीड़ा रस लंपटु। ८०॥ पलन कपोलन पीक लीक रद छद छद राजैं। मद घूर्णित रतनार चारु लोचन अति भ्राजैं॥ नख ते सिख लौं लखत लौटि आवत फिरि नख पर। भए रहैं नटवटा नयन दम्पती परस्पर॥ ८१॥ जानत नहिं दिन रैन मयन क्रीड़ा सुख सागर। रहत निरंतर मग्न मीन लौं द्वौ नव नागर॥ चहुं दिसि द्वौ प्रतिबिम्ब सीस मंदिर विच चमकैं। जनु घन मण्डल कोटि कोटि विद्युति दुति दमकैं॥ ८२॥ दल दल पर चहुं ओर अष्ट सहचरि मन मोहैं। सिधि मूरति तन धरे

किधौं बिम्बलादिक सोहैं ॥ जुगल टहल के हेतु दिव्य ह्वै ह्वै तन धारैं । कोटि सारदा सची उमा रमा रति वारैं ॥ ८३ ॥ मन रमनी गज गमनि चन्द्र वदनी मृग नैनी । बिम्बाधरी सुकेसि कंबु कण्ठी कल बैनी ॥ पीन नितम्बस्तनी नार भुज मृदु मन हरनी । मृदुलांगी कृस कटी केलि जंघी मृदु चरनी ॥ ८४ ॥ बंदी नथ ताटंक हार केयूर विराजैं । कङ्कन मुदरी कनक किङ्किनी नूपुर राजैं ॥ नाना भूषन अंग रंग नाना छवि कोरी । सेवा लीन प्रवीन सुद्ध नित वयस किसोरी ॥ ८५ ॥ ललिता चम्पक लता विसाषा चित्रा जो हैं । ये चारौ कल अली वाम प्यारी के सोहैं ॥ श्रीरंग देवी सुदेवी तुङ्गविद्या इंदुलेषा । प्रिय के दच्छिन लसैं नित्य ये अलि कल वेषा ॥ ८६ ॥ इनके शोभा वसन नित्य सेवा सखि नाऊं । इनके पद सिरनाइ यथामति वरनि सुनाऊं ॥ ललिता ललित अनूप रूप गोरोचण बरनी मोर पिंछ के रंग अंग सारी मन हरनी ॥ ८७ ॥ रचि रचि बातनि कहै हांस्य रस प्रेम वढ़ावै । नाना भांतिन बाल लाल लाड़िलिहि लड़ावै ॥ खड़ी लिए कर पानदान कंचन मन चावै । रचि रचि पानन विरी प्रेम सों दुहुंनि खवावै ॥ ८८ ॥ तिनकी सखी रत्नप्रभा रतिकला सुभा सुमुखी कल हंसी । मनमथ मोदा निपुन भद्र सौरभा प्रशंसी ॥ कल कलापिनी लसै स्याम सुन्दर अनुरागी । श्री ललिता संग रहत प्रेम रस सों सब पागी ॥ ८९ ॥ सखी विसाखा निपुन देह दामिनि सी दमकैं । ता

रा मण्डल भांति वस्त्र सुन्दर तन चमकैं ॥ समौ समौ के वसन चारु चुनि चुनि पहिरावै। छाया सी संग रहत सयाम सयामा मन भावै ॥ ६० ॥ कंचन मनि मै छत्र कोटि दिनकर छवि छीनी। खड़ी भ्रमावै सीस दिव्य शोभा रस मीनी ॥ तिनकी सखी हरनी चपला नैन कुञ्जरी मालति सोहै। अरु माधवी सुभान नारु सौरभी विमोहै ॥ ६१ ॥ सुन्दर सहज सुगन्ध गन्धरेखा तन परसैं। सदा विसाखा सङ्ग अष्ट सहचरि ये दरसैं ॥ चंपक लता अनूप रूप चंपक तन सोहै। अद्भुत प्रिया प्रसाद नील अम्बर वर मोहै ॥ ६२ ॥ जिहि छन जैसी जुगल नवल की छवि पहिचानै। तिहि छन तैसी तुरित भांति बहु व्यंजन बानै ॥ मणि मण्डित वर दंड दिव्य चामर कर लीने। छवि सों वारति खड़ी मग्न आनंद नवीने ॥ ६३ ॥ तिनकी सखी चन्द्रलता मण्डनी चन्द्रका अति सुख दैनी। कटी काञ्चनि सुमन्दिरा सुचरिता मृगनैनी ॥ कुरङ्गाच्छि अति लसै सुमनि कुंडला विराजैं। चंपकलता के साथ नित्य कल अलि ये राजैं ६४ चित्रा सखी वीचित्र अंग कुंकुम छवि छाई। वसन सुमन हरि रंग अङ्ग सोभा सरसाई ॥ पीवे के रस जिते तिते संदरि सब जानैं। मादक मोदक उदक नित्य नाना विधि बानैं ॥ ६५ ॥ जब जैसी रुचि लखै तबै तैसीहि पियावै। लिये सुराही खड़ी नयन घूर्णित मन भावै ॥ तिनकी सखी सौरसैन तिलकनी और रामलिका राजै। मन नागर

नागरी नाग वेनका विराजै ॥ ६६ ॥ अरु रसालका लसै सुगन्धका छवि मन मोहैं। श्री चित्रा के सङ्ग अष्ट सहचरिए सोहैं ॥ रंगदेवी तन रंग कंज केसर सम झलकै। यथा कुसुम के रंग अंग सारी छवि छलकै ॥६७॥ बड़ी चितेरी चतुरिमान विविधि विधि सिखावैं। नख सिख लौं निज दुहुंनि दिव्य भूषन पहिरावैं ॥ नाना भूषन लिये प्रीति रीतिन मैं गाढ़ी। निरखति नजरी दुहुन प्रेम मूरति सी ठाढ़ी ॥ ६८ ॥ तिनकी सखी कलकंठी ससिकला अरु कमला मन मोहै। मधुरिंदर सुन्दरी प्रेम मञ्जरी विसोहै ॥ कामलता अति ललित और कंदर्पा राजै। रंगदेवी के सङ्ग सदा आठो ये भ्राजै ॥ ६६ ॥ सखी सुदेवी लसै अंग मृदु चंपक बरनी। पहिरे सारी सुहीचारु शोभा मन हरनी ॥ रंजै अञ्जन रेख फूल गूथै रचि बैंनी। नाना विधि शृङ्गार सार साजै मृगनैनी ॥ १०० ॥ मधुर मनोहर नाद सारिका सुवा पढावै। खड़ी लिये आदर्श प्रीति पलु पलु सुबढ़ावै ॥ तिनकी सखी चारु कुंवरि केसिका मंजु केसिका वेरी। हीरा कंठवनी मनोहरी उपमा फेरी ॥ १०१ ॥ हारहिरा महाहिरा देखि मन्मथ मन मोहैं। सदा सुदेवी पास आठ सहचरि ये सोहैं ॥ तुङ्ग विद्या अति निपुन सर्व विद्या महं सोरी। लसै गुलावी बसन अंग सुंदर अति गोरी ॥ १०२ ॥ विविधि वजावै वाद्य ताल बंधन सब जानै। सुरग्रामन मग ऐंचि रूप रागन की आनै ॥ प्रभु

दित भरि सुर मधुर बैन कर धरि गुन गावै। खडी सि-
तारा लिये लाल लाड़िलिहि रिझावै ॥ १०३ ॥ तिनकी
सखी वारंगदा अनुप मंजु मेधा मधुरा सुचि। गुन चूड़ाह
सुमेधिकाह तनमध्या अति रुचि ॥ मधु अस्यंदा निपुन सु
मव रेछना प्रवीनी। तुङ्ग विद्या के संग रहैं निसि दिन
रस भीनी ॥ १०४ ॥ अंग रंग हरिताल इंदुलेखा की सो
है। दाडिम फूल कि रंग अंग सारी मन मोहै ॥ कोक
कला बसि करन बैन रस दुहुन सिखावै। तातें सखी वि
शेष स्याम स्यामा मन भावै ॥ १०५ ॥ उर चतुरप अति
निपुन नृत्य सेवा नित लीनी। विविधि रिझावति दुहुंन
भाव भू तरल प्रवीनी ॥ तिनकी सखी गानकला चित्रांगि
भद्रतुङ्गा रसतुङ्गा। मंदालसा सुमङ्गलाह मोदिनी सुरं
गा ॥ १०६ ॥ कोमल गात पवित्र चित्रलेखा मन मोहैं।
ये सिगरी दिन रैन इंदुलेखा संग सोहैं ॥ या विधि अली
प्रवीन लीन ठाढ़ी चहुओरी। घेरि लियो मनु चन्द्र चहुं
दिसि उमड़ि चकोरी ॥ १०७ ॥ मूरतिमान करोरि विज्जु
से बनि घनस्यामहि। किधौं लसैं उड़ औलि घेरि चंदा
अभिरामहि ॥ उर अन्तर विच सबनि दिव्य है रूप रह्यो
धसि। ज्यों छविमान छसान मध्य पाषान रह्यौ कसि १०८
ज्यों आखरसु अकार सर्व आखरन लखाई। ज्यों मेंहदी
के दलन वीच छाई अरुनाई ॥ कल अलियन संयुक्त स्याम
स्यामा छवि छाई। ज्यों हिमकर कर निकर युक्त सोहै सु

खदाई ॥ १०६ ॥ यह मङ्गलमय ध्यान प्रान प्यारी मन भावन । जीवन रसिक अनन्य कोटि संताप नसावन ॥ रस यह मादक मधुर स्वाद रसिकन जिन पायो । तिन तन मन धन धाम काम की सुधि विसरायो ॥ ११० ॥ गावत रोवत हंसत मग्न मन पुलकित झूमैं । गूगं लौं प्रति कुञ्ज कुञ्ज औबन मैं घूमैं ॥ नाना जप तप नेम प्रेम ऊपर सब वारे । सब विषयन की गन्ध काढ़ि कांटे लौं डारे ॥१११॥ हाहा रसिक अनन्य चित्त जिन यह रस बोर्यौ । जग तैं ऐंचि अनित्य नेह नातो सब तोर्यौ॥ विन श्रीवर गुरकृपा भावना दिढ़ नहि आवै। विन भावना निकुञ्ज मंजु मन्दिर नहि पावै ॥ ११२ ॥ पाये बिना निकुञ्ज नवल द्वौ रसिक न दरसैं। विन दरसे द्वौ रसिक दसा उन्मत्त न सरसैं ॥ शोभा जुगल अपार पार कथिकैं को पावै । को गहि सकैं अकास सीप मैं सिंधु समावै ॥ ११३ ॥ मूंदै मरुत महान सक्ति केती गागर की। कहा वापुरी कीट थाह पावै सागर की ॥ नेति नेति कहि जाहि नित्य निगमागम गावै । कंजज ईस फनीस गाइ के पार न पावै ॥ ११४ ॥ जाकै छवि की छटा विश्व नाना विधि दरसैं। ताकी उपमा कथन उक्ति अघटित सब सरसैं॥ जो दिनकर कर निकर विश्व मण्डल तम सोखौ । ताहि देखावत दीप भक्त की रीति अनोखौ ॥ ११५॥ कहा नभग की सक्ति देव सरितानि घटावै। लेइ चिंचु भरि नीर आपना तृषा मिटावै ॥

रसिक अनन्यन कृपा अग्य मैं जो कछु पायो। यह येकांत रहस्य जथा मति बरनि सुनायो ॥ ११६ ॥ रसिक अलिन सुख दैन कंज प्रफुलित यह रूरो। बन कालिंदी धाम रूप छवि रस तें पूरो ॥ रसिक अलिन की रीत छंद दल कंठ न छीवै। सरस जुगल माधुरी मधुर मकरंदहि पीवै ११७ रसिक अनन्यन बिना आन यह छवि नहि पावै। पतिवर्ता की रहस कहां गनिका को आवै । जो या भांति अनन्य चित्त वृन्दावन लावैं। रसिक सिरोमनि इंद अंत निस्चय सो पावैं ॥ ११८ ॥ ध्यान सुधाकर नाम करै उर विमल उजेरो गावत मुदित प्रताप अनन्य रसिकन को चेरो ॥ दोहा भू दिग्गज बसु चन्द्रमा संमत सर परमान। चैत सुक्ल नौमी सुतिथि भयो ग्रन्थ निर्मान ॥ ११६ ॥ इतिश्रीपोथीसमाप्त।

———oo———

कवित्त। पीतपट ओढ़े वेणु मण्डित कमल पानि मंजुल मनोहर गुञ्जहार उर दरसैरी। सीस पर दिव्य चारु चन्द्रिका मयूर सोहै लोल कल कुण्डल कपोल गोल परसैरी ॥ लोचन विशाल भाल केसरि तिलक राजै विहसत सरोज मुख चित आकरसैरी । कहा कहूं मुख तैं प्रताप या सांवरे के अंग प्रति अंग अंग शोभा रस बरसैरी ॥१॥

अथ बार बार कृष्ण कृष्ण राधा कृष्ण रट रे।

जाको धरि ध्यान ग्यानवन्तन समाधि लायो गावत नि

त कीरति दश अष्ट चार षट रे । श्यामल मनोहर मंजु मरकत कलव मृदु ताकों उर अन्तर तूं निरन्तर है जटरे ॥ सूधो भवसिन्धु को उधार धार याकों उर और तूं प्रताप ना अनेक ठाट ठटरे । द्रोह को हृदय निसारि मोह को मद्दा विसारि वार वार कृष्ण कृष्ण राधा कृष्ण रटरे १ ॥

लोचन रंगीले चारु कुन्तल कपोल गोल केशरि तिलक भाल भ्रकुटी विकट रे । मंजुल मनीन मंडि कुंडल किरीट सोहै छवि सों लपेटे कटि मंजु पीत पट रे॥ ऐसे निरन्तर हैं प्यारे घनश्याम जाकों ताकों प्रताप त्यागे ताप की लपट रे । सोई रङ्ग सांवरे सलोने रंगि चित्त चारु बार बार कृष्ण कृष्ण राधा कृष्ण रट रे ॥ २ ॥

कवित्त० जाको नाम नेक कहूं धोखेहूं कढ़त अन्त आवत जमदूत नाहि स्वप्ने निकट रे । पावत सो मुक्ति जाहि जांचत नित जोगी जन छूटि बेगि भव शृङ्खला विकट रे ॥ सोई ये अनंद कंद नंद के कुमार प्यारे ताही के निरन्तर चारु चरनन लपट रे । एरे प्रताप कोटि भ्रम को केवार टार वार वार कृष्ण कृष्ण राधा कृष्ण रट रे ॥ ३ ॥

कवित्त० पांच को पसारो तामों मल मैं घुलाख केते कांचो कलेवर जान झिंझिया को सो घट रे । पानी के बुंद सों छिन मों विनास होत तापै तूं राखत मद मूरख निपट रे ॥ जौं तूं प्रताप भव वारिध उधार चाह तौ तूं निसिवासर सब त्यागि कै कपट रे । कर्मन को आस मारि

तरिनी चित चरण धारि वार२कृष्णाकृष्णाराधाकृष्णारटरे॥

कवित्त० प्राण के पयान होत चातुरी पयान ह्वै हैं पित वायु कफ जैहैं कण्ठ मौं लपट रे। ता दिन मुलैहैं सुधि सांवरे सलोने की देखि कै डरैहो जमदूत की दपट रे॥ ता छिन प्रताप सब आपने विराने ह्वै हैं छूटे देह मीचु कोउ ऐहैं ना निकट रे। तासों अबही तैं तू वसाय हंस पंजर पद वार वार कृष्ण कृष्ण राधा कृष्ण रट रे॥ ५॥

अथ वार वार कृष्ण कृष्ण राधा कृष्ण कहुरे।

कवित्त सांझ होत सुन्दर कहु रजनी रमेश कहु भोर होत भगवत को भाव उर गहुरे। दिनकर प्रकाश होत दीनबन्धु केशव कहु मंजुल मध्यान्ह होत माधो मधु लहु रे॥ सुख मों बिहारी कहु दुख मों दयानिधि कहु गाढ़े दिन गोविंद के गुनगन रत रहुरे। एरे प्रताप जौं तौ तापतैं उबार चाहै तौ तो निसिवासर तूं राधाकृष्णाकहुरे ६

सुख मों सुपास पाय संपति समाज के ते दाया बिसारि दर्प धारा मति बहुरे। दुख मों प्रताप धीर धरि कै न पीर मानौ नेक न विमूढ़ चित्त चिन्ता दव दहुरे॥ स्वच्छ द्वौ चरन सरोज करुनाकर के गूढ़ उर अन्तर निरन्तर तूं गहुरे। ए मन करोरि आस त्रासन कों जारि वारि वार वार कृष्ण कृष्ण राधा कृष्ण कहुरे॥ ७॥

कवित्त सम्पति कलत्र पुत्र एक न सुकाम ऐहैं रहिहैं बिलोकि लागे जमगन सर सुहुरे। सीत पित वायु तीनौं

प्रगटैं कलेश केते तेते विचारि ता छिन मनही मन रहुरे ॥ तेते प्रताप तोहि त्यागत न वार लावैं जे जे भ्रमावैं तोहि भायन भव वहुरे । तातैं करोरि पटु कपट कला विसारि वार व.र कृष्ण कृष्ण राधा कृष्ण कहुरे ॥ ८ ॥

कवित्त कबहूं करि पीठ कबहूं पायन पायन कीजैं दुख सुख समान जानि धीरज उर गहुरे । जब लौं करुनानिधान करुना कै तोहि हेरैं तौ लौं तूं साहस कै संकट सर सहुरे ॥ चलता यह चित्र औ विचित्र सब कर्मन को चित्त मो विचारि ताको चिन्ता मति लहुरे । एरे प्रताप ताप तीच्छन अतीच्छ ह्वैहैं नित्य निसिवासरतूं राधाकृष्णाकहुरे ॥

कवित्त मेचक शरीर चारु कयिसत दुकूल सोहै कुंडल किरीट राचे मनिगन रचि बहुरे । मंजुल वनोज कर मुरली मनोग सोहै जन्तर समान ताकौं अन्तर उर गहुरे ॥ एरे प्रताप छल छोड़ि सब अन्तहूं, तैं एक स्याम सुंदर को दास ह्वै रहुरे । निपट असार संसार को पसारो जानि वार वार कृष्ण कृष्ण राधा कृष्ण कहुरे ॥ १० ॥

अथ सवैया । तेहि त्यागि मशी दै आनन मैं ॥

झिंगली झलके संग स्याम कलेवर मोतिन की छवि कानन मैं । कल नूपुर पंकज पाय लसै कनकांगद सोहै भुजानन मैं ॥ सो मृदु मूरति बाल गोपाल प्रताप सदा धरु प्रानन मैं । जिहि या छवि को अनुराग नही तिहि त्यागि मशी दै आनन मैं ॥ ११ ॥ मंजु दुकूल कसे कटि सौं झल

४

कै कल कुन्तल भानन मैं । सुजितौ छवि दिव्य किरीट प्र
ताप तितौ छवि मोर पखानन मैं ॥ यौं विलसैं मुरलीधर
मंजु धर मुरली अधरानन मैं । जिहि या छवि कौ अनु
राग नहो तिहि त्यागि मशी दै आनन मैं ॥ १२ ॥ सुजोई
प्रगट्यो जग जोति महा जल मैं थल मैं सब जानन मैं ।
सोइ ये ब्रजराज विराजत हैं ब्रज गोपसखा वछरानन मैं ॥
निसिवासर तूं तिहि जापि प्रताप कहा भरमै भव खान
न मैं । जिहि या छवि कौ अनुराग नहो तिहि त्यागि
मशी दै आनन मैं ॥ १३ ॥ छवि पावन पुञ्ज प्रताप लसैं
कलिता ललिता वनितानन मैं । गर गुञ्ज को माल विसा
ल सोहावन मंजुल गुञ्ज लतानन मैं ॥ छवि तीच्छन कोर
कटाच्छ जितौ सुकहां छवि मैन के बानन मैं । जिहि या
छवि को अनुराग नहो तिहि त्यागि मशी दैं आनन मैं ॥
जासु सुजावर पाए प्रताप सदा विचरैं सुर चानन मैं ।
मनि मेचकता तन दूरि दुरै दुरि दामनि मंजुल घानन मैं
मन मन्द सुनन्द कुमार संभार जु होतव बंधु विथानन मैं
जिहि या छवि की अनुराग नहो तिहि त्यागि मशी दैं आ
नन मैं ॥ १५ ॥ अथ वृथा तैं जन्म गवांवत रे । जे पद
कंज हृदय धरि कै मुनि कोटि कुटी बन छावत रे । नार
शारद शेस महेस सदा विधि से जिहि ध्यावत रे ॥ ते पद
मंजु सरोज प्रताप तूं नेक नहो चित लावत रे । रे मन
मन्द गोविंद विसारि वृथा तैं जन्म गवांवत रे ॥ १६

जब ऊधम वात महा कफ पित्त तिहूं हठि कण्ठ उठावत रे। तब संपति पुत्र कलत्र करोरि कछू निज काम न आवत रे॥ अब बूझि विचारि प्रताप कहा भव मोह मरी विन धावत रे। रे मन मन्द गोविंद विसारि वृथा तैं जन्म गवांवत रे॥ १७॥ रुचि कंचन के अवतंस लसै दृगभांजल जात लजावत रे। छवि सों घन से तन मेचक वीच प्रभा पटपीत विभावत रे॥ प्रताप हिये छवि सो न लग्यौ निसि वासर लोग लगावत रे। रे मन मन्द गोविंद विसारि वृथा तैं जन्म गवांवत रे॥ १८॥ स० मल धार सों तोहि उधार कियो नवमास रह्यो दुख पावत रे। रद हीन प्रताप परे पलने तहं को पय प्याइ जियावत रे॥ खल ता दिन की सुधि क्यों न करै अब पौरुष पाइ कै धावत रे। रे मन मन्द गोविंद विसारि वृथा तैं जन्म गवांवत रे १६ जेहि द्वार उदार घने उधरे द्रुम दान विना सिर नावत रे। गनिका अरु गीध अजामिल से जस जासु तिहूं पुर गावत रे॥ निसिवासर ताहि विस.रि प्रताप घने सुख सार मनावत रे। रे मन मन्द गोविंद विसारि वृथा तैं जन्म गवांवत रे॥ २०॥ अथ विना हरि हेतु हितू नहि कोई। रावन को कहु कौन भयो कुल कंचन कोटि कुटी वहुतोई। भूप घने भृकुटी अवलोकत सो दुर्योधन सो धन खोई॥ केतिक छाए छतैं नन सो पछरे छित आंसुन सों मुख धोई। तातैं प्रताप अबै चित चेतु विना हरि हेतु

हित नहि कोई ॥ २१ ॥ स० वोई कदम्ब अब कुज वोई अरु
वोई लता कलिता सब वोई । वोई समीर अब नीर वोई
अरु वोई मयंक अब अंक मैं चोई ॥ जारत हैं अब आली
सबै बिछुरे इक नंद किशोर के सोई । नेक भए खप्नेहूं प्र
ताप बिना हरि हेतु हितू नहि कोई ॥ २२ ॥ स० भूलि
मया ममता मद सों निसिवासर आरत मैं रत होई ।
जाहि सह्मारि तरैं जड़ जङ्गम ताहि बिसारि वृथा दिन
खोई ॥ सीस परैं जब वे जमदण्ड व्यथा कहि हौ तब कौन
पै रोई । तासों प्रताप अबै चित चेतु बिना हरि हेतु हित
नहि कोई ॥ २३ ॥ जाके लिए सब धर्म तज्यो श्रम कै वहु
धाम धर्‍यौ धन ढोई । लोक उभै निज हाथ गवांय सदो
पट लोभ लपेट कै रोई ॥ सोई छनेक मैं तोहि तजैं न गिनै
कछु कीरति पीरहि कोई । तासों प्रताप अबै चित चेतु
बिना हरि हेतु हितू नहि कोई ॥ २४ ॥ जाको उभै पद
अम्बुज कों नित सेवत जोगी जगी उर गोई । धोखेहूं नाम
कढ़े मुख ते खप्ने जम फांस को त्रास न होई ॥ ताहि भु
लाय तू भूल्यो तहां जहं जन्मतही ते सुनावत वोई । तासों
प्रताप अबै चित चेतु बिना हरि हेतु हितू नहि कोई २५
अथ क्यौंन भजै नदनंद गोपालहि । जाके लिए कुलकानि
तजी मुनि कानन जाय जरावत खालहि । जे प्रति अंगन
राख रमाइ रचे पटपात तरोवर छालहि ॥ ताहि बिसारि
प्रताप कहा अरुझें भव मोह महा भ्रम जालहि रे ॥ स०

मन्द अनंद को कंद तू क्यौं न भजै नदनंद गोपालहि २६ मंजुल मोर किरीट लसै मकराकृत कुण्डल श्रौनन हाल हि । लङ्क कसे पटपीत मनोहर वच्छ विसाल धरे वन मा लहि ॥ लोचन लाल विसाल प्रताप करैं जिन कोरनि हेरि निहालहि । रे मन मन्द अनंद को कंद तू क्यौं न भजै नद नंद गोपालहि ॥ २७ ॥ सेवतहीं पद अंबुज के सुखिहै भव सिंधु सभी मनिरालहि । भै जम जातन की मिटि है कटि है अति काल कराल जञ्जालहि ॥ छिप्र प्रताप सबै छुटि हैं विधि कोटिकहू अघ फंद विशालहि । रे मन मन्द अनंद को कंद तू क्यौं न भजै नदनंद गोपालहि ॥ २८ ॥ डोलत ऐंठि महा मदमत्त कसे कटि तीर तुनीर विशाल हि । कौच सुमस्तक चान की तान गहे कर चर्म कृपान क रालहि ॥ होतइथा सब अस्त्रप्रताप परैं जव सस्त्रमहा जम कालहि । रे मन मन्द अनंद को कंद तू क्यौं न भजै नद नंद गोपालहि ॥ २६ ॥ बूड़त है भव सिंधु मौं अंध उठै जह मोह तरङ्ग तरालहि । इन्द्रिन ग्राह गह्यौ दृढ़ पायन गोतत भर्म भयौ उर आलहि ॥ नावड़ी नाम सह्यार प्र ताप कहा तोहि सूझत नाहि निरालहि । रे मन मन्द अनंद को कंद तू क्यौं न भजै नदनंद गोपालहि ॥ ३० ॥ अथ परमेश्वर सो हित दूसर नांही । स० पुत्र कलत्र दयो तजि कै गजराज गरीब पर्यौ अवगाही । गोतत ग्राह महा गहि पायन प्रीन पुकार कियो जल मांही ॥ आरत

बंधु विहंग विसारि प्रताप गए सर लौं सर मांही । सो जिय जानि भजो मन मों परमेश्वर सों हित दूसर नांही ॥ कुञ्जर मत्त अराड़ थक्यौ न सक्यौ छुड़कै छिन सों परिछां ही । धानि समान ह्रसान कियो अरु मध्य शलील शिला उतरांही ॥ दासहि दीन विचारि प्रताप नृसिंह कला प्रगटे छिन मांही । सो जिय जानि भजो मन मों परमेश्वर सो हित दूसर नांही ॥ ३२ ॥ मोह सों मूरख सेइ रहे गृह कूप कलत्र कुपुत्रन मांही । सोवत जागत स्वप्ने सदा निसिवासर आयु वृथा वहि जांही ॥ अन्त प्रताप हित न कोई तब हेरत नीर वहै दृगजांही । सो जिय जानि भजो मन मों परमेश्वर सो हित दूसर नांही ॥ ३३ ॥ वायस गीध भवैं सिर पै छित छार पछारन के विधि मांही । स्वान मसान ह्रसान घने दिन देखतही खग जंबुक जांही ॥ नाचत सीस विनास अनेक भयंक प्रताप दिसा विदिसा ही । सो जिय जानि भजो मन मों परमेश्वर सो हित दूसर नांही ॥ ३४ ॥ प्रेरित आपन कर्म प्रताप अहंबस जीव जहां जहां जाहीं । कूकर शूकर जोनि घने जहं पुत्र कलत्र कोउ न लखाहीं ॥ श्रीकरुनाकर आरत बंधु तहां तहां संग भ्रमैं भव माहीं । सो जिय जानि जपो मन मों परमेश्वर सों हित दूसर नाहीं ॥ ३५ ॥ अथ हरिहो हरिहो हरिहो गति तेरी । जैसही धाय सरोज से पायन तारि लियो जब वारनि टेरी । ईंचत चीर प्रताप सभा द्रुपती

पति राखि लियो दुख जेरी । तैसही सांवरे नंद कुमार सुलीजै दया करि कै सुधि मेरी। मोहि तौ और अलम्ब नही हरि हो हरि हो हरि हो गति तेरी ॥ ३६॥ सूझत वार न पार कछू दुहुंई छन छाइ रही सुअंधेरी । छूटत कैसेहू नाही प्रताप विगाढ परो पग मोह की बेरी ॥ बूड़त हौं महामोह समुद्र मों तारत काहे न तारि घनेरी। मोहि तौ और अलम्ब नही हरि हो हरि हो हरि हो गति तेरी ॥ ३७॥ जानो नही जप जोग कछू जम संजम दान दया व्रत केरी । चाटक नाटक वेद विधान पढ़ौं न अनेक घने गुन ढेरी ॥ टेक सुएक प्रताप यही सु रटौं निसिवासर नाम निरेरी। मोहि तौ और अलम्ब नही हरि हो हरि हो हरि हो गति तेरी ॥ ३८॥ वंक वकासुर आसुर मारि विसाल महा कर कूधर फेरी। गाय गुवाल उधार कियो ब्रज कौं जब आय अघासुर घेरी॥ आरत बंधु कहाय प्रताप पुकारतमैं कत लावत देरी। मोहि तौ और अलम्ब नही हरि हो हरि हो हरि हो गति तेरी ॥ ३६ ॥ जोरि दोऊ कर आरत ह्वै सुपुकारत दीन प्रताप सवेरी सो सुनिए करुनाकर जू करुना करिकै करुना कछु मेरी ॥ मो भवफांस हरांस हरो निज नेक दया दृग सों हरि हेरी। मोहि तौ और अलम्ब नही हरि हो हरि हो हरि हो गति तेरी ॥ ४०॥ अथ तिन्हैं जम को न परै परिछांही। हाथन तें हरि काज कियो अरु पायन हरि मन्दिर जांही।

लोचन कों करि चारु चकोर सदा सुखमा मुख चंदहि चां
ही । कानन तें नित नाम सुनै अरु आनन तें धुनि आन न
आंही । हे हरि हेतु प्रताप जिन्हें सुतिन्हें जम की न परै
परिछांही ॥४१॥ साधुन को नित संग जिन्हें अरु साधुही
भाव धरे मन माहीं । सत्य दया रत नम्र सदा पर कामि
नि सौं स्वपने रत नाहीं ॥ नित्य स्वरूपहि लीन अनिंदक
ग्यान हुतासन आसनदाहीं । नेक कहूं कबहूंक प्रताप ति
न्हैं जम की न परै परिछांही ॥ ४२ ॥ चारु सरोरुह नैन
लसै कल कुंतल गोल कपोलन पांही । दामिनि सी दृषभा
न कुमारि मनो घनस्याम दिए गलबांही ॥ सो छवि सुंदर
दम्पति की दृग के सम जाहि धसी उर मांही । पुन्य प्र
ताप करैं न करैं सुतिन्हें जम को न परै परिछांही ॥४३॥
का करि संजम दान दया गनिका हनिका उधरे जगमांही
कुञ्जर कौन कियो जप जोग कथानक जासु न गाइ सिरा
हीं ॥ द्वार उदार महा प्रभु को जहं धावेहु नाम कढ
मुख पांही । तारत आरत बंधु प्रताप तिन्हें जम की न
परै परिछांही ॥४४॥ मंजु मिली अंगुली विलसै नख चन्द्र
छटा सुखमा सरमाहीं । अंकुस अम्बर वज्र सरोरुह चक्र
सुधा हृदय चिन्ह सोहाहीं ॥ सो पद सुंदर राजिव राज
विराजत जा उर के सर माहीं । सूरज सों तम त्यौंहि
प्रताप तिन्हें जम की न परै परिछांही ॥ ४५ ॥ अथ कवि
कौन पै जाहीं । स० जाहि तजे निज प्रान तज्यौ जस की

रति पूरि रही जगमांही। सो दसरत्थ न मुक्त लह्यो सुख तुच्छ निवास दियो दिव पांही॥ केकइ को निज धाम दियो जिन दीन महा वनभय सरसांही। ऐसे प्रताप अनोखे मुकुंद को भेद कहो कहि कौन पै जांही ॥४६॥ स०। भूप बली नृग नीत प्रवीन परे दुख भूतल कूप भुराहीं। जो दम दान दयारत संतत अन्य बधू सुख मोहत नाहीं॥ कोटिकहू भव सिंधु तरे जिन जन्मतही ते अघ ओघ विसाहीं। ऐसे प्रताप अनोखे मुकुन्द को भेद कहो कहि कौन पै जाहीं॥ ४७॥ नीव निषाद कों लायो गरे जो सदा बध कै मद आमिख पांहीं। पानि सरोजनि सों गति गीध कियो जिहि जोगी जती ललचाहीं॥ केतिक चंदन गन्ध चढ़ाय चिते छवि देखन को तरसाहीं। ऐसे प्रताप अनोखे मुकुंद को भेद कहो कहि कौन पै जाहीं॥ ४८॥ जोगी जपी सु तपीहु करोरि थके तप कै घन ज्ञान न माहीं। नित्य निरन्तर खाल जराय लखे नहि नेक परी परिछाहीं॥ सो अज आदि अनादि सदा प्रगटै छिति राछस हेतु सोहाहीं। ऐसे प्रताप अनोखे मुकुंद को भेद कहो कहि कौन पै जांही॥ ४९॥ सोपच सेनवधू सदना रविदास अजामिल गीध अवाहीं। कौस करी कुवरी सेवरी गनिका अरु वायस रीछ कहाहीं॥ कोटिन नीच तरे भव सिंधु त्रिशंकु अधासुख झूलत आहीं। ऐसे प्रताप अनोखे मुकुन्द को भेद कहो कहि कौन पै जाहीं॥ ५०॥

अथ मोरपक्षवारे सो हमारे रखवारे हैं। कवित्त। लोनी लोनी अलकैं कलोलतीं कपोलन पैं राते राते नैन उर मैन के विसारे हैं। कुंडल किरीट नग जगमग जगात चारौं आभा प्रकाश आभाकर से पसारे हैं॥ पीत पट लक्ष्य वक्ष स्वच्छ वनमाल राजैं सुखमा समूह तन सांवरैं सवांरे हैं। मोरपक्ष छूटैगो कौन पै प्रताप प्यारे मोरपक्षवारे सो हमारे रखवारे हैं॥ ५१॥ कवित्त। काहू को करोरि विधि जन्तर जतन आवे काहू कौं बुद्धि विधि भय के निवारे हैं। काहू कौं अधार कर आयुध हथियार धारे काहू विसाल दृढ़ द्वारन केवारे हैं॥ काहू कौं तन बन कुटुम्ब बल काहू कौं काहू कौं असंख्य गृह संपति सवारे हैं। मोहि तौ प्रताप घर कानन न आन दूजो मोरपक्षवारे सो हमारे रखवारे हैं॥ ५२॥ कवित्त। आरत के पुकारतहीं विसारि खगराटहू कौं धाय कै पायन गजराट कौं उधारे हैं। सुन्दर सरोज मुख दावानल पान कीन्हो सङ्कट अपार नख सैल कौं सह्मारे हैं॥ ऐसे ब्रजराज एक दीनन के काज जाए जसुदा के वारे अब नंद के दुलारे हैं। कैसे प्रताप मेरे त्रास की निवास आवै मोरपक्षवारे सो हमारे रखवारे हैं॥ ५३॥ कवित्त० जन सों अकस हरिनाकस अपार कीनो कसि कै सो जानु ताको उदर विदारे हैं। कूदिकै सकोप कुल कंस को विध्वंस कीनो चोटी लपेटीकर क्षार मो पछारे हैं॥ जहां जहां आनि पर्‍यौ गाढ़

निज दासन पर तहांतहां स्याम सुंदर आपही निवारे हैं॥ तासों असङ्क ह्वै विचरौ प्रताप प्यारे मोरपच्छवारे सो ह मारे रखवारे हैं ॥ ५४ ॥ जाको करिआस वास तजि कै सुदास केते डोलत उदास वन पन्नग पहारे हैं । केहरि गयंद वीच वंक तन वारने को दिन दिन अपार जाके जस के उचारे हैं॥ ऐसो भरोसो दृढ़ सांवरे सलोने को चित्त मों विचारि तासों भय कों विसारे हैं। अंतरिच्छ जल थल निरन्तर प्रताप प्यारे मोरपच्छवारे सो हमारे रखवारे हैं॥ ५५॥ सवैया । अथ मनकों अव भ्रङ्ग प्रताप कहै हरि के पद पङ्कज को करिहौं ॥ अव छोड़ि कै कर्म को आस सबै तप तापन वीच नहीं जरिहौं । धरिहौं नहि सीस कलाप जटा अरु अङ्गन छार नही भरिहौं॥ रमिहौं नहि कानन सैल कहू इक नेम निरन्तरही धरिहौं। मन कों अ व भ्रङ्ग प्रताप कहै हरि के पद पङ्कज को करिहौं ॥ ५६ ॥ गुर सीख विसिख के धानन सों अव सोखि कै आस नदी जरिहौं। खलु ख्डङ्गलु तोष सुपायन वीच दसो दुख दाय नि के यरि हौं॥ तरनी हरिनाम हिये धरि कै भव भीम तरङ्गनि कों तरिहौं। मन कों अव भ्रङ्ग प्रताप कहै हरि के पद पंकज कों करिहौं ॥ ५७॥ स० । दिन धोखे जो वौ ति गयो सुगयो अव गाफिल नेक नही परिहौं। नित सो अत जागत स्वप्न सदा मनसा वच कर्म हिये धरिहौं॥ रस ना रस नाम पियूष पियाय महा भव संकट कों टरिहौं।

मन कों अब भृङ्ग प्रताप कहै हरि के पद पंकज को करि
हौं ॥ ५८॥ दुहुं लोचन कों करि चारु चकोर सदा नख
चन्द्र प्रभा चरिहौं। सुनिहौं श्रुति सों मधु नाम कहा मधु
नाम सोई रसना रसिहौं ॥ अति सुन्दर सांवरो नंद कुमा
र हिये सोइ मूरति कों धरिहौं। मन कों अब भृङ्ग प्रताप
कहै हरि के पद पंकज को करिहौं ॥ ५६ ॥ कलपद्रुम सों
तन को लहि कै नहि मानुष जन्म वृथा हरिहौं। रमि के
सत संगति सन्तन बीच खटी दुपटी दुख को फरिहौं॥
नित जाजमसों सब जीव डेरात तिन्हें सुअनेक कहो डरि
हौं। मन कों अब भृङ्ग प्रताप कहै हरि के पद पंकज को
करिहौं॥ ६० ॥ कवित्त। अथ ब्रह्म को जानै जो सोई ब्रह्म
ज्ञानी है। चन्द्र अब सविता के समता समान जानै सम
ता चितौन सब भूतन पर आनी हैं। धरनी सो धरिता अ
धीरता समीर कैसो पावन प्रकृति जिन मन माहि ठानी
हैं॥ आतमा विचारी अविचारी निरन्तर है रूचु मित्र चि
त्त सो समान करि मानी हैं। भनत प्रताप सब तत्व कों
विचारैं जो ब्रह्म कों जानै जो सोई ब्रह्मज्ञानी हैं॥ ६१॥
कवित्त। सुख दुख मान अपमान को समान मानि निन्दा
अरु स्तुति उष्ण सीत सम मानी हैं। द्वन्द्वौ अजीतिन कों
जीति कै मनोरथ सब कमठ के सरीर सो समेटि उर आ
नी हैं॥ त्यागि कै ममता अरु हमतो अचंचल ह्वैं कानन
कुटी गेह एक करि जानी हैं। भनत प्रताप सब तत्व कों

विचारै जो ब्रह्म को जानै जो सोई ब्रह्म ग्यानी हैं।६२॥ कवित्त। देसकाल पात्रको विचारि निष्काम होके देत है दान जोई सोई जन दानी हैं। सुन्दर छबीली स्याम मूरति गोविंद जू की ध्यावत निरन्तर जो सोई जन ध्यानी हैं॥ दाया समान सब प्रानिन पर राखत जो पूरन विश्व मण्डल मध्य सोई धन्य प्रानी हैं। भनत प्रताप सब तत्व को विचारै जो ब्रह्म को जानै जो सोई ब्रह्मग्यानी हैं ६३ कवित्त। मित्र के मिले ते ना राग मों मगन होत सत्रु के मिले तें ना द्वेष दुख जानी हैं। दुख मों उद्विग्न मन सप्ने न होत कैसों सुख मों न कामना करोरि उर आनी हैं॥ राग द्वेष चिन्ता अरु चाहना न जाके उर आरत अनारत मों चित्त सम ठानी हैं। भनत प्रताप सब तत्व को विचारैं जो ब्रह्म कों जानैं जो सोई ब्रह्मग्यानी हैं॥६४॥ कवित्त। केवल कलेवर सों करत जो करमन कों इन्द्रिन के सुख मोन आप सुख मानी हैं। पाप अरु पुन्यहू को आसरो न आसय बीच पङ्कज पलास जैसे परसत न पानी हैं॥ पक्षी पपील बीच सबकै बिचारैं जो तैसे सम हेम लोह लाभ अरु हानी हैं। भनत प्रताप सब तत्व कों विचारैं जो ब्रह्म को जानै जो सोई ब्रह्मग्यानी हैं॥६५॥ अथ राम कृष्ण गोविंद हरे। नाना मत पखंड परि पूरन कहि प्रताप भरि बिश्व भरे। विमुख भक्ति चरचा मह नागर भजन गन्ध की सन्धि परे॥ को कहै निकट दूर को

गावत विषै भोग सब जगत छरे । तातैं भजो नाम निसि वासर राम कृष्ण गोविंद हरे ॥ ६६ ॥ कहा पंच पावक मो जरनी कहा अंग मो भस्म भरे । कहा ऊर्द्ध भुज कच नख राखे कहा धूम्र के पान करे॥ केते पतित नाम नौका चढ़ि जन प्रताप भवसिंधु तरे । ताते भजो नाम निसि वासर राम कृष्ण गोविंद हरे ॥ ६७ ॥ सत जुग धर्म ध्यान श्रीपति को त्रेता करि मख जतन तरे । द्वापर जुग प्रताप परिचरजा कलि उधार हरि नाम ररे । मुनि मंडली बैठि भूपति पै निरनय श्री शुकदेव तरे ॥ तातैं भजो नाम निसि वासर राम कृष्ण गोविंद हरे ॥ ६८ ॥ ररत पुत्र कों तर्यो अजामिल शुकरराय गनिका उधरे । पगन धाय ता र्यौ गजवर कों रच्यो राज तन पायन रे ॥ कहि प्रताप पितु दयो हुतासन जन नृसिंह नहि नेक जरे ॥ ताते भजो नाम निसिवासर राम कृष्ण गोविंद हरे ॥ ६९ ॥ कफ पित वायु कण्ठ जब घेरै भिरै दूत जमदण्ड धरे । एको कोऊ काम नहि आवै सुत कलत्र परिवार खरे ॥ ता दिन कहो कौन के ह्वैहो कहि प्रताप किल खाट परे । ताते भजो नाम निसि वासर राम कृष्ण गोविंद हरे ॥७०॥ अथ यौवन मो बस है मन मेरो । मोह को जाल पसारि चहुंदिसि सन्तत खेलत काल अहेरो । भाग तूं मोह मया तजि मूरख काहू को तूं न कोऊ कहुं तेरो ॥ नश्वर या तन को सम्बन्ध प्रताप छुटै छिन साम सवेरो । छोड़ि सबै

भ्रम जाल निरन्तर श्रीवन मो बस हे मन मेरो ॥ ७१ ॥ तीर कलिन्दसुता सुख कंद कदम्ब पियाल तमाल घनेरो । नाचत मंजु मयूर समूह किये मद विभ्रम भृङ्ग अंधेरो ॥ मंजुल माधवी कुञ्जन मांह प्रताप सबै विधि जीवन तेरो । छोड़ि सबै भ्रम जाल निरन्तर श्रीबन मो बस हे मनमेरो ॥ ७२॥ सुन्दर स्यामल गौर किशोर दिये गलबांह करे नित फेरो । कुञ्जन बीच प्रताप अचानक होयगो भेंट कहूं भट भेरो ॥ मूर्छित होय परैगो मही सफली ह्वत जीवन होयगो तेरो । तोरि सबै भ्रम जाल निरन्तर श्रीबन मो बस हे मन मेरो ॥ ७३ ॥ होत है रागरु भोग कहूं कहूं सेज रचैं अलि फूलन केरो । कुञ्जन चन्द्रमुखी विहरैं कल पूरि रही झनकार झमेरो ॥ आनंद सिंधु प्रताप अपार उठैं जहं प्रेम तरङ्ग लहेरो । तोरि सबै भ्रम जाल निरन्तर श्रीबन मो बस हे मन मेरो ॥ ७४ ॥ बेसुधि प्रेम भरे रज अङ्ग धरे हरवा गर गुञ्जर केरो । राधिका स्याम पुकारत आरत नित्य करै प्रति कुञ्जन फेरो ॥ पाइहै स्यामल गौर प्रताप मनोरथ पूरन पूजिहै तेरो । तोर सबै भ्रम जाल निरन्तर श्रीबन मो बस हे मन मेरो ॥ ७४ ॥ अथ राधा कृष्ण राधा कृष्ण टेरत विहंग हैं । कवित्त । अवलली तमाल अवताल की विशाल सोहै साखा सघन छबि छाए उतंग हैं । श्रेनी अनेक द्रुम दाडिम कदम्ब फूले फैलत सुगन्ध वर दरसत सरंग हैं ॥ इन्दावन वास अति अ

द्भुत विलास छायो चहुंदिसि प्रताप कल कूजत कुरंग हैं। जमुना के कूल अव कदम्ब के डारन पै राधा कृष्ण राधा कृष्ण टेरत विहंग हैं ॥ ७६ ॥ स्वर्न के सवारे सोपान छै पान सोहै उठत अनूप कल तरल तरंग हैं । किलकत क लोलि चहुं चकरा मराल माते स्नेनी सरोज तापै गुञ्जत सुभृङ्ग हैं ॥ छन मैं अपूत केते जंतु जड़ जंगम सव पावत प्रताप जाके परसत परसंग हैं । जमुना के कूल अव कद म्ब के डारन पै राधा कृष्ण राधा कृष्ण टेरत विहङ्ग हैं ॥ ७७ ॥ कवित्त । कानन करौरि कुल कोकिल कपोत छाय रंग रंग प्रताप जाके चमकत अंग हैं । लाल पर चंगुल मनोग सु व लाल सोहै शोभा निरेखि चित्त लज्जित अनङ्ग हैं ॥ छांहन निवास लै सीतल जल पान कै राते दृगन करि तकि तकि तरंग हैं। जमुना के कूल अव कद म्ब के डारन पै राधा कृष्ण राधा कृष्ण टेरत विहङ्ग हैं ॥ ७८ ॥ तीर तीर नूतन कदम्बन की महा भीर भूमि भूमि साखा रहे जमुना जल संग हैं । वल्लिरी नवेली फूलि भू लि रहीं झालर सी भृङ्ग मतवारे तापै गुञ्जत उमंग हैं। मनत प्रताप चहुं नृत्यत मुदित मोर त्रिबिधि समीर डोलै तरल तरंग हैं । जमुना के कूल अव कदम्ब के डारन पै राधा कृष्ण राधा कृष्ण टेरत विहङ्ग हैं ॥ ७९ ॥ कवित्त । तीर तीर रसिक अनन्य उन्मत्त केते परन कुटीन छाय वत असंग हैं । बीना मृदङ्ग वेनु धुनि सुनि मनोहर कल

उमड़त अनंद रोम राजी सब अंग हैं ॥ सोभा सकेलि सब औवन प्रताप छायो आभा निरेखि रथ अटकत पतंग हैं । जमुना के कूल औ कदम्ब के डारन पै राधा कृष्ण राधा कृष्ण टेरत विहङ्ग हैं ॥ ८० ॥ अथ 'बड़ भाग भै आ हम गोपन की ब्रजराजहि बाल मुकुन्द भए, । स० । ब्रज वासिन को सुख साध सबै विधि ने परिपूरन पूरि दिए । सुलह्यौ सब कौ फल नंद प्रताप जितौ निज पुन्य लतान बए ॥ दृढ़ श्री जसुदा ब्रत पुञ्जन पै परमेसुर आजु पसी जि गए । बड़ भाग भै आ हम गोपन की ब्रजराजहि बाल मुकुंद भए ॥ ८१ ॥ जमुना जल उज्जल रम्य बहै ब्रज मण्डल मङ्गल रूप लए । दरसैं द्रुम गुल्म प्रसन्न निकुञ्जन गुञ्जन मंजुल भृङ्ग चए ॥ प्रगटे मनि कंदर अद्रि प्रताप दसोदिसि पूरि प्रकास गए । बड़ भाग भै आ हम गोपन की ब्रजराजहि बाल मुकुन्द भए ॥ ८२ ॥ स० । रंगि पाग झगा झमकै जुरि गोप बजैं कल वेनु विषान कए । बहु रंग भरे मटके भभकै चभकै भरि आंगन होय गए ॥ मचले दधि कीच फिरैं ब्रज भव नभ दुंदुभि नाद प्रताप छए । बड़ भाग भै आ हम गोपन की ब्रजराजहि बाल मुकुंद भए ॥ ८३ ॥ ब्रज वासिनी रावल गोकुल की जुरि झुण्डन साजि सिंगार नए । सब नाचति गावति धाम धसैं कर कञ्जन मंगल थार लए ॥ गृह पूरि रही झन कार प्रताप बजैं कल मंचन नौवत ए । बड़ भाग भै आ

६

हम गोपन की ब्रजराजहि वाल मुकुंद भए ॥ ८४ ॥ नंदी मुख श्राध सवांरि कै नंद कढ़े तव द्वार अनंद ठए। मनि मानिक पुञ्ज लुटाय अलंकृत धेनु हजारन दान दए ॥ विरदावली भुण्डन भाट पढ़ैं बरसैं सुर फूल प्रताप छए। बड़ भाग भै आ हम गोपन की ब्रजराजहि वाल मुकुंद भए ॥ ८५ ॥ अथ 'जबै बंसुरी ब्रजराज बजाई,। सांझ समैं जमुना तट बीच खड़े तरु टेकि कदम्ब कन्हाई। मंद सुगन्धसमीर बहै जमुनाजल उज्जल सोरसोहाई ॥ सारदमास विलास विलोकि नई उर आनंद की छवि छाई। सो न कही लहि जात प्रताप जबै बसुरी ब्रजराज बजाई ८६ वाहि सकैन कलिन्द सुता घुमरैं भुवि भृङ्गलता विसराई। पंथिक पंथ थके थकिकै नहि नेक सकै रवि रंथ अंथाई ॥ औनि कुरंग विहंग प्रताप भये द्रुम डारनि चित्र की नाई। मंद सदा गति को गतिराज जबै बसुरी ब्रजराज बजाई ॥ ८७ ॥ शब्द अचानक कान पर्यो सर पञ्च प्रताप खरी अकुलाई। गोकुल की कुल कों न गिनी अपने अपने गृह ते उठि धाई ॥ स्वेदित गोल कपोल लसै कल कुंडल डोलनि मैं छवि छाई। जाय मिलीं ललना तजि लाज जबै बंसुरी ब्रजराज बजाई ॥ ८८ ॥ पूरन चन्द्र उयो नभ मीं नव कुंकुम सी ललिता सरसाई। फूलि सबै द्रुम कानन मंजुल तानन भृंग रहे ललचाई ॥ सीतल मन्द सुगन्ध चहूं विचरै रुचि वायु प्रताप सोहाई। छाइ रह्यौ ऋतुराज तबै

सु जबै बसुरी ब्रजराज बजाई ॥ ८६ ॥ मेदुर मेचक मेघ चहूं नभ मण्डल औ छिति मण्डल छाई। औ बन के घन कुञ्जन बीच नचै रुचि मोर सुबोल सुनाई॥ झीने झरैं च हू बुंद प्रताप सोहावन सावन सो होय आई। मंदहि मंद भरे सुरछन्द जबै बसुरी ब्रजराज बजाई ॥ ६० ॥

अथ 'हरी हरी पुकारती हरी हरी लतान मैं, । क० ।

बजौ गोपाल बांसुरी परी परेम फांसुरी हगन हुलास आसुरी सुचित्त चारु तान मों। चलीं गयंद गामिनी न नो स्वरूप दामिनी मनोज पुञ्ज कामिनी कला निधान ध्यान मों ॥ परि प्रताप बेलि जाल पावती न नंदलाल भामिनी भई बेहाल मैंन के व्यथान मों। सरीर ना संभारती सुनैन नीर ढारती हरी हरी पुकारती हरी हरी लतान मों ॥ ६१ ॥ किङ्किनी परि चरन चारु गजमनि की लंक हार छूटि कुसुम कलित केश कङ्कन टूक पान मों। छनेक चाल लोलती छनेक ना सुडोलती पखान सी खड़ी मनोग मोर के पखान मों॥ सुन्दर छबि छैल सगाम जीते जिहि कोटि काम मूरति मृदु मंजु सो धरे प्रताप प्रान मों। सरीर स्वेद गारती सिंगार को बिगारती हरी हरी पुकारती हरी हरी लतान मों॥ ६२ ॥ जग मग तन तड़ित रंग सोहत अति चारु संग भूषन मनि अंग अंग कुंडल छबि कान मों ॥ जरकसी दुकूल लाल बिरकसी ल खात बाल झरकसी फुकात वाल धूम सी सिखान मों।

घरी घरी उठै कराहि बावरी वियोग नाह फैलि अंग अंग दाह काम के कृसान मों। निमेख को विसारती इतै उतै निहारती हरी हरी पुकारती हरी हरी लतान मों॥ ६३॥ कुसुम कलित केस बेना मनि भाल भ्राज पूरित प्रकाश पुञ्ज वक्र चन्द्रमान मों। चली लपेटि वस्त्र सेत सोभा मधि जोन्ह देत ज्यौं तरंग छीर चलै छीरकै निधान मों॥ पायो प्रीन त्रिवस भा विरसना रहि दसन दात्रि लोचन जल भरि किये प्रताप प्रान यान मों। महा मनोज आरतो विलोल पांव धारतौ हरी हरी पुकारती हरी हरी लतान मों॥ ६४॥ कुन्दन तन रँग रसाल मंजुल विधु वदन वाल जीते जिहि कोटि चन्द्र सारद प्रभान मों। गहे अन्योन्य करन कौल प्रमदाकुल काम नौल रुचिर सुनत सुर नारद चित तान में। जमुना के तीर तीर सुमिरत दल बीर धीर व्याकुल प्रताप भई कान्ह अंच ध्यान मों। सुवास कौं विसारतीं न आस कौं सम्हारतीं हरी हरी पुकारतीं हरी हरी लतान मों॥ ६५॥ अथ 'सुख सो बन वीथिन मों विहरैं,। स रुचि नाचहिं दिव्य नटी नभ मों धुनि बीन मृदङ्गन की लहरैं। दल देव सबाम विमान चढे दिवि दुंधुभि घोर महा घहरैं॥ बरसैं सुर फूल महा प्रभु पै छवि देखि प्रताप सबै हहरैं। रुचि यौं नद नंद नन्द महा सुख सों बन वीथिन मों विहरैं॥ ६६॥ दरसैं छवि दम्पति दामिनि सी मधि मों घनस्याम प्रभा लहरैं

रव नूपुर कङ्कन किङ्किनी की मधु मंद अनंदके कन्द भरैं ॥
जुरि गावतीगीत प्रताप मनोहर नारद सारद चित्त हरैं।
चल चूमि सबै मुख चंद हरी सुख सों बन वीथिन मों वि
रैं ॥ ६७ ॥ मिलि गोप सुता सङ्ग मों गति नाचत कोटिक
काम कला दहरैं । छवि छूटि कपोलन पैं झलकैं झलकैं
मुख स्वेदन की छिहरैं ॥ गति चंचल चारु विलोकन मैं
सुरजान प्रताप परे थहरैं । हरि यौं वृषभान सुता सङ्ग
मों सुख सो बन वीथिन मों विहरैं ॥ ६८ ॥ रहे फूलि
लता द्रुम कुञ्ज सबै छवि सों कल चन्द्र छटा छहरैं। वि
चरैं चहुं मारुत मंद सुगंध सुमंद कलिंदसुता लहरैं ॥ नव
नीरद रङ्ग प्रताप चितै दुति ते रति देव तिया यहरैं। र
चि रास कला सविलास लला सुखसो बन वीथिन मों वि
हरैं ॥ ६९ ॥ सिर मोर पखा कल कीट लसै विलसैं श्रुति
कुण्डल की लहरैं। कर मों लकुटी भृकुटी विकटी दुपटी
कटि कञ्चन सी फहरैं । कल केसर भाल विसाल प्रताप
सुलोचन चारु चितौनि हरैं। सङ्ग दामिनि सी घनसाम
लिये सुख सो बन वीथिन मों विहरैं॥ १०० ॥ अथ 'नाच
त कुञ्ज कलानिधि नीके,। सवैया । मण्डल सी जुवती जु
रिकै कर मण्डल बांधि गोपाल धनी के। आनँद सो चढ़ि
आनन की दुति लज्जित कोटि मयंक पुनी के ॥ छाय रही
छवि जोति महा झलकै कल भूषन अंग कनी के । पञ्ज
प्रकाश प्रताप चहूं रुचि नाचत कुञ्ज कलानिधि नीके ॥

१०१ ॥ गावत जो दस अष्ट सदा षट चारि न पावत पार
भनी के। संतत चारु विचारि प्रताप थके फन औलि सह
स फनी के ॥ कोटिक छाय कुटी बन बीच रमाय कलेवर
खाक धुनी के। पुंज लता वनितानन मो सोइ नाचत कुंज
कलानिधि नीके ॥ १०२ ॥ झूमि रहे द्रुम और लता क
लिता सु कुसुम्भ वितान वनीके। गुञ्जत भृङ्ग प्रताप मनो
हर फैलि रही मधु गन्ध सनीके ॥ बाजत बीन मृदङ्गनि
चय धुनि पूरि रही नभ लौं धरनी के। मत्त प्रिया गल बां
ह दिये गति नाचत कुञ्ज कलानिधि नीके ॥ १०३ ॥ मंड
न मोर किरीट लसैं विलसै विधु आनन ओप अधीके। कुं
डल कुन्दन औन दुहूं कल चंचलता चपला छवि फीके।
स्वेद चले मुख मंजु प्रताप हरै गति चंचल मो विधिही
के। बाजत पुंज मंजीर विमंजु सुनाचत कुञ्ज कलानिधि
नीके ॥१०४॥ साथ छुटी कच लाज दोऊ विलसौं छवि
बाम छकौं छवि पीके। छाइ रही श्रम आनन चन्द्र तजी
सुधि सुन्दरि मंदिर जीके ॥ नाचति मण्डल मण्डि प्रताप
बजैं कल पायल पायन तीके। श्री अधरानन बेनु धरे म
धि नाचत कुञ्ज कलानिधि नीके ॥१०५॥ अथ 'बार बार
राधा मुसुक्याति मुख मोरि मोरि,। कवित्त। छाइ रहे
चारो ओर नाद नाद जंत्रन के गावती नवेली ललिता
दि सब गोरि गोरि। गति सो नईनई नृत्यत सुगन्ध आ
लेत त्यौं तुरय चंचल तान तन तोरि तोरि ॥ भनत प्रताप

भ्रू दृगन नचाय आय मुरिमुसुकाय घूमि जात चित चोरि चोरि ॥ देखि देखि नटन अनोखो ऐसो माधव को बार बार राधा मुसुक्याति मुख मोरि मोरि ॥ १०६ ॥ लोनी लोनी अलकैं विलोलतीं कपोलन पैं बिंदु स्रम आभा सुख झलकत हलोरि लोरि । नैन रतनारे नागवेली बदन भीने विगलित गिरा श्रेनी प्रेम रस बोरि बोरि ॥ पीवत पिवावत मधु झूमत हँसत गावत ल.वत प्रताप अंकम कंपि कर जोरि जोरि । देखि देखि विह्वल मदन बस माधौ को बार बार राधा मुसुक्याति मुख मोरि मोरि ॥ १०७ ॥ गोरे गोरे गातन गोराई की झलक झलकत दामिनि दमक वारीं अङ्ग प्रति कोरि कोरि । रोम रोम भीने रङ्ग मद वो मदन दोऊ घूर्णित चखन अङ्ग लोम झकझोरि झोरि । भनत प्रताप भ्रू तरल मरोरि मोरि छोरि छोरि आंगी जृम्भ लेति तन तोरि तोरि । जोरि जोरि लोने लोने नैन द्वौ माधौ सें बार बार राधा मुसुक्याति मुख मोरि मोरि ॥ १०८ ॥ एक तौ जागे दूजे मधु को खुमारी छाई तीजे समीर सीतल मन्द रस बोरि बोरि । चौथे वसन्त राजै कुसुमित निकुञ्ज मंदिर तीर कालिंदी को लेत चित्त चोरि चोरि ॥ झूमि झूमि लेटि उठि लेटत उठत झूमि घूमत प्रताप राते नैन तन तोरि तोरि । भोर की अनोखी ऐसी दसा देखि माधौ की बार बार राधा मुसुक्याति मुख मोरि मोरि ॥ १०६ ॥ सोरहो सिंगार नोखी घूंघट

किनारीदार उर बीच ब्रीड़ा आतंक कछु थोरि थोरि । अंग थहरात सुख मण्डल प्रस्वेद मंडित नैननि मनाय हा हाखात विधि कोरि कोरि ॥ भनत प्रताप केहूं काहू ल खात नाहि हारे अपार प्रेम सिंधु मधि पौरि पौरि । दे खि देखि सांवरी सखी रूप माधौ की वार वार राधा मुसुक्याति मुख मोरि मोरि ॥ ११०॥ अथ 'आज ब्रजराज गजराज मार्‌यो,। कवित्त । पीत पट कट्टि कसि नट्ट नागर निपट झपट लखिटट्ट भजि भट्ट चार्‌यो । पकरि रद चंड दुहूं चंड भुज दण्ड सों दण्ड सम जलज महि खंडि डा र्‌यो । तमकि तम तर्ज्जि अति गर्ज्जि धुनि तुङ्ग तुर पुङ्ग प रताप गज गहि पछार्‌यो । उठ्यो धुनि घोर चहुंओर मधु राज मों आज ब्रजराज गजराज मार्‌यो ॥ १११ ॥ लसत मुख मृदु ललित कुटिल कुन्तल कलित चलित कुण्डल मु कुट मोर वार्‌यो । सजत रज मंजु मृदु कञ्ज कायन रुचिर रुधिर स्रम कनन तन भ्राज भार्‌यो ॥ रज रंग सुम्भि गज गुम्भि कर अम्बु जन पुञ्ज प्रताप संताप टार्‌यो । मगन सुद छवि दृगन निरखि निर्ज्जन गगन आज ब्रजराज गजराज मार्‌यो ॥ ११२ ॥ चंचला रंग चमकत चमक दुहुं रदन व दन तन मनहु घन सघन कार्‌यो । स्रवन सुनि भय भरत अ म्ब दूभ धुनि धरत भारत गज मद मनहु अंबु धार्‌यो ॥ ध रत डग डगमगत धरनि दिग्गज सकल प्रबल प्रताप फनि कमठ हार्‌यो । वाजि अति गाजि सोइ राज सम्माज मों

आज ब्रजराज गजराज माखो ॥ ११३ ॥ रजन तन मंडि कै करन उर दंडि कै चंड चांडूर मुष्टक पछाखो । उचकि चपला छटा कंस ऊपर अटा पटा चट पकरि पुहुमी प्रहाखो ॥ दुहूं अद्भुत भटनि उभकि झांकति अटन नटिन सी नारि आनंद भाखो । उठत धुनि जयति जयति प्रताप नभ आजु ब्रजराज गजराज माखो ॥ ११४ ॥ जोड़ कर पंकजन आसनी अंक जन सोचि कै संक जन सैल धाखो । पाए कानन अनल मर्दि पन्नग प्रबल उरग किन्या न को प्रान हाखो ॥ दृषव छल जानि छिन हखो जिन प्रान झुकि पकरि भू तानि दुर्वक विदाखो । भनत प्रताप सोइ गाजि मधुराज मों आज ब्रजराज गजराज माखो ॥ ११५ ॥ अथ 'वसन्त मों कन्त वसन्त रहे,, । सवैया । फूले निकुञ्ज घने द्रुम मंजुल भृङ्ग लतानन तान कहे । अति सीतल मंद सुगन्ध सने चहुं तीछन तीर समीर वहे ॥ धुनि कोकिल कीर कपोतन के भरि कानन कान न जात सहे । उर सालत सूल समूह प्रताप बसन्त मों कन्त ब-सन्त रहे ॥ ११६ ॥ रितु ग्रीषम गाढ़ हियो करिकै निसि पावस के सर मैन सहे । अरु सारद मो रद लाए सदा रजनी रजनीस के दाह दहे ॥ सुवित्यौ करि तंत हिमंत प्रताप हिये विच सीसिर आस गहे । अब अंत अनन्त भयो सजनी जौं बसंत मों कन्त बसन्त रहे ॥ ११७ ॥ नित हेरत बाट थकीं अँखियां दुहुं पावक से अंसुवान बहे । दि

न के गिनते दिसि छोर गए जियरा अब धीर अधीर गहे॥ कहियो इतनोइ संदेस यहै बिछुरे छलकै तब काह कहे। अब पाहन सो हियरो कै प्रताप बसन्त मों कन्त बसन्त रहे ॥११८॥ कल पल्लव कानन बाग लसै द्रुम दून प्रकाश विलास दहे। अलि गुञ्जत पुञ्ज प्रसून फिरैं मदनाकुल कुञ्जन कुञ्ज बहे। सर पंजर सो ऋतुराज कियो चहुं मंजर मंजु न जात कहे। अब कौन सहै सर ताप प्रताप बसन्त मों कन्त बसन्त रहे ॥११६॥ प्रगटै छिनही छिन नेह नयो उर मोहन मंथ सों मैन महे। नित जारत जात हियो कृशगात न वात प्रभात सुजात सहे ॥ रट माधौ माधौ लागि रही न लगै कहुं नेक कहु कान कहे। करिये कहु कौन उपाय प्रताप बसन्त मों कंत बसंत रहे ॥ १२० ॥

अथ "आये घन सराम घनसराम नहि आयेरी,, । क० । भनत प्रताप दिग मण्डलन उमड़ि उमड़ि घूमि घूमि घहरि घहरि धुरवा सब धायेरी। भुहूं भुहूं भुकरि भुकरि भूमि छिति मण्डल छ्वै छहरि छहरि भहरि भहरि भूकन भर लाएरी ॥ भिल्लि भननात निसि वासर नहि जानी जात चौगुनो चमकि चमकि चपला चपाएरी। एरी मेरी बीर अब कैसे कै धीर धारूं आए घन सराम घनसराम नहि आएरी ॥ १२१ ॥ आयो ऋतु पावस प्रताप घन घोर भारी सघन हरीरी बन मंडन वढ़ाएरी। कोकिल कपोत शुक चातिक चकोर मोर ठौरठौर कुञ्जन मों पंछी सब छाएरी ॥

जमुना के कूल औ कदम्ब के डारन पै चारो ओर घोर सोर मोरन मचाएरी। एरी मेरी बीर अब कैसे कै धीर धरिये आए घन स्याम घनस्याम नहि आएरी॥ १२२॥ सेत सेत बग के निसान फहरान लागे ईंचि ईंचि चपला कृपान चमकाए री। घहरन भुसुण्डी की अवाज सी कर न लागे बुंदन के भारन झीनें बान झरलाए री॥ भनत प्रताप रतिनायक नरेस जू ने धीर गढ़ तोरिबे को पावस पठाए री। एरी मेरी बीर अब कैसे कै धीर धरिये आए घन स्याम घनस्याम नहि आए री॥ १२३॥ चौरां झको रि झोरि हहरत प्रबल पवन घूमि घूमि दौहन घनावली उनाए री। भेकी भुजङ्ग रंग भीने अनङ्ग अंगै दसहू दिसा नन उतंग सुर छाए री॥ ह्वै रही अधिक अंधियारी प्रता प चारौं निपट भयावन आइ भौन सरसाए री। एरी मे री वीर अब कैसे कै धीर धरिए आए घन स्याम घनस्याम नहि आए री॥ १२४॥ पावस बिलोकि मन कामहू को काम बाढ्यो कामिनी कुलीनी कुल रीति बिसराये री। मान छिनु मानिनी के मन ठहरात नाहि बिनही मनाये लेत प्रीतम उर लाये री॥ भनत प्रताप गति भोगिन की चलावै कौन जोगी जतीन हूं के काम सरसाये री। एरी मेरी वीर अब कैसे कै धीर धरिये आये घन स्याम घन स्याम नहि आये री॥ १२५॥

अथ "तजिहैं परान अब कान्ह कान्ह रट के,,। क०।

आंखनि तैं आंसू के प्रवाह नित व्यापे रहैं कारे भये सोभा प्रताप कुच पट के । आह के दाह मों दहत निसिवासर देह हसत कलेवर मों खाल रह्यौ सट के ॥ ऊधो कृपा के कहियो संदेसो येतो गहि के चरन सरोज वा नट के । ब्रज की नवेली विरहाकुल वियोग थारे तजि हैं परान अब कान्ह कान्ह रट के ॥ १२६ ॥ सींचि सींचि चन्दन सुगन्धन सों अंग ऊधो फूलन सों सांवरे छबीले छवि लट के । कुञ्ज कुञ्ज वेलिन मों नवेली अलवेलिन को लै लै प्रताप डोले वोट पीत पट के ॥ ते गात मेरे अब राखन चढ़ाइवे को सांवरे पढाई जोग पाती जकजटा के ॥ ऊधो उपाव अब दूसरो न आन रह्यौ तजि हैं परान अब कान्ह कान्ह रट के ॥ १२७ ॥ नेक नन्द बाबा के आंखनि तैं सूझत नाहि जसुदा सों गई है आस जीवन की घट के । हूंकि हूंकि हारन मों चरती न धेनु ऊधो सूखि सूखि साखा रहे वृन्दावन वट के । राधा की बाधा प्रताप ना कही जात है रही हस तन कलेश बीच नट के ॥ वार इक कैसहूं मिलावो परान ना तो तजिहैं परान अब कान्ह कान्ह रट के ॥ १२८ ॥ हंसि रहीं सिवरी चवाई या गोकुल की भट को न नेक गुरुजनहूं के हट के । लीन ह्वै मुरली के सुर मों प्रताप दीनी कुल की कुलीनता नसाइ कर नट के ॥ ते पीव मेरे अब चेरे भये कुवरी के ऊधो न जानी है विधाता के घट के । केहूं नाहि विसरत बिसारे हिय हूक बान

तजि हैं परान अब कान्ह कान्ह रट के ॥ १२९ ॥ अन्तर उर दाह को प्रवाह अति व्यापत हैं देखि के प्रवाह व्यापे जमुना के तट के । सुनि सुनि कै कूक बन कोकिल कपोत न की हूक ह्वै आवत प्रताप सुधि नट के ॥ चित्र सी ठाढ़ी ह्वै सोचती विलास ऊधो चित मों उचाट होत बाट बेनु बट के । सही जाइ कौन पै बिहारी को विरह सूल तजि हैं परान अब कान्ह कान्ह रट के ॥ १३० ॥

अथ "मेरे मन बसो टेढ़ी मूरति गोपाल को,, । क० । टेढ़ी टेढ़ी भौंहैं चढ़ौंहैं चितवनि टेढ़ी टेढ़ी टेढ़ी तिलक भाल केसर त्रिसाल को । टेढ़ी किरीट टेढ़ी कलँगी पषान खोसे टेढ़ी सुहात चारु कुन्तल बिचाल को ॥ टेढ़ी गिरीव कर मुरली धरि अधरन मों टेढ़ी सुठाढे टेकि तरिवर तमाल को । टेढ़ी प्रताप सब लागति कुलकानि टेढ़ी मेरे मन बसो टेढी मूरति गोपाल को ॥ १३१ ॥ कुण्डल छिलोल कल कानन कनक राजैं केसर को तिलक भाल भृकुटी त्रिसाल को । कुन्दन किरीट तामों मोर के पखान खोसे झूमत चलत मंद गति सों मराल को ॥ चितवन तिरीछी तीर तीछन अनंग कैसे बिहसत मों आली जात लाली गुलाल को । केहूं बिसारे नाहि बिसरत प्रताप नेक मेरे मन बसो टेढ़ी मूरति गोपाल को ॥१३२॥ छोड़ि कै सारी जरतारी सिंगार सोंधे करिहौं दुकूल तन तरिवर के छाल को । रचि हौं विभूति तजि भूषन जरायन के धूनी जगाय

दृढ़ आसन मृग खाल को ॥ जदिहौं हौं ऊधो इक नाम स्याम सुन्दर को संतत सुधारि करमाला करमाला को। टेढ़ी सों प्रताप सब कहियो उपाव टेढ़ो मेरे मन बसो टेढ़ो मूरति गोपाल को ॥ १३३ ॥ कानन बीच कुण्डल किरीट सिर दिव्य सोहैं कुन्तल कपोल राते लोचन रसाल को। कंठ कल आभा भौंर भलै कण्ठभूषन सो पीक लीक छाइ कैधों छाई छवि लाल को ॥ छवि सों मरोरे ग्रीव मुरली धरि अधरन मों काछनी सुकाछे उर सोभा बन माल को । कैसे कै प्रताप सूधी बातें बसें एरी सखी मेरे मनबसो टेढ़ो मूरति गोपाल को ॥१३४॥ काहू कों करोरि सुख संपति समाज बसो काहू कों बसो वेष मोहनि कल वाल को ॥ काहूं कों कपट दंभ द्रोह अरु कोह बसो काहूं कों बसो चास वासर निसि काल को ॥ काहूं कों जंत्र मंत्र जप तप विसेष बसो काहू को बसो भाव भैरो वैताल को। भनत प्रताप मन केतिक कितीक बसो मेरे मन बसो टेढ़ो मूरति गोपाल को ॥ १३५ ॥

अथ "मेरो गोपाल जू तै जै गोपाल कहियो,, । क० । छीवै मती ना मोहि मधुकर विसास घाती देखिअब कारो रङ्ग लरजत है सुहियो । ग्वारिनी विचारी हम बसी हैं करीलन मों पाय परि मेरे कहो कहा तुम लहियो। उड़ि जा रे बावरे तू कुवरी महरानी पै पैहै नवोनिधि आसु पाय दोऊ गहियो । सुनि ले संदेसो एक औरहू प्रताप

आछे मेरी गोपाल जू तै जै गोपाल कहियो ॥ १३६ ॥
बूड़त समुद्र दुख पोत भए ऊधो तुम प्रभु को संदेसो पाय
आनंद उलहियो। जादूवे कीं तुम कीं प्रताप कहैं कैसे कै
हमकों तुम्हारो दर्श दुर्लभ सुलहियो ॥ चित मीं अपाने
आप आपही विचारि देखो देह लौं नातो नेक नेह को
निबहियो । ऊधो कृपा कै बहु भांति आपु पायन परि
मेरी गोपाल जू तै जै गोपाल कहियो ॥ १३७ ॥ जात हौ
ऊधो जू मधुपुर भरोसो दै तुमहू प्रताप हरि सी गाढ़ता
न गहियो । आपुन सयाने हौ कहिये कहां लौं और जब
तब ब्रज बासिन की सुधि लेत रहियो ॥ विरह आवेसन
मीं जो कछु कहो होय सिवरं ते नीच ऊंच बातनि कीं
सहियो । ऊधो कृपा कै बहु भांति आपु पायन परि मेरी
गोपाल जू तैं जै गोपाल कहियो ॥ १३८ ॥ पिंग पट
लंक अंक जाल गुञ्जमाल राजैं चन्द्रिका मयूर चूड़ बंसी
कर चहियो । मकराकृत कुण्डल प्रताप हौ कानन मीं
देखि देखि आभा श्रैन नैन लाज लहियो ॥ हाहा समीर
वीर तोसों निहोरो येक नेक वा विसासी के पास होय
वहियो । मोपै कृपा कै बहु भांति तूं पायन परि मेरी
गोपाल जू तैं जै गोपाल कहियो ॥ १३९ ॥ जेऊ गये धी-
रज दै मधुपुर पथिक लोग तेऊ फिरे ना येक नैन थकि
रहियो । चित्र सी ठाढ़ी ह्वै जोहती घरीन मग तुम को
विलोकि कछु धीर उर लहियो ॥ जात हौ कापै प्रताप

नेक टाढ़े होउ येक हम दोनन की बात उर गहियो । हा हा बटोही और मधुपुर पधारो तो मेरी गोपाल जू तें जै गोपाल कहियो ॥ १४० ॥

अथ "कूबर आज हों कौन पै पावों । सवैया । सारद मास में रास रचौ जमुना तट पुञ्ज विलास की छांवो । बीन मृदङ्ग पखाउज वेनु बजाइ बताइ प्रताप हों गांवो ॥ ऊधो सुभौंह कटाक्ष के कोर करोरि कै प्रीति की रीत रिझांवो । रीझे गोपाल जों कूबरी पै तौ कूबर आज हों कौन पै पांवो ॥ १४१ ॥ ऊधो रचों कलधौत को धाम जरीन की द्वारन झांप लगावों । पूरि कपूर को दीपक साजि सुकोमल ऊन की सेज बिछावों ॥ प्रताप सदा मद पान कराय सुप्रेम मों हेम निसा विनसावों । रीझें गोपाल जों कूबरी पै तौ कूबर आजु हों कौन पै पावों ॥ १४२ ॥ सेज मों नाथ के साथ प्रताप सनाथ ह्वै गात सों गात मिलावों । सारी निसा हिय सो हियरे लगि कै पिय अंग अनङ्ग जगावों ॥ सौसिरसी हों ऊधो सवै रचि काम कलोल विलोल बितावों । रीझे गोपाल जों कूबरी पैं तौ कूबर आजु हों कौन पै पावों ॥ १४३ ॥ मंजुल माधवी कुञ्जन बीच प्रताप सुकोकिल पुञ्ज बसावों । फूल कलीन की सेज सँवारि सुफूल के फूले बितान तनावों ॥ वसंत मों सारी वसंती हो पेन्हि सुलेकर वीन बसंतहो गावों । रीझे गोपाल जों कूबरी पैं तौ कूबर आजु हों

कौंन पैं पावों ॥ १४४ ॥ कुञ्ज कलिन्द की नंदिनी तीर सुरावटी मंजु उसीर की छावों । सेज गुलाब के फूलन साजि विराजि कै सीर सुगन्ध सिंचावों ॥ काम कला सुख छच के छांहनि ग्रीषम ताप प्रताप बितावों । रीझै गोपाल जौं कूबरी पै तौ कूवर आजु हौं कौन पै पावों ॥ १४५ ॥ पावस सारी सुही सजिकै निज श्री नँदलाल को लाल सजावों । डारि कदम्ब के डार हिंडोर सुझूलन दै झुमकाय झुलावों ॥ प्रताप उतै रस बुंद परैं इत पी संग ऊधो मलार हौं गावों । रीझै गोपाल जौं कूबरी पै तौ कूवर आजु हौं कौन पै पावों ॥ १४६ ॥

"ऐसो चित्रकूट सब कूट को तिलक है ,, । कवित्त । जुगमग जरायन के राजत कपाट खंड मण्डित विचित्र जापै छवि की छलक है। चित्रित विहङ्ग रङ्ग पादप तमाल ताल विलसत विसाल तम स्रेनी सिलक है ॥ धाम धाम मूरति मनोहर विराज मान छाइ रही सोर शंख झालरी झिलक है । निसि दिन प्रताप होत अनँद अनंत लूट ऐसो चित्रकूट सब कूट को तिलक है ॥ १४७ ॥ भांति भांति फूलन पै भँवरत भँवर भीर दरमन विहङ्ग नाना कलरव किलक है । रङ्ग रङ्ग शृङ्गन पै नृत्यत मुदित मोर तोरि तोरि ग्रीवां चारु तन की चिलक है ॥ भनत प्रताप भौर झरना झरत रङ्ग केलत विहङ्ग मृग निभ्रम ललक है । हूक हूक जात सब दुख को जंजाल टूटि ऐसो चित्रकूट सब

कूट को तिलक है ॥ १४८ ॥ फैलि रहे छोनी पै भूरे भूरे जटाजाल कर मीं कमराइल और तन पै दलक है । धूनी र माइ दृढ़ आसन ससमाधिन मीं ह्वै रहे लीन नहि लागत पलक है ॥ ऐसे दर्शनन मीं दरसत समाज साधु सब सम प्रताप जाकों दरसत खलक है । जन मन अनेकन के जात मोह ग्रंथ छूटि ऐसो चित्रकूट सब कूटको तिलक है १४६॥ तीर जहं पावनि मंदाकिनी प्रवाह मान मंडित दुकूल द्रुम खंडन कलक है । रामचन्द्र चरनन तें अङ्कित शिलासानु अद्भुत प्रभामान झलकत झलक है ॥ कहा कहों मुख तें प्रताप सुघराई गिरि शोभा निरेखि नहि लागत पलक है चित्र औ विचित्र सब रचना अनूप कैसो ऐसो चित्रकूट सब कूट को तिलक है ॥ १५० ॥ तीर तीर मंदिर मनोहर विराजमान राजत समान आसमान लौं ललक है । ता पै अमोल नग मंडित अखंड खंडै विलसत कलस कलधौत को झलक है ॥ भनत प्रताप चित्र चित्रित विचित्र तुङ्ग अ वली धजा धौल तरलतफलक है । चारौंदिसि उतङ्ग रा जत विचित्रकूट ऐसो चित्रकूट सब कूटको तिलक है॥१५१॥

॥ इति श्री पद्मरत्नाकरः संपूर्णः ॥

क० । रवि के प्रकास सों विकास होत सरसिज को सेइ सेइ अलिकुल सब जासों जीजियतु है । मद सों मतवारे ह्वै विहार करत चारो जाम गुञ्जि गुञ्जि मधुर मकरं

पीजियतु है ॥ ताको अंथैवो अरु नथैवो पुण्डरीक मांहि सो तो अपानो भाग भोग कीजियतु है । सुधा सों विष होत हैं प्रताप निज कर्महो तैं ताकों पिय ताको दोस का को दीजियतु है ॥ १५२ ॥

काहू भरोसो भवन संपति कुटुम्ब बाढ़े काहू भरोसो कर आयुध धरन को। काहू भरोसो भूत भैरवी अनेक साधे काहू को भरोसो पंच पावक जरन को ॥ काहू को भरोसो दम दान आचरनन को काहू भरोसो चित उत्तम बन को। हा हा प्रताप चित औरन भरोसो और मोहि तौ भरोसो एक रावरे चरन को ॥ १५३ ॥

निश्चै निज भवन त्यागि भरत ना विदेस जाते केकयी न लेती बर भूवना संहारती। रामानुज राम संग जानकी न जाती बन निश्चै नहि सूर्पनखा वेषनाय सारती ॥ कंच न सो सुन्दरो न होतो मारीच मृग नेक रूप ताके वैदेही न निहारती । भनत प्रताप जौ न होती हू भावी तौ राम ना अहेरी जाते सिया ना सिधारती ॥ १५४ ॥

प्रताप घने मुनिवृन्द बसे बन कोटि कुटी करि काननमें। निसिवासर गावत छाले परे सहसानन के सहसानन में ॥ कहुं जो मृदुमूरति नेकनआवति भव चतुरानन ध्यानन में। बन सो वृषभानसुता संगडोलत पायन लाल लतानन में ॥

लर्कत अक झलक झलकतल जलज करन चरननन जल ज तर। तरल तकत जत ततत‍न घन रंग रज तन गनगन

कक नक नक कर ॥ अकल करत तखनन धरत धर घर घर तकतन हनत नयन सर । ठनगन लतन करत कत दरदद दरद न जनत तनक न सयल धर ॥ १५६ ॥

क०। लोचन लोनाई चारु चन्द्र सो वदन जोति अंग अंग झलकत मनोग की प्रभा मई। आवती अकेली अलबेली सी प्रताप कुञ्ज मग मों मिलाय नंदलाल सो नई भई ॥ रंच करि सौंहैं बिहसौहैं कपोल गोल लोंचनन नचाइ ला इ गर सों नई नई ॥ कहि रहे कान्ह जू नेक ठाढ़ी हों सु नि ले सुनी है जू सुनी है जू कहत चली गई ॥ १५७ ॥

क०। गनपति गौरीस अव सुरेस चतुरानन को चपल हो त चारु नित नूपर झनक में। तन मन सुधि त्यागि कै वि हीन दाम दासी होति रतिसी अव रंभासी रमासी बनक में ॥ कानन प्रताप कोटि जोगी औ जतीनहू की चटी छू टि जात नेक वेनु के भनक में। ऐसे छवि वारे प्यारे नंद के कुमार तासों गोपके सुताकी भौंह टेढ़ीहै तनक में॥ १५७॥

मोहन साम सरोजनसी इन नैननि नोक नईसो नई। बस धोखेइमा अधराधर कंज अली रस चाटि लई सो लई ॥ निज कोमल प्रान प्रताप निरे निर्दइके हाथ दई सो दई। अबमांगतिहौंकरजोरिइहै घरजाहुललाजोभईसोभई॥ १५८॥

सध्यसभा द्रुपदी पट ईंचिकै दुष्ट दुसासन लाज लहा है। श्रीप्रहलादसों वैर बेसाहि नफाहरिनाकस व्यापि रहाहै॥ केतिकगाह गजादि विचारि प्रतापहिए प्रणगाढ़ महाहै।

एकभलेजोंगोविन्दतोऔर भलेतोभलेनभलेतोकहाहै॥१६०॥
पावन पाय सुहोत तबै जब पायनहो कछु तीरथ कीजै।
पाप बिहीन तबै करहोत जबै कछु दान दुहूं भरि दीजै॥
नैनन को तबही फल है जब सन्तन को पदकञ्ज लखीजै।
अन्तहु सुइसुहोततबैजब माधवसुकुंदगोविंदभजीजै॥१६१॥
क०। व्याकुल पँचाली जाके बैठे जहं पांच पति ताकी
पति जाति राधा पति तूं बचाई है। कोपे अति सुरपति
सो गिरपति कर धारन करि तुमही गिरधारी ब्रज
पति बढ़ाई है। केती पतिराखी तूं ने जगपति प्रलम्ब
पानि जाकी जस जग में तारापतिसी सोहाई है। ताते
तुव पौरि पर प्रताप टेरत कमलापति मेरी पति राखि
ये तो रावरी बड़ाई है॥ १६२॥
क०। राते राते किसलै तापै मञ्जर समूह सोहैं भुएड़न प्र
ताप तापै अलिकुल के धावने। जैसही सोहाई पुञ्ज सुख
को निकुञ्ज फूले तैसही सोहाई मंजु कोकिल के गावने॥
जमुना को तीर औ समीर धीर सीतल बहि बरसत सु
गन्ध दह दीसन लोभावने। आयो बसन्त कैधौं कंत को
संदेस आयो वृन्दाबन आली आज लागत सोहावने॥१६३॥
स०। अवनी बिन भारहि कौन सहै अरु सेस बिना धर
को धरिहैं। दिवनाथ बिना तम कौन दरै अरु ग्यान बि
ना दुख को हरिहैं॥ हरि नाम बिना सम कौन तरे बर
खा बिन सागर को भरि हैं। मन मन्द सुनंद कुमार बि

ना भवसागर पारहि को तरिहैं ॥ १६६ ॥ सब गूढ़ गटी प्रगटी गुन की लपटी चुटि मों तन पुन्य पटी। उपटी मुद अम्बु अटोहूं अटी सब लोक लटीन की टूटी घटी ॥ नित सेवत जाको मटी समटी सजटी अजटी जटी पत्रकुटी। चितकोटि कलाप प्रतापचटी उचटी चटीकपंचवटी ॥१६५॥ बाल छबिली खड़ी छबिसों सुचितै छबि औचक चंचलकी। कल कुंतल गोल कपोल विलोकि प्रताप तजी सुधि अंचल की ॥ अति वेपथु पीन पयोधर यों द्दिग ज्यों चकवाक हेमाचल की। उर आनन्द सों अंसुवान के बुंद रहे पट पूरि द्दगञ्चल की ॥ १६६ ॥

क०। प्रगटी मुकुन्द पद मंजुल सरोजनि तें विलसी कपाली के जटाजूट तल में। पतितन के कारने प्रताप श्री भगीरथ जू लाए वड़े भाग तोहि भागीरथी थल में ॥ तरल तरङ्गे सुक्ति दंगे मातु गङ्गे तूं नाम के लिए तें जाके जात पाप पल में। धरते न भार धर दिग्गज फनिन्द्र कोटि कल्मस द्दसान जौं न होती तूं कलि में ॥ १६७ ॥ हरिसे द्दग डूबे रहैं नित नीर कलेवर पीरमई गरसे। गरसे न मत्त करि बैन कढ़ै विरहानल अंग चढ़ै जरसे ॥ जरसे सब सूखी सुहागलता उर सीरसमीर लगैं सरसें। सरसे दुख पुञ्ज प्रतापघने जबसे बिछुरे हैं पिया हरसें ॥१६८॥ मोरपखा कर सो कसिकै कटि बांधि लटी पटपीतरलीके। गाढ़े गरे वनमाल सह्मारि चढ़ाइले भौंहन वीर हलीके।

जैसही तूं पति राखी प्रताप महारन भीषम भीम वलीके।
तैसहिधीरहिएधरिकैपति राखिलेपीढ़पभानललीके॥१६९॥

क०। प्रताप हेतु हाल की कही न जात बाल की लसै
दुकूल चालकी द्रुतै निरेखिने गई। विलोकि सुन्दरी हंसी
हिए सुवक्तभाधसी मयंकसी कलाकसी कला प्रयोग कै गई॥
गती गयंदराटसी लचक्क लक साटसी सुआय लाय ताट
सी हियो लपेटि लै गई। सनेह सिंधु वोरिकै कटाक्ष को
र कोरिकै चटाक चित्त चोरिकै कपाट पट्ट दै गई॥१७०॥

स०। जाके लिए कुलकानि तजी न सिखी सखियान मैं
सीख कौ बाता। लोग चवाइ मैं लाज गंवाइ रही इक
सांवरे के रंग राता॥ सो सब नेक मैं नोखे विसारि प्रता
प चले तजि नेह को नाता। मेरे तो चित्त की चित्तही
जानै पर मीत के चित्त की जानै विधाता॥१७१॥

क०। वेनी विलोकि मति भरमैं जटा भर्म कंठ कस्तूरी
की लीक लपटानी है। चन्दन कपूर छाए छार छवि अङ्ग
न मों सुक्तागन मंजु मुण्डमाल दरसानी है॥ चाले की
चूनरी न मैन मृगछाला गुन जतैं प्रताप मो कों शंभु
करि जानी है। एरे कठोर मोहि जारत विचारिहि
कहा कौन को अकस लै कौन पै ठानी है॥१७२॥

स०। फेकत फूंकि कै छार चहूं दिग बांधि अकास पता
लहि तैसे। बारहिं बार प्रताप सह्मारि संवारत हौ दृढ़
आसन भैसे॥ वोझा अबूझ तूं भारै कहा भुकि वेंत कौ

साटी सुधारत ऐसे । भूत जों होइ तो झारे झारैं नँद पूत लग्यौ सो झारै अब कैसे ॥ १७३ ॥

क० । गोकुल कों गाम नीको जसुदा को धाम नीको राधाकृष्ण नाम नीको आनँद के कंद को । वृन्दावन बन नीको सावनको घन नीको गोपिन को मन नीको वायु नीको मंद को ॥ कानन कदम्ब नीको तपनी को अंबु नीको कुञ्जन को जम्बु नीको बिम्बु नीको चंद को ॥ गोपन को गट नीको जमुना को तट नीको बंसी को बट नीको नट नीको नन्द को ॥ १७४ ॥ खोलो जू केवार एतीबार कौन टेरत हैं हों तो बनमाली जाइ डोलो बन बाग में । नाम मेरो माधौ है कौन सो बसन्त रितु नाही घनस्याम जाइ बरसो तड़ाग में ॥ हौंतो हौं चक्रीधर भाजन बनाओ जाइ हरिहौं प्रताप जाइ डोलो दल नाग में । जेती जेती प्यारे ब्रजराज ने अरज कीनी तेती तेती प्यारी ने भुलाई अनुराग में ॥ १७५ ॥

स० । पक्षी तेरे हित टारी सबै गृह तें हों खरी सखियान की भीरहि । ठाढ़ी रहौं निसि दिवस प्रताप लिए कर देन कों हों निज नीरहि ॥ तौहू सनेह सों बोलै नहीं अब चाहै कहा जो बढावत पीरहि । यों बलवीरहि देखि अटा चिटकोरी बजाइ पढ़ावती कीरहि ॥ १७६ ॥

अति दुरगम शृङ्ग महा चढ़ि के निलतानिल कंठ निरावै को । हठि पैठि महा बड़ वारिध में बड़वानल ज्वालबु

झावै को ॥ नभ बीच प्रताप कोऊ उड़ि कै उडुराज कलङ्क मिटावै को। वृषभान सुता मन मोहन को उरझे नयना सुरझावै को ॥ १७७ ॥ कवित्त। छाई धुनि तत छन उतंग त्रैलोकी मों जाए रघुनाथ रघु भूषन अरथ के। लाखन भिखारी ते सुखारी भए संपति पाइ लाखन भिखारिन देत दान गज रथ के ॥ भनत प्रताप लोक लूटत भँडार चारौं वंचि रही मोती एक रानी के नथ के। साजि साजि मङ्गल सब जुवती अयोध्या की धाई बधाई देन द्वार दसरथ के ॥ १७८ ॥ सवैया। एक समै हरि राधे दोऊ संग डोलत कुञ्ज कलिन्दजाकूले। फूल सों लाल सखी इकके मुख मारि मनोभव भाव सों भूले ॥ देखतहीं वृषभान कुमारि के लालि प्रताप दुहूं दृग भूले। यौं मुख की उपमा उमही अरविन्द उभै जनो इंदु मों फूले ॥ १७९ ॥

कवित्त। एही एक सीख है असीख जौं सीख मेरो एही एक ग्यान पाठसाले मैं पढ़ाय ले। एही एक बीर धीर धरिकै निरन्तर मों जंतर समान मेरो मंतर मढ़ाय ले ॥ जैसो जैसो विभौ देखि मन कों बढ़ायो तू तैसे तैसे समो देखि धीरज बढाय ले। दई दई आरत पुकारत प्रताप कापै दई जो दई ने सो सिर पर चढ़ाय ले ॥ १८० ॥ सवैया। भीम भरे मुख औ नख चंड रहे च्यौ स्रोन के बुंद भयो ना। जानु करालक से हरिनाकस मर्दत घोर चिकार कै पौना ॥ पावन पुञ्ज प्रताप महा प्रह्लादि प्रसन्न

अनन्द के भौना। श्री नरसिंह के गोद लसैं जनो सिंह के गोद हंसै मृग छौना ॥ १८१ ॥ कवित्त। कल्प कल्पांत या दुस्तर चौरासी मों भ्रमत न पायो पार भ्रमको भगाय ले। मूक औ शूकर कूकर कोटि खल ख्यालन मों करमन के ख्याल तासों खारि दिलगाय ले ॥ जानै कौन कोने पुन्य पाए कलेवर यह स्वच्छ कल्पद्रुम सो सुभ मति जगाइले। एरे प्रताप फेरि पैहै न दाव ऐसो ऐसो मों बनै तो हेतु हरि सों लगाय ले ॥ १८२ ॥ कारे कारे कोयले सरूप हो त पावक ज्यौं रूप होत रांगा रस पातौ सरस तें। सरवर जल उज्जल मों जलमल अमल होत लोहा पुरट होत पा हन परस तें ॥ जड़ तें अनेक जड़ चंदन सुगन्ध होत भृङ्ग होत भृङ्गी कीट भृङ्ग के तरस तें। एरे प्रताप कौन अच रज बड़ो यामें कृष्ण जों होय कोऊ कृष्णके दरस तें १८३ कीजै अगार पहारनमों भखि भूतल पत्रजो सूखि भरे हैं। कै करिये तप जाइ तपोवन जा बनमों अनरीति परे हैं ॥ होत यहै मन प्यारे प्रताप बड़ो तपु कौन सो कीजै खरे हैं। देखिए जो इन आंखनि सों वह मूरति मोर को पक्ष धरे हैं ॥ १८४ ॥ वर शंभु जटा तजि भागीरथी मथि सा गर मध्य धसी सो बसी। करि कोरि प्रकार बुझा यें बुझै न सिला मो कृसान कसी सो कसी ॥ अब होनी जु होय सो होय प्रताप मयंक मो अंक लसी सो लसी। मृदु मूरति सुन्दर सांवरे की अब तो उर बीच बसी सो

बसो ॥ १८५ ॥ भांतिन फूल को फर्स लसै बिलसै परि पू
रन चन्द्र मशालो । पल्लव को सचनोवा तने सुरही परि
चारीं लतान को जाली ॥ नूपुर भौंर प्रताप भये जुरि दे
तीं सखी ललितादिक ताली । श्री वृषभान सुता रिझवा
र रिझावन हार नचै बनमाली ॥ १८६ ॥

कवित्त । दोऊ अनूप अति कोमल पदारविन्द मेरे तिर
तर उर सर कोमल भो । भृङ्ग भो शोभा पराग मतवारो
मन अङ्ग अङ्ग आभा मो मीन दृग जल भो ॥ केहूं प्रताप
बात बात सों न हाले अब आली सनेह थल पल पल प्रब
ल भो । सांवरो त्रिभंगी मृदुमूरतिगोपाल जू को अब तो
प्रताप उर मेरु सो अचल भो ॥ १८७ ॥ बार बार आली
री सिखावै तूहूं मोहि होहूं अपन पै कों मानती सयानी
री । जानतीं हौ नीति अब अनीति जस अपजस कों वि
धि औ निषेद लोक लाज कुल कानि री ॥ कैसो करौं वो
र उर रहि कसकि उठै तिरछी चितौनि वाकी मंद मुसु
क्यान री ॥ हाहा प्रताप मोपै कैसे कै बिसारो जाइ मेरे
संवरिया एक तन मन धन प्रान री ॥ १८८ ॥ स० । और
ही होगी प्रताप सबै सुख पै कछु औरहि रंग चढ़ैगी ।
जागी सबै वहिकै कुलकानि अनङ्गको अङ्ग तरङ्ग बढ़ैगी॥
बावरी भौंह चढ़ावै कहा चटसाल मनोजके आछे परैगी ।
सांवरीरूप लखैगीजबै तबनाहिभटू मुखचैंन कढ़ैगी ॥ १८९॥
वंसो प्रताप बजैगो जुबै सुधि नेक भटू तन को न रहैगी ।

डोलैगी कुञ्जन बावरीसी मुसक्यान तरंग में का निबहै गी॥घूंघट ओर चलौ कितनौं मत मायि केकौन इहां उमहै गी। आइ हौ बीर जौं या ब्रज तौ ब्रजराज सो लाज क हां निबहैगी॥ १६०॥ मच्छिका मूतैं तेइ भोजन प्रसन्न जेंवत जूठ जल दादुर के पिये ना सँकात हैं। चूही बिला ई स्वान अति से अपावन जे ताके जुठारे केते वस्तु नर खात हैं॥ हाहा प्रताप यह कलि को प्रपंच देखो चूमत कुपुच मुख लारैं चुचात हैं। दाम दै दीन ह्वै वेस्यन के थू क चाटत खात हरि भक्तन के जूठन लजात हैं॥ १६१॥

सवैया। मोहि तो ऊजरो पीहरो सब नैनन एकही रँग अरूझैं। बावरी बावरी टेरैं सबै ब्रज वासिनी नाहक खो रि दै खूझैं॥ हाय कहा करूं मेरी भटू चित की गति मेरे नही कोउ बूझैं। सांवरो नैन बस्यौ जब सें तब सें मोहि सांवरो सांवरो सूझैं॥ १६२॥

दोहा। तरु सें धर सें चन्नु से खसे चन्द से दंत।
खग सें नग से मरुत से ताहि सराहत संत॥ १६३॥

क०। तरु से परमारथी वो धर सें सहनसील चन्नु से अपनपै कौं देखत न छन हैं। खान सें अमानी सम दर सी सुधाकर सें दंती से सील संतोष दृढ़ मन है। खग के से हल्त अरु नग से अचंचल मन मारुत सें विचरत असंग सब तन है। बार बार बन्दौ प्रताप वा देशन कौं विह रत निरन्तर जहां ऐसे संत जन है॥ १६४॥ छवि को क

गार शृङ्गार को स्वरूप कैधौं कैधौं यह सोभा सरवर को अरविन्द री। कैधौं सुभोग दृग प्रणत कल्पद्रुम कैधौं कैधौं अखंड ब्रज मंडल को इन्दु री॥ सुखमा को सींव धौं जी वन प्रताप कैधौं कैधौं श्री वृंदावन कंज मकरंद री। आनँद को कंद बलि नन्द को नदन कैधौं कैधौं हौ सो लोच न चकोरन को चंद री॥ १६५॥ दुख सुख समाज बाजी गर को सो ख्याल सब नट के बटा लौं सब लोकनि ठगतु है। नाना मनोरथ कंद चंद को मयूख पर से वेश के मो ती सो जगमग जगतु है॥ कौन नाहि भूल्यो अरु भूल्यो न कौन यामैं एरे वृथा तूं मन पारस मैं पगतु है। भनत प्रताप सब झूठो पसारो यह सांचों को बनायो तासो सां चो सो लगतु है॥ १६६॥ सवैया। एक दिनारी भटू जल लेन गई जमुना गहि गागर गाढ़े। हो भट को नट को सुधि कै सुधि नाहि रही अँसुवा दृग बाढ़े॥ ठाढ़ी भई कर टेकि तमाल प्रताप बिपैन ते हों चित काढ़े। तैसहि श्री बट मों झलके मुरली धरिकै मुरलीधर ठाढ़े॥१६७॥

फूलन को सिर कीट इतै उत चन्द्रिका फूलन को मन भूले। फूलन हीं के बने कल कुण्डल चौसर फूलनहीं के सुभूले॥ फूलनहीं को प्रताप मनोहर चित्र विचित्र विभू षन खूले। फूलनहीं को बनी सुख सेज लसैं दौ तापर फूल से फूले॥ १६८॥ पल एकहू लागै नहीं पलकै नि ति चातिक चिंचु सी ठानती हैं। अँसुवान से पूरि प्रताप

रहै रजनी दिन जात न जानती हैं ॥ न चलै बस आपनो कीजै कहा बहु भांति मरू करि आनती हैं । हरि प्यारे तिहारे निहारे बिना अँखियां दुखियां नहि मानती हैं ॥ १९९ ॥ कवित्त । मित वित आल इन्द्रजाल को सो ख्याल सब पांच को पसारो जान देवरिषि वानी मों । जानै को न कब धौं विनास ह्वै है काया को जल के ववूला सो विचारि देखि मानी मों ॥ चेत रे चेत चित अन्तर प्रताप अजहूं जात है इथाई नर जन्म अभिमानी मों । दिन जात राति जात घरी पलु छिन जात आयु जात ऐसे जैसे नाव जात पानी मों ॥२००॥ तन के ए कारे वाके मनमों कराई अति पिंग पट रंग अंग वाके छवि छायो है । नैन ए चंचल प्रताप चल चित्त वाके तुल्य निठुराई कठोर उर आयो है ॥ राखैं अब कंठ लपटाइ दिन रैन आछैं दोऊ सरूप अनरूप सरसायो है । कुवरी त्रिभंगिनी ए नायक त्रिभंगी लाल नीको संजोग ऊधो विधना बनायो है ॥२०१ ॥ न्यारे हैं विधि वो निषेध गुन दोष न्यारे न्यारे हैं दुख सुख अनीति नीति न्यारे हैं । न्यारे हैं धर्म औ अधर्म जाति पाति न्यारी न्यारे हैं स्वर्गनर्क अपजस जस न्यारे हैं ॥ न्यारे हैं मान अपमान हानि लाभ न्यारे न्यारे हैं सत्रु मित्र धाम वन न्यारे हैं । भनत प्रताप सब लोक अरु वेद हूं तैं रसिक अनन्यन को रीति कछु न्यारे हैं ॥ २०२ ॥ सवैया । सांवरो आइ मिल्यो सपने अलि हौं उर बीच

लिए कछु लाजहि। सुन्दर के हिय सों लपटाइ परी सुख सेज निरंतर आजहि ॥ हाय कहा कहूं प्यारे प्रताप भई नहि और भटू कछु काजहि। नींद निगोड़ी दगा दै बीर गई एतनोइ में लै ब्रजराजहि ॥ २०३ ॥ कवित्त। हाड़न को ठाट नस जेंवरीन ठाढ़्यो है आमिक तुचा तापै छायो ज नाइये। भीतर भर्यौ जाके मुत्र मल जल पीव रुधिर ले दार कफ कहां लौं गनाइये॥ भनत प्रताप दुरगन्ध को पिटारो यह अन्तहूं में भस्म विट कीट गति पाइये ॥ रैन दिन जामें ते मलमय पनारे बहैं ऐसे अपवित्र कों पवित्र क्यौं बनाइये ॥ २०४ ॥ पायन तें जाइये पवित्र श्री वृंदावन हाथनतें संत पदरज सिर चढ़ाइये। कानन तें सुनिये श्री राधा कृष्ण राधा कृष्ण मुख तें श्री राधा कृष्ण राधा कृष्ण गाइये ॥ भनत प्रताप दृग लालन लड़ाय आछें दिव्य द्वौ मूरति मनोहर उर ध्याइये। पैग पैग रज सों मचलि मतवारे लौं ऐसे अपवित्र कों पवित्र यौं बनाइये ॥ २०५॥ क०। माया समेत जीव ब्रह्म है प्रतच्छ कैधौं कैधौं यह सारव्य जग सिच्छा प्रदेनी को। कैधौं भार छाज को विवेक अनुराग राजत कैधौं बिराजत रूप स्वर्ग के नसेनी को॥ तीखा प्रताप ताप त्रय को त्रिशूल कैधौं कैधौं त्रिरेख प्रण पतितन गति देनी को। कैधौं राज पदवी को राजा प्रयागराय जू के राजत है भाल बीच तिलक त्रिवेनी को॥ २०० ॥ आवत हे लाड़िले उतै ते कुंवर कान्ह पहुंचो इतै

तें लाड़िली जू तहं जाइकै। अतिही निकट बीर नवल बर वयस दोऊ नवल भटभेरो भयो बंसीवट आइकै॥ घूंघ ट हटाइ तिरछाइ कै प्रताप वैसो मुरि मुसकाय लोने लो चन मिलाइकै। लाड़िले सँभारे चेतै तव लौं किशोरी ने मारी कटाच्छ कैवर भ्रू धनु चढ़ाइ कै॥ २०७॥ लाइ देखो लेय औषधीनहूं खवाय देखो हारी करोरि तंत्र मंत्र न म ढ़ाय कै। उठत कराहि आहि छिन छिन अचत कैसो का सूं कहूं एरी यह बातनि बढ़ाय कै॥ हाहा अनीति नाही चाहिए प्रताप ऐसो राखो कहा ते कमनैती पढ़ाय कै॥ लाड़िले संभारे चेतैं तव लौं किशोरी ने मारी कटाच्छ कै वर भ्रू धनु चढ़ाय कै॥ २०८॥ सहती न भार भूषन लह ती न चैन भूषन रैन दिन नेक भूषन भूषन विहावती। सी तल न होति सर से लागत समीर सरसे जासु अरि पंच सरसे सरसे न पावती॥ संजमय जलजात परसतही जल जात लोचन तें जल जात जलजात धावती। निकरत सु वाक नगरहि चाहत बियोग नगरहि जर के प्रज्वाल नग रहि नगरहि मनावती॥ २०९॥ कौलहू करैए मुकरैये छ नेकही में और नरमैए मैन मुग्ध चित चाव को। सेज ह्यां विछैये सुखछैये अनत कितहूं ऐये प्रभात राचे रूप म न भावको॥ भनत प्रताप रूठि जैये छनेकही मे ऐये छनेक ही में वस ह्वै निकाव को। पांवरे परैये वन भांवरी भरैये वलि जैये ऐसे रावरे के बावरे सुभाव को॥ २१०॥

क० । सांवरे सरीरै पीली औंगुली झलक छाई अंजन समेत समूर अब्ज दृग बाढ़े हैं । उरपत मनोहर समूरोज मुख मंजुल तैं तुतरे गिरा हाहा कैवांन काढ़े हैं ॥ मन त प्रताप नेक देख री जशोदा दूत कैसे ए तेरे हिरदय निरदयनि गाढ़े हैं । हाय दूत कब तैं कदम्ब के पतौवा बोढ़े तामरस लोचन खरोचन कौं ठाढ़े हैं ॥ २११ ॥

नीचहू मैं नीच श्रौ शिरोमनि असाधुन के मत्सर मृषान ही के खानि तन धारे हैं । लोक परलोकहू की संक नहि नेक मेरे रैन दिन दोषही मैं मग्न मतवारे हैं ॥ हाहा प्र ताप कापै जाइए कहा कीजै तुम बिन न और गति दूस रो हमारे हैं । जैसे तैसे दावने लगैए अब नाथ जू सपूत तौ तिहारे औ कपूत तौ तिहारे हैं ॥२१२॥ सांवरेई रोम तन ऊपर निकरि आए सांवरेई रंग लोने लोयन लसत हैं। सांवरेई छबि को समूह सो निकरि निकरि बार बार बा हिर सीस ऊपर दरसत हैं ॥ मनत प्रताप सांवरोई हरी जन पर अंग प्रति आभा सांवरेई बिलसत हैं । सांवरे काहे तै सतराति यौं कहा एरी गोरी तेरे अंतर मैं सांवरे ब सत हैं ॥ २१३ ॥ बिधु मौं प्रभाकर अरु भौमहू न दीसत हैं प्रफुलित सरोज पर सुधाकर अरसत हैं । मेरु श्री सिष र औ तरङ्ग कालिन्दी की मीन मधि मञ्जुल प्रताप सरसत हैं ॥ कारन कहा प्यारे नोखे प्रवीन कान्हर अद्भुत सुधा सिंधु सखे दरसत हैं । स्याम नभ मंडल बीच एकहू न

तारे हैं आजु शशि मण्डल तें तारे बरसत हैं ॥ २१४ ॥
कैसे कै फैलते पुरान आन ग्रन्थै सब कैसे कै ध्यानी लोग स्यामल छबि ध्यावते । बांधि बांधि सुन्दर प्रबन्ध अरु छन्द न मों कोविद कवी सेवी कहा कोउ गावते ॥ कान्हर छबी ले नेक आपुन विचारि देखो मेरेउ हिए मों भ्रम छिन ह्वै आवते । भनत प्रताप हमसे पतित जौं न होते तौ पतित पावन आप कहो कैसे कै कहावते ॥ २१५ ॥ एक नित आये हाहा खातीं करोरि विधि एक नित गृह ते विरक्त बतराती हैं । येक नित भूषन उतारतीं अँकोरन में येक नित पायन कों चूमि चूमि जाती हैं ॥ बावरी गँवेली सत रात यौं कहा मोपै वेनु की भनक सुनि बरबस हराती हैं । भनत प्रताप तोसी ग्वारिनी घनी एरी सांवरे के वोरे धोरे तांवरे सौखाती हैं ॥ २१६ ॥ सवैया । काजर विंदु ललाट लसै रुचि सों रचि मातु गुंथी सिर चोटी । जन्तर माल गले कल किंकिनि लंक लसै पट पीत कछोटी ॥ नन्द के आंगन बाल मुकुन्द प्रताप रमैं घुटुरूवनि छोटी । काग को भाग कहा बरनो हरि हाथ सों ले गयो माखन रोटी ॥ २१७ ॥ कवित्त । एक सो स्वरूप नारि वध मों प्रवीन दोऊ बांसही के वेनु धनु सुन्दर बनाये हैं । स्याम कालिन्दी तीर वृंदावनालय कौन राम वाशिष्ठौतीर अवध पुर छाये हैं ॥ भनत प्रताप स्याम राम में न भेद रंचक रञ्चक अनूप एतो भेद मन भाये हैं । राम बैदेही को

हारि दीनी दण्डक मों स्याम वैंदरभी कों जीति घर लाए हैं ॥ २१८ ॥ वारि दीनी देह धन धाम स्याम सुंदर पर तोरि तोरि वोक लोक लाज सब जुवरी । वृंदावन कुञ्ज कुञ्ज लता के वितानन मों विविधि कलोल के कलालन कै उवरी ॥ हाहा प्रताप सोइ स्याम को संदेसो ऐसो याही अंदेसन मों भई देह दुवरी । ऊधो अपारगति विधि की न जानी जाइ जोग जोग गोपी भई भोग जोग कुवरी २१९

मेरे सब पाप के प्रवाह जब व्यापैंगे तब ना प्रताप बनि हैं तुम्ह सरे सह्मारे तें । भूधर धसकि जैहैं भूतल भसकि जैहैं संग्रहू खसकि जैहैं घोर हलकारे तें ॥ मुनियेन मान ऐहैं जमलोग बहि जैहैं बनि ऐहैं आपहू को बटपर पधारे तें । ताते अब सह्मारते बनै तो सह्मारि लीजै ना तो पुकारे देत अबही सवारे तें ॥ २२० ॥ जैह मुंह लगे हैं सेननाई कवीर जुलहा नामदेव छीपा अरु कूवा कुह्मारे के । भालु अरु बानर गीध कौवा मलाह माली सदना कसाइ रविदास वा चमारे के । चलत प्रताप जहं कुबरी अरु सेवरी की विदुर कुवंस बालमीका डुमारे के । धोइ डारे उर तें अब गर्ब कुल वावरे हो ऐसही मोसाहेब हैं साहेब हमारे के ॥ २२१ ॥ ब्रह्म रूप तत्व रूप स्वाती को बुंद रूप चिन्तामनि रूप कल्प वृच्छ रूप मानिए । बीज रूप धातु रूप सिंधु रूप गोखरूप चंद रूप फिटिक रूप नीके उर आनिए । हरि रप हंस रूप दर्पन अरु दीप रूप नां

इ लिपटानी नारि रूप सौं बखानिए । पूरन प्रताप यौं महानन के बानी कौं भाव रूप भगवत स्वरूप रूप जानिए ॥२२२॥ रु० । हरि देवहु ती सुत सिंधु कृपा मणि लौं सुनि इंदमें भ्राजत हौ । सुख पच्छिम या वनकानन बीच विचित्र मही विच राजत हौ ॥ अपने तप तेज तें आपही आप प्रताप मई छवि छाजत हौ । बसि गंग औ सागर संगम बीच भले प्रभु आप विराजत हौ ॥ २२३ ॥

कवित्त । हे हे पतित पावन स्वामी जगन्नाथ करुनानिधान सुख सुखमा निदानजू । पतित प्रताप इहां आयो संसार दुख द्वंद्व उपाधि सब नध्यो मोहि आनि जू ॥ जेवत निरन्तरहू तिहारो महा प्रसाद घेरि लेत चारौं ते कारत नकवान जू । कंक ह्वै सबल देव रङ्क ह्वै महादेव वायस ह्वै देव देव ब्रह्मा ह्वै स्वान जू ॥ २२४ ॥ करिवे अपकर्म क छुराख्यो उठाय नाहि ऐसो पतिताई में प्रवीन अरु गाढ़ो है । कालह के हैं सदना अरु गनिका अजामिल तारि तारि जाकौ जस गर्व गढ़ चाढ़ो है ॥ आयो है दूर ते पतित पावन नाम सुनि जैसो अनुसासन होय चाव चित बाढ़ो है ॥ साखन कौ पतित प्रताप सिंह द्वारे पर यारो चरणारविंद देखिवे कौं ठाढ़ो है ॥२२५॥ कहति नहि तो सन मसोसन मरत आलौं आंसू को प्रवाह नित नैनन बहा करै । चित अकुलात गृह आंगन सोहात नाहि रैन दिन आठौ जाम अन्तर कहा करै ॥ कहू लौं प्रताप कुल

कानि की गलानि कीजे विवस भई बीर जग चाहै सो क हा करै । बंसी की घारन सुर तान की झकोरन नित मा र की मरोरन झकझोरन को सहा करै ॥ २२६ ॥ भौनि गई एरी विष ज्वाला रुव रोम रोम श्रम जल प्रवाह दा ह पौरी सब तन छई। उठति कराहि आहि सेज पै सरो जन के विसरि गई देह दसा ऐसी कछु गति भई ॥ कौन सी करूंरी उपचार हों प्रताप याकी हारी विचारि करि करि औषध कई दई। जहर भरी कारी कातिल सांवरे स लोने की तिरछी चितौनि उर बरछीसी चुभ गई ॥२२७॥

पढ़ि पढ़ि हाय्यौ ग्रन्थ भ्रमि आयो तीरथ सब तौऊ न ढीली परी गांठ भ्रम फांसी को । जल थल पताल स्वर्ग लोक लोक लोकन मैं आछी भांति भोगी है ने सुख चौरा सी को ॥ अब तू भ्रमै न चेत चित मैं आनन्द देस मान लौ प्रताप मेरी बातैं सुधासी को। रास के विलासी नव कुञ्ज के निवासी मन छोड़ दे उदासी भज वृंदावनवासी को ॥ २२८ ॥ कवित्त सिध्यान्तिका । धर तूं निरन्तर उर ध्यान श्याम सुन्दर को दूजो तजि आसरो अनन्य गहि भा व रे । दुख मैं न सोच करैं सुख मैं न हर्ष भरे चित्र वो विचित्र कर्म फल को सुभाव रे ॥ संद्ये प्रताप एक युगल चरनारविंद माया के झकोरन से न चित को डुलाव रे । एरे मन बावरे तूं सांवरे से नेह राख सदा रसिक भक्तन के सरणे रहु बावरे ॥ २२६ ॥ घोर अति दुस्तर भव साग

र को तरन हेतु मानुख सरीर पायो सुन्दर दृढ़ नाव रे। सन्त करण धार कृष्ण करुना अनुकूल पवन ,दुर्लभ संयोग ऐसो बन्यौहै बनाव रे ॥ पायो है प्रताप काहू पुन्य ते तू ऐसो जोग चूकै मति ऐसो फिरि पैहो नहि दाव रे। कहु रे निसिवासर तू राधा कृष्ण राधा कृष्ण सदा रसिक भक्तन के सरणे रहु बावरे ॥ २३० ॥ चन्द को चकोर चाहै मालती को मधुकर सखरेवा को गयंद चातिक घन को ज्यों ध्याव रे। रवि को ज्यों कमल चाहै इंदु को कुमुद जैसे मेघ को मयूर मीन जल से चित चाव रे ॥ तैसे प्रताप ह्वै अनन्य दृढ़ प्रीति करि वृंदावन चन्द्र से तूं चित कों लगाव रे। आवरे तूं सांवरे के चरन छत्र छांव रे सदा रसिक भक्तन के सरण रहु बावरे ॥ २३१ ॥ कौन जानै कब से पह्यौ है चौरासी मांह भोग रह्यो पाप अरु पुन्य के प्रभाव रे। स्वर्ग वो पताल अन्तरिच्छ सैल जल थल बन भूमि आयो लोक उपलोक सब ठांव रे ॥ नाना तन विविधि भांति करि आयो विषय भोग भई नाहिँ इन्द्रिन को तवऊ अघाव रे। अबहूं प्रताप त्यागि तृष्णा मन पांवरे तू सदा रसिक भक्तन के सरन रहु बावरे ॥ २३२ ॥ यमुना के तीर वो तमालन के नीचे जहां ललित कदम खंडी तहां भजन कुटी छाव रे। रसिकन को संग जहां प्रेम को तरंग उठै पुलकित ह्वै अङ्ग अङ्ग राधा राधा गाव रे ॥ निसै सतसंग को प्रभाव तूं प्रताप पैहै वृंदावन रज को

तजि कहूं ना तू धाव रे । प्यार करि कै सावरे तोहि गां वरे बसैहै निज सदा रसिक भक्तन के सरन रहु बावरे ॥ २३३ ॥ कर्म फल जाल यही जीव कों जंजाल भयो जामें फंसि पावत नही सुख को कहूं ठाव रे । फलही कों चाहि चाहि कूढ़ि कूढ़ि कर्म करत स्वर्ग नर्क भ्रमत यही पर्यो है सुभाव रे । माया को खेल नही देखत तू नैन खोजि गहिले प्रताप एक कृष्ण नाम नाव रे । हरनै चहै ताप और तरनै संसार चहै सदा रसिक भक्तन के सरन रहु बावरे ॥ २३४ ॥ मोर को मुकुट सिर लकुट लपटाय पाय ललित त्रभंग खड़े सहज स्वभाव रे । बड़े बड़े नैन अनियारे लगे कानन लौं झलकतकपोल तापर झुमक झकाव रे॥ ललित प्रताप त्यौं अलक लट आनि परे वारि दीजै कोटि काम सोभा तन सांवरे । यही छवि जन्तर लौं राखि उर अन्तर तूं सदा रसिक भक्तन के सरन रहु बावरे ॥ २३५॥ फीको जान ध्यान जोपै कृष्ण सों सनेह नहीं विद्या सो अविद्या जो पै कृष्ण मन भाव रे । चतुराई सींग पै अंगूठे पै वकताई सुन्दरताइ धूर जो न स्याम सुंदर ध्याव रे। उत्तम कुल छेरी की गरथनी प्रताप जान जो न भई कृष्ण चरन कमलन में चाव रे । कृष्ण में आसक्त अनुरक्तन को चरन सेव सदा रसिक भक्तन के सरन रहु बावरे ॥ २३६॥

ब्रह्मा हू भूल्यौ हर्यौ बालक अरु बछरा ब्रज थक्यो धाय धाय तब पर्यौ कृष्ण पाव रे । मोह बस इन्द्र भूल्यौ गर्व

अरु कोप करि साजि दल बादल कियो ब्रज पै चढ़ाव रे ॥ भूलि रहे पण्डित अरु मानिहूं भूलि रहे ऐसो दुरंत कृष्णा मायाको प्रभाव रे । दृढ़ करि उर सेव तूं प्रताप कृष्ण चरन कमल सदा रसिक भक्तनके सरन रहु बावरे २३७ ॥ कृष्ण बिमुख लोगन से संग मति करै भूलि कृष्ण मैं न भाव तासों राखै मति भाव रे । कृष्ण यश विहीन ग्रंथ ताकों मति कहै सुनै कृष्ण विमुख पंथ तामैं दीजिए न पाव रे ॥ प्रीति रस रीति कों प्रताप जो बढ़ायो चहै निश्चै करि जानि ले तूं और ना उपाव रे । और भांति कहूं प्रेम रस को न गन्ध पैहै सदा रसिक भक्तन के सरन रहु बावरे ॥ २३८॥ वृन्दावन विचरो अरु ब्रजरज लै सीस धरो आनन्द मै मग्न ह्वै गोविन्द गुन गावरे । भावरे अनन्य गहि नाम रट राधा राधा कृष्ण कृष्ण जप सब तृष्णा बुझाव रे ॥ चेरो है किशोर बल्लभ सदा राधा वल्लभ को जानि जन आपनों बसैहै निज गांव रे । एरे मन बावरे तूं गावरे गोविंद नाम सदा रसिक भक्तन के सरन रहु बावरे ॥ २३६ ॥ जाके सतसङ्ग ढंग कृष्ण प्रेम रङ्ग लगै जगै भाग आनँद अभंग उपजाव रे । झलकै हिय नैन स्यामा स्याम को निकुञ्ज धाम जगमग अभिराम विमल सोभा दरसाव रे ॥ संसय भ्रम जाल काल कर्म को जंजाल कटै मिटै सब द्वंद तीनौं तापन को ताव रे । सेव सो प्रताप सदा ह्वै कै आसक्त फिदा सदा रसिक भक्तनके सरन रहु बावरे २४०

ध्यानी नहि गन्ध पावै जोगी हू न सन्धि पावै भोगी सब ग्रन्थ धरै यही पन्थ नहीं पावरे। सेवड़ा उदासी य ती जंगम सन्यासी सब सोंह पर भूलि रहे भूलि रहे भा वरे॥ वेदहू न अन्त पावै नेति नेति नित्य गावै सारद ग- णेश सेस पावत नहि घाव रे। दुर्लभ प्रताप है सुवासना उपासना को सदा रसिक भक्तन के सरन रहु बावरे २४१

छार के लगाय कहा कंदरा में छाए कहा करै मति ऊर्द्ध बांहु जटा ना बढ़ाव रे। पहिरै मति सेली अरु सिंगी कों बजावै मति भांति भांति वसन कों भंगौहैं न रंगाव रे॥ चेत निज देस उपदेस है प्रताप यही जान्यौ चहै जो तूं अलख तत्व को प्रभाव रे। सब से निरवारि मन सहज स्वभाव गहु सदा रसिक भक्तन के सरन रहु बावरे॥ २४२॥ कोई कहै ग्रान कोई आपही भगवान बनै कोई कहै दूरि कोई नेरेही लखाव रे। कोई कहै रूप औ अरू पवान कोई कहै कोई कहैं निर्गुन कोई सगुन बताव रे॥ तामे मति भरमैं और भूलि के न वाद ठान तोहि क्या वि रानो पड़ो अपनी सुरझाव रे। अद्भुत प्रताप मूरि जीवन है रसिकन की सदा रसिक भक्तन के सरन रहु बावरे॥ २४३॥ कृष्ण नाम नाव गहु भव सागर पार ह्वै है एरे मन यही दृढ़ गहु तू स्वभाव रे। कृष्ण नाम छिनछिन जप उर मैं संभार निसिदिन प्रेम के उमंग मैं तू राधा राधा गाव रे॥ जो तूं किशोर वल्लभ वसिवो निकुञ्ज चाहैं और

ना उपाव चित चरन लगाव रे । यह सुख न पैहै तूं ठौर ठौर भरमे तें सदा रसिक भक्तन के सरन रहु बावरे २४४ रसिकन संग बैठ बोल रसिकनसो हृदय खोल रसिकन सो मिलने की राख सदा चावरे । रसिकन सो हावभाव रसिकन को सीस नाव रसिकन सों साचों नातो नेह तूं लगाव रे ॥ जौ तूं प्रताप प्रेम रस को रस चाहै तौ रसिकन सों रीति प्रीति प्रेम को बढ़ाव रे । रसिकन को जस गाव रसिकन को चरन ध्याव सदा रसिक भक्तन के सरन रहु बावरे ॥ २६५ ॥ नैन लाल बैन लाल अधर लाल बीरी लाल लाल लाल दसन हस नेह की लगन में । चीरा लाल बागा लाल जरी को इजार लाल कलँगी सिर पेंच लाल मानिक नगन में ॥ सेज लाल कुञ्ज लाल छत्र चौर व्यजन लाल सुखमा प्रताप लाल बसी है दगन में । बाली वी बुलाक लाल केसर की खौर लाल लाल लाल मेंहदी रची लाल के पगन में ॥ २४६ ॥ हरी बेलि हरी भूमि हरे द्रुम रहे झूमि हरीहरी कुञ्ज हरे बागन सघन में । हरे हरे बूंद हरे बादर बरसाय रहे हरी हरी जमुना लहराय रही तन में ॥ हरे छत्र हरे चौंर हरी हरी सखिया सब हरी हरी झलकै प्रताप हेरे मन में । हरे हरे फूल के सिङ्गार किय प्यारी पिय झूलें हिंडोर हरे हरे हरे बन में ॥२६७॥ लाल जी के बिवाह के समय के क० । धाय धाय नागरी नवेली आइ देखिबे कों आन के भवन

भई भौर दरसाने की । छदा पै छिति पै छदरे पै अरु छ-
ज्जन पै गोखन पै दर पै दरीचिन पै आन की ॥ आंगन मैं
आयो जा छिन वना वनवारी बनि निरखि प्रताप सुख सु
ख सरसाने की । चकी सी जकी सी कोउ लाग टकटकी
सी कोउ चित्र की लिखीसी भई नारि बरसाने की २३८
सांझ को समैरी आली बछरा हेरानो कान्ह ढूढ़न गई
हौं कुञ्ज बन लों तलक री । सघन हरियाली तामे लाल
की झलक देखी ऐंचत किशोरी जी कूं भुज गहि तनक
री ॥ चौप भरी छिपि कै प्रताप गई देखि हौं धरत दबा
य पाय पायल ठनक री । ऐसी हरि पाई जामैं कछू ना
दिखाई परी सुनि आइ सीसी किङ्किनी की झनक री ॥
२४९ ॥ सेवती चमेली वेली मालती नेवारी कुञ्ज खिलि
रहे फूल खिली चांदनी मैं चन्द की । नूपुर सितार बेनु
बांसुरी मृदङ्ग बाजै नाचत गोपाल तीर तनया कलिंद की।
नाचि रहे मोर चारो वोर से प्रताप देखो फूलन पर
नाचि रही अवली मलिंद की ॥ आगे गति नाचि रही ना
रि कुञ्ज केसर मैं वेसर मैं नाचि रही मूरति गोविंद की
॥ २५० ॥ बूटि रही बेनी चन्द्रबेली सी मृग नैनी हीर
की कनी सी खेद बुंद लसै गाधा । अलबेले लाल के त
नक रस मसकन मैं झिझकन सी करन दमक दामिनीन
आधा ॥ उचटि गिरी बेंदी भाल मालती की माल टूटी
छूटी कुच केसर प्रताप रस कि साधा । लयोपत्य अंक मा

ल मालती के सेज ऊपर सांवरे के गोद में विनोद करै राधा ॥ २५१ ॥ दोहा । बसो देस महबूब के मन प्रताप ठहराय । लगे पौन जा देस की कली कली खिल जाय ॥ २५२ ॥ सुघड़ कान्हा गरे लग अछन अछन कै । नूपुर रुन कै किङ्किनि झनकै बाजू बंद हार कर कङ्कन पायल बिछु वान ठनकै ॥ २५३ ॥ जागत हैं गुरु जन सब घर के ननद बैरिनि मेरी अनकै । हीं तो प्रताप भई अब तेरी मन वच क्रम तन मन कै ॥ २५४ ॥

कवित्त । चौरसु केशी सीस पायन में पायजेब छबि कटि मेखला की पीरे निचोलन पै । भौंहै कमान दन्त दाडिम अधर लाल कों ना बिकात बिन मोल मृदु बोलन पै ॥ स रस प्रताप रस वस मन मोहि जात वेसर हलन अरु कुंड ल के डोलन पै । बिम्ब की निकाई सब लागति अनोखी देखि आखैं सलोनी लठ लोनी कपोलन पै ॥ २५५ ॥

सवैया । मोर पखा सिर ऊपर राजत केसर खौरि दिए रचि भालहि । अंजन से दोउ रंजित कीने जु खंजन कांन से नैन विशालहि ॥ गोल कपोलन पै कल कुंडल रूप अनूप प्रताप रसालहि । रे मन मन्द अनन्द को कन्द तूं क्यों न भजै नदनंद गोपालहि ॥ २५६ ॥ बीच लता घन पर्वत ऊपर मन्दिर दूरहि सों दरसानो । दान औ मान विलास मढ़ी तहं मोर कुटी लखि नैन सेरानो ॥ बाग तड़ाग प्रताप बने जहं भौंर लौं लाल रहैं मेड़रानो । सांकरी

खोर मों कुहुकत मोर सो ठौर है लाड़िली को बरसानो ॥ २५७ ॥ प्रेमसागर के तारीफ में कवित्त । प्रेम को है खान औ निदान याको प्रेमही है कृष्ण को चरित्र वर सब गुन आगर है । रसिकन को नयन प्रान संत को जीवन धन प्रेमही सों पायो है ऐसो प्रेम डागर है । रसिकन कों अथाह अरु मूरख कों घोंट जल ऐसो प्रताप अद्भुत प्रेम रस गागर है । तारन भव सागर तिहूं लोक में उजागर यासों प्रीत करो नागर यह ग्रंथ प्रेमसागर है ॥ २५८ ॥

दोहा । दरस दिवाने ह्वै रहे सदा मिलन की चाह ।
बांह गहे की सुरति करि करियो नेह निबाह ॥ २५९ ॥
अरे कमल तूं छोड़ दे ओछो कछु स्वभाव ।
गोबरौंडे से नेह करि तूं भँवरा न रुठाव ॥ २६० ॥
समझि सोच जिय में मतो यह प्रताप उर धारि ।
मत बोवै विष की लता रस की ऊख उखारि ॥ २६१ ॥

॥ श्री वृन्दावनविहारिणौ विजयेते ॥



॥ अथ श्री वृन्दावनध्यानं लिख्यते ॥

———•••———

कर वृन्दावन ध्यान पियारे जहँ मन मोहन लोभाय रहे। कमल नयन ब्रजराज सांवरे कुंजन बंसी बजाय रहे॥ सुनो नाम अब उन वृक्षों के जो कुञ्जन में छाय रहे। कैला कैत करील करौंदा कटहर कदम्ब कटाय कहे॥ हर बड़हर कचनार बहेरा कमरख छौकर कौन गनै। आम आमड़ा आमल की अमरूद वेर के पेड़ घनै॥ अरनी असना अशोक सीसम सिरिस लसोडा बांस लसे। ताल तमाल सोल सेमर धौ देवदारु गनिआरग से॥ खजुर खदिर पीपर पाकर वट पदुम पापरी अति सोहै। गुलर गोंदी गम्भार सहिजन पाडर पियाल मन मोहै॥ कर वृन्दावन ध्यान० पीलु पलास पिंडार उदुम्बर भोजपत्र भल्लात भुके। इमली इमिलतास तिंदुक मधु बहनामिली साग बनरूके॥ श्रीफल अरु नरिअर नारंगी फल सहतूत फालसे के। नेवु निमु जम्बु जम्बीरि धवइ खिरनी नभछे के॥ वंजुलवन अनार सफतालू निसिपाति वो जायफल के। अगर नाग पुन्नाग सोपारी लवँग लाइची तहं झलके॥ मौरसली चंदन बदाम अंजीर और विद्रुम झलके। वृन्दावन की छवि निरखन को रैन दिना अँखिया ललके॥ कर वृन्दावन ध्यान० ॥ १ ॥ सुनो नाम अब उन फूलों के जो कुञ्जन में फ

लि रहे । तुलसी पारिजात नाना रंग भँवर फूल पर भू लि रहे ॥ कमल दल कमल गुलाब बेला सुघर सेवती सौ न जुही । जाही जुही चमेली चम्पा ललित माधवी मोहि रही ॥ देखि सुगन्ध राज वावुना नरसिज मनहीं कचोटि रहे । फूलि रही मालती नेवारी भवरा जिन पर लोटि रहे ॥ हारसिंगार वो दूप मञ्जरी रायबेली तहँ महकि रहे । नागेसर केसर लवंग पर रँग रँग बुल बुल चहकि रहे ॥ कर वृन्दावन ध्यान० ॥ सुरज सुखी सनौवर सौसन रौसन पर जहां सरौ लगे । कुसुम दूस्क पेचान फरमाम सुआ मदनवान कलगे ॥ गुल चांदनि गुलचीन हजारा गु ल मखमल गुलबांस लये । गुलसवो गेंदा गुलतुर्रा गुल्लाला गुलनार नये ॥ अपराजित करना कनदूल केवला केतकी सब महंकै । गुलदावदी कुन्द गुल असरफियिया वांस द- वना लहकै ॥ गुलमेंहदी गुड़हर गुलमुनिया गुलखैरू से अगस्त मिले । हरि मालती मोगरा मोतिया दोपहरीया न डरि खिले ॥ गुलनसरी नस्तरयासमन अगरवांन संबुल फूले । कोरे हरे लाल पीरे सब रंग रङ्ग के गुल फूले ॥ कर वृन्दाबन ध्यान० ॥ सुनो नाम अब उन पंछिन के जो श्रीवन में बोलि रहे । लड़त उड़त नाचत किलकारत जल थल बीच कलोलि रहे ॥ मोर महोख मखानी मुनिया भांति भांति मैना चहकै । सुरग सुद्दिल मलेक झुण्ड सब द्रुमन बैठि मधुआ कुहुकै ॥ चातक चटक चकोर चक्रवत

चक्रवाक की धुनि लहिकै। चीलह चर्च चंडुल चुडुक्का चोंचा अरु चाहा चहकै। क्रौंच कुलंक कि.लकिला कोयल कुही कर्म करछा सोहै॥ करवानक कोकिला कबूतर दीपक लाट कुञ्ज भोहैं। हंस हारियल हुमा हरेवा राजहंस झद झद झलकै॥ तीतर तुति तेलवुकि अरु धनेस धौरेखा किलकै। कर वृन्दावन ध्यान०॥ सारस सुगा सोम पंडुक अरु सामा सिकरा संखारी। सिलही सुपा वेनिसिरियल अरु रूप सांवरी की न्यारी॥ बाज बटेर बगेरी बुलबुल बान बैज लावा साहै। बगवध बोदर वेसरा बगुला वहरी करत तमासा है॥ द्रुमन पपीहा पिहकि रहे सब पिहुआ पवइ कलोलैं। पियरोला पियरोइ पिकच्छा पतरेगा पंडुक बोलैं॥ नीलकण्ठ भृङ्गराज भुजंगा अरुनदी मन कलोल घने। दाविल दोलघ दहियल दिघवछ लगड़ लाल सर गरुड़ गने॥ लउ माहर बोविल घोघर गैवर लव करी ठठोर कहे। दुन्नाटिकवा अगिन टिटोरी आंजन अवलख पौरि रहे॥ जांघिल खैर जुराफा जुर्री जल कुकुट जल सैन तरैं। खंजरीट खंजन आदिक सब विविधि पखेरू केलि करैं॥ २॥ कर वृन्दावन ध्यान०॥ सुनो नाम अब उन भक्तों के जो श्री बन को ध्याय रहे। शिव ब्रह्मा सनकादिक नारद गर्गौतम शाण्डिल्य कहे॥ निम्बारक मध्वाचार्य अरु विष्णुस्वामि वल्लभ कुल जे। नित्यानंद कृष्ण चैतन प्रभु हरि व्यास शुकदेव जिते॥ रूप सनातन नारा

यन भट श्रीभट हित हरिवंस भये । श्री जयदेव विपुल वि ट्ठल अरु केशव भट भगवंत नये ॥ उद्धव सूरदास परमा नँद नंददास जसवंत सुनो । वर्द्धमान गंगल काशीश्वर नर सी श्री हरिदास गुनो ॥ कर वृंदावन ध्यान० ॥ सूर मदन मोहन विल्व मंगल लोकनाथ भगवान अली । गोपीकरमै ती रतनावलि मीरालाल मती सकली ॥ कृष्णदास रस खान नाथ भट चतुरदास भूर्ग भले । भट्ट गोपाल गदाधर बल्लभ रसिक प्रबोधानंद मिले ॥ जीवस्वामि मधुकृष्णदास जी गिरधर ग्वाल कल्यान हिये । व्यासदास हरिदास आ दि ध्रुव इन रसिकन रस पान किये ॥ करवृंदावन ध्यान० सुनो नाम अब उन तिरथों के पाप कटै जिनके दरसै । कर्मकाल जंजाल मिटै सब आवागवन नहीं परसै ॥ पुष्कर राज प्रयाग गया काशी अरु कुरुक्षेत्र ऐसे । हरिद्वार उज्जै न नर्मदा गङ्गासागर गति तैसे ॥ गङ्गोत्तरी गोमती गङ्गा गराडक सप्तवाहिनी के । मानसरोवर निमुषार अरु ब्रह्मा वर्त्त भावजी के ॥ सरजु चन्द्रभागा तुंगभद्रा तामर परनी पयस्विनी । देव प्रयाग वेन कावेरी तापी पुन्य स्वरूपवनी ॥ वद्रिनाथ केदार द्वारिका जगन्नाथ से धाम बने । मुक्तिना य कहि रङ्गनाथ अरु रामनाथ छवि अवध घने ॥ पंछि तीर्थ लछुमन बाला हरि हरिक्षेत्र भ्रगुक्षेत्र कहे । लोहा गिरि गिरनार आदि सब नाना तीरथ धाम लहे ॥ करि करि सकल धाम तीरथ नर पुर वैकुराठ स्वर्ग जावैं । कहै

प्रताप श्री वृन्दावन की छवि आनंद न कहुं पावैं ॥ १ ॥
कर वृन्दावन ध्यान सखी री जहं मनमोहन लुभाय रहे ॥
॥ इति श्री वृंदावनध्यानलावनी संपूर्णा: ॥

राग दीपक चौताला ॥

यह सांवरो सलोनो मोसो नैनलगावै। हंसि हंसि हेरी हियरो चोरावै। घुमरी घुमरि जहां तहां हेरि फेरि संग आवै। भेद न प्रताप प्रभु जियहु को बतावै ॥ २ ॥

राग रामकली ख्याल तिताला ॥ अलख अबिनासी ध्यावो ज्यासों पावो पद निरवान जगत में। रूप रेख गुन बरन न जाको पूरन व्यापक जान ॥ अलख अबिनासी० ॥ ऊधो गोपिन को समुझावत ब्रह्म निरूपन ग्यान। समुझि प्रताप जगत सब मिथ्या ताते कछू न आन ॥ ३ ॥

राग भैरव ध्रुपद चौताला ॥ भोरे जगेरी अलकड़ी लाल कुञ्ज भवन बैठे सेज अलसात। अङ्ग ऐड़ाय दोउ जँभात बिथुरी अलक सिथिल गात पलक झपकि उझकि उझकि जात ॥ नौसर सों अलक जाल बेसर सों बनमाल अरझि रहे लाड़िली लाल भौंर मैंड़रात। केलि रस प्रताप पगे सुरति रँगन अँगन रंगे सारी रैन दोऊ जगे सोए नहीं रात ॥ ४ ॥ जोड़ा ॥ प्रात समै कुञ्ज महल ललितादि सखी सब उमँग भरी प्यारी अरु पियहि जगावत। कोउ उपङ्ग कोउ मुहचङ्ग कोउ बीन कोउ मृदङ्ग कोउ बेनु सुर ने सङ्ग बजावत ॥ डोलत त्रिविधि गति समीर प

ढ़त कुंजन सारिका कीर भँवर गुंजार मानो मधुरन गा- वत । दोउ प्रताप जीवन प्रान पौढ़े एक पट लपटाने वदन कोटि सरद चन्द लजावत ॥ प्रात समै कुञ्ज महल० ॥५॥

राग भैरवी ध्रुपद चौताला ॥ राधे रामा विश्व जोति कमलासन इंदुवदन । कैसौं कमलानिवास देव कृष्ण क मल नैन ॥ कृष्ण प्रिया कृष्ण मैइ माधवि पच्छिधर मदन मोहन बंसीधर बासुदेव विश्व ग्रैन । चन्द्रावली चन्द्रमुखी स्यामा ब्रहंस गमन ॥ रास रसिक श्री गोपाल गोकुल पति कुञ्ज सैन । भानुसुता नंद सुवन राधा माधो कुञ्ज राधे राधे रट प्रताप चाहत जो अचल चैन ॥ राधे रामा विश्व जोति कमला सन इंदु वदन ॥ ६ ॥

ठुमरी भैरवी का ॥ सांवरे कन्हैया ने जगाए सारी रैन । आपु जगे वांके सभही जगाए आलस भरि रही नैन ७ ॥

राग सिंधु ख्याल तिताला ॥ बांसुरिया बाजी कैसि करी हो सांवरिआ ने बजाइ । बंसि प्रताप सुनी जब से भई विरह कहर दरिआव ॥ तनमन की कछु सुधि न रही रे जियरा डुबि डुबि जाइ ॥ हो बांसुरिया बाजी कैसि ॥ दोहा । नैनन लागी टक टकी और यक बकी अङ्ग । परि गइ प्रेम समुद्र में लेती फिरति तरङ्ग ॥ ८ ॥

राग सिंधु झिंझौटी ख्याल तिताला ॥ बन बन सब डोले हरि दरसन की प्यासी । फिरति विकल पूछति द्रुम वेलिन गोपी निपट उदासी ॥ छूटे केश टुटे मोतिन लर

माती विरहविथासी । स्याम स्याम टेरति बन कुञ्जन नैनन्ह झरत झरना सी । आय प्रताप मिले गोपिन सों मोहन रास बिलासी ॥ ८ ॥ राग सिन्धु टप्पा तिताला ॥

सांवला तेरे दरस की रे लागि रही जिया आस । बुझ त प्रताप न तुम्ह दरसन बिन इन अंखियन की प्यास ॥१०॥

राग सिंधु झिंझौटी ख्याल तिताला ॥ बनवारी प्यारी वेनु बजाये गयो रे सखि हेरी न जानैं कित कुञ्जन मैं । बनवारी० ॥ आधी रैन टेरी बांसुरीया तान विरहिया गा गयो रे सखि० । जादू करि गयो टोना पढ़ि गयो सोवत मदन जगाय गयो रे सखि० ॥ अब प्रताप को मन सुरझा वै मनमोहन उरझाय गयो रे ॥ १० ॥ राग सिंधु ख्याल तिताला ॥ कान्ह तोसे लागी आंखड़िया । गौवन रङ्ग बन बन मति डोले रहे फूलोंही सेजड़ियां । कान्ह तोसो० ॥ दरसन बिन नैना तपि जाते देखे बिन तोको मनमोहन जुग सम पल घड़ियां ॥ कान्ह तोसो० ॥ अरज मेरी मान ले प्यारे मै प्रताप तोपै करोंगी निछावर गज मोतिन ल ड़ियां ॥ कान्ह तोसो लागी आंखड़ियां ॥ ११ ॥ जोड़ा । तनक सी बांस की वंसी । तीन लोक अग जग सब मोहे प्यारी न जानै यह है कैसी ॥ तनक० ॥ भनक सुनि शिव की सुधि भूली वशी करन नहिं तंत्र जंत्र नहि मो मंत्र कैसी । तनक सी० ॥ मौन रहो है जैसी तैसी योकी गति प्रताप को जाने वहि जाने जैसी ॥ तनक सी० ॥ १३ ॥

राग भिंझौटी के जगला माझ तिलाता ॥ व्यारू करत किशोर किशोरी । विविधि प्रकार दूज के व्यंजन मधु मोदक मिश्री घृत बोरी । आलस जुत करि कवर उठावत पलक झपक झुकि आवत थोरी ॥ निरखि प्रताप अली यह चातुर कवर कवर बिनवत दुहु ओरी ॥ १४ ॥

राग भिंझौटी ख्याल तिताला । अचवन करत नवल पिय प्यारी । दुहु दिसि सखि देखत जमुना जल लिये कंचन की झारी ॥ अचवन करे करकमल अंगौछि बिरि दैह ललिता ने सँवारी । दोउ प्रताप अति रस आलस भरि शैन सेज पगुधारी ॥ १५ ॥ राग गंधार ख्याल तिताला ॥ अँड़ोरी ठाढ़ो मदनमोहन । रोके गैल सखी री पनिघट पर नटवर बनि ठनि अलबेली छैल । काहू की गहत लट काहू भर ऐक नट करत निपट नौखे फैल ॥ चलीं सब लै लै घट सखियां जमुन तट व्रज जुवतिन की लागी तहं रैल । सुनि वृषभान लली सजि कै प्रताप चली संचि पनिघट पर सैल ॥ अँड़ोरी ठाढ़ो मदन मोहन ॥ १६ ॥ रंगीले कान्हा केहि संग जागे सारी रैन । किन दोऊ नैना रंगे अधर अंजन रंगे कहत चुकाहे नहि बैन । रंगी० राति के उनींदे जगे चलत पग डगमगे सेज लौ पधारिये की जीवलि सैन ॥ सुखमा प्रताप लखे हृदय सिराने देखे सुफल भये जु मेरे नैन ॥ रंगीले कान्हा० ॥ १७ ॥ राग बिलावल ध्रुपद चौताला ॥ री आली नंद को कु

मार निरखत रोम रोम छवि अपार खटकिलि वाकी चल
नि। बड़े बड़े नैनन सों हेरन हसन आनँद गसन मन फ
सन वंक अलक लसन विमल गोल कपोल कुंडल हलन।
मुकुट लटक तिलक भाल लट विकट गुञ्जमाल लट वीटंक
गुञ्जमाल मुरली अधर धरे विष की लोनाइ लोने विधना
वनाइ वह सांवरी मुरति पाइ रे प्रताप पुरे पुन्य फलन॥
री आली नंद को कुमार निरखत रोम० ॥ १८। जोड़ा॥
ये राधे धन्य तेरो रूप धन्य तू धन्य भाग धन्य सोहाग
धन्य धन्य कृष्ण रमनी। मोहरछदन छवि मोहनमदन आ
नँद सदन पीक नदन इंदु कला रदन सरद चंद व्रदन तुङ्ग
गज गमनी॥ विविधि रास रस विलास विदित जासु जस
प्रकाश रास विलासिनी उपमा प्रताप तिहुंलोक में अघट
तेरी तोसी तुही एक रती सची रम्भ रमा दर्प दमन ये
राधे॥ १६॥ राग टोड़ी ध्रुपद चौताला॥ सांवरिआ
आप तोहे बावरी मनावत हाहा प्यारी तू मान। चुकव
कस तू मान गही प्रताप ठनगन छोड़ दे बैठी कहा भौहैं
तान॥ सांवरिआ आप तोहे बावरी मनावत० ॥ २०॥
राग काफी ख्याल तिताला॥ अब मोहि सोचि सोचि दि
न रैन कटत। नैनन नीर ढरत दोऊ छिन छिन नेह नदी
नहि नेक घटत। जहां जहां विहरत रहे मोहन तहां तहां
लखि हियरा फटत॥ धरि तुव ध्यान कदम के नीचे तेरी
मूरति अंकम लै जटत॥ अब०॥ तुम विन प्रान विकल है

तन में नीर बिना जैसे मीन लटत। सो गति भई है प्रताप मोहन बिन जैसे पपीहा पिउ पिउ पी रटत ॥ १२ ॥

राग सारङ्ग ख्याल तिताला ॥ शिंग बन वेनु बाजत आवे कन्हइआ हो। ग्वाल बाल संग निरतत आवे उघटत आवे ताथइया हो ॥ गोपी ग्वाल प्रताप उडत आवे रामति आवे धेनु गैया हो ॥ शिंग बन वेनु बाजत० ॥ २२ ॥

राग गौरी बिहाग ख्याल तिताला ॥ मदन मोहन नाचत गति छुम छुम। पायल पैजनि बाजत झम झम। निरतत प्रताप गति लेत संगि तजत उघटत ताथेइ ताथेइ ताथेइ थेइ ॥ मदन मोहन नाचति गति छुम छुम ॥ २३ ॥

राग धनासरी ख्याल तिताला० ॥ रे छैला गलिअन माड़े नित आवदा। शिर सोसनि जरीदा चिरा मधुरिसि वेनु वजावदा ॥ नैन सलोनी हरूलोनी मुखड़ा नैनो दिल उलझावदा। नित प्रताप यह रंग रंगीलो छैल छबीलो मनभावदा। रे छैला गलियन माड़े नित० ॥२४॥ जोड़ा।

ए राधे कब से निठुर भई तूं री। छिनही में पिय प्रान धनी से लेति तू भौंह मरोरी ॥ एराधे० ॥ कोउ प्रताप केहि विधि समझावे तू नागरि गुन पूरी ॥ एराधे० ॥२५॥

राग मुलतानी ध्रुपद चौताला ॥ लगन अब लगि सजनी अखियन पहिचानि तेहारि मे मदन मोहन बनवारी से तेरे नैइ। मदन मगन रङ्गन रंगे हिरने सुनि और कहि मन मानि तो प्रताप ऐसे ॥ लगन० ॥ २६ ॥

राग सुलतान ध्रुपद चौताला ॥ प्यारी कैसी लसी लि
पिटि छतिश्रन लिपटाने विहारी जू की फूले री कुञ्जन
तीर जमुना फूलन सेज । अंगन अङ्गन भुजन कसि विथु-
री अलक आए पड़ी अलवेलो के प्रताप ऐस ॥ प्या० २७

राग पीलू झिंझौटी ख्याल तिताला ॥ नहि विसरत छ
वि नागर नट की । बांकि चलन चितवन वह बांकी अलवे-
ली छवि मोर मुकुट की ॥ वह मुरली वह कनक लकुट छ
वि वह काछनि कठि पीरे पट की । वह राधा सँग ललि
ता विसाखा रास सभा वह बंसी बट की ॥ वह रस रास
केलि वृंदावन सरद रैन कालिंदी तट की । सुमिरि सुमि
रि वह छवि प्रताप अब सब गति मति चरनन से अटकी ॥
नहि बिसरे छवि नागर नट की ॥ २८ ॥

राग पीलू एकताला खेमटा ॥ निपटै कठोर कन्हैश्रा क
भुना मोसे बोलै हो । मिलै अचानक आय बंसुरिश्रा बजा
वै हो ॥ जादू सी करि जाय जिअहि तरसावै हो । नि० ।
मैं करि थकी उपाय हियनम्हिहि तबै हो ॥ भुलिउ नज
रिश्रा उठाय तनिक नहि चितवै हो । निपटै० ॥ बिन देखे
मनमोहन जियरा न मानै हो ॥ उनके चित की बात वि
धाता जानै हो । नपिटै० ॥ कठिन विरह की सल मनही
मन सहिये हो । एक अङ्गी भइ प्रीति दरद कासों कहिये
हो ॥ निपटै०॥ अब गति हाथ प्रताप है नागरनट के हो ।
चलै नही बस जासों नयन तहां अटके हो ॥ नि० ॥ २६ ॥

राग पीलू ख्याल तिताला ॥ सखि नटवर कछु टोना जाने । चितवन हँसन चलन मैं बस कियो करत सोइ जोइ जोइ मन माने ॥ जमुना कूदि काली गहि लायो राखि लियो गिरि कर पर आने । पी गयो जलत ज्वाल दावानल बिधिहू की गति मति जु हिराने । कवि प्रताप जाके रोम रोम पर कोटि काम बिनु दाम बिकाने ॥ स० ॥३०॥

राग पीलू जगला ख्याल तिताला ॥ ऊधो हम ब्रजबासी लोग । ब्रजबासिन की रीति न जानी ताते लायो जोग । ऊधो० ॥ दुख सुख अबहि तुमें नहि व्यापी हरि सों जोग वियोग । ऊधो० ॥ प्रबल प्रताप अङ्क विधना को बिछुड़न मिलन सँजोग ॥ ३१ ॥ राग बरवा पीलू ठुमरी तिताला ॥ सांवरे को बँसुरिया भई प्यारी । अधरन से कै हृदय कमल से रे होति नही छिन न्यारी ॥ रङ्ग रङ्गीली अति गुन गरसीली मीठी तानन वारी । कौन प्रताप करै सरया कौरे पटतर को नहि नारी ॥ सांवरे को बसुरिया० ॥३२॥

राग पीलू ख्याल तिताला ॥ सांवरे ने बजाई बसुरिया । जादु भरी यह बांस की बंसी तीन लोक पर छाई । टेरि सुनत सब सुर नर मुनि मोहे सिव समाध उचटाई । छकित प्रताप चकित चतुरानन अद्भुत रस बरसाई ॥ ३३ ॥

राग सहाना देवगिरी ख्याल पटताल ॥ ऐसे बने पर प्रान न वारे । एक अनिआरे दूजे चंचल अंखिया तीजे अंजन सारे ॥ विमल कमल मुख चंद लजावत कुंडल डोलत ल

लित कपोल सुढारे ॥ बरसाने की रँगीली नारी परसत सुरछत वारे । नंद सुवन की लेति बलैया छवि प्रताप जा के तीन लोक उँजियार ॥ ऐसे बने पर प्रान न० ॥ ३४ ॥

मालवा ख्याल तिताला ॥ मदन मोहन नाचत गति छम छम। पायल पैजनि झननननननन बाजत झमझमझमझम। चलत प्रताप गति लटकि संगीत गति उघटत थेइ ताथेइ ताथेइ ताथेइ ताथेइ थेइ चम चम ॥ मदनमोहन ॥ ३५ ॥

राग पुरबी ख्याल तिताला ॥ समन सांवल कुअरि राधिका झूलत सखि इन्दावन मैं । सखि फहरात जु नील पीत पट सुन्दर स्याम उड़त तन मैं ॥ मनहुं लसत घन घेरि दामिनी झलकत इंदु नील घन मैं । मोर मुकुट मोहन सिर सोहै प्रिया माल मुकुता गन मैं ॥ इन्द्र धनुष अरु वग पंगति की छीनि लई छवि सा दिन मैं । अद्भुत गरुड़ स्याम तन सुषमा झलकि रही बन बागनि मैं । मुरज मृदङ्ग बीन बंसी की धुनि प्रताप छाई कुञ्जन मैं ॥ ३६ ॥

जोड़ा । उमड़ि घुमड़ि जमुनातट वोनये स्याम घटा की पांति रे । सावन की हरियारी जैसे कुञ्ज लतन की कान्ति रे ॥ रिमकि भिमकि बरसत नाहुनी वंदिग्रन मोर कुहु के बहु भांति रे । बन सोभा निरखत दोउ ठाढ़े रतन जटित विसराति रे ॥ पुलकि प्रताप मगन रस उमगे आनँद उर न समातरे ॥३७॥ राग शुद्धकल्याण ध्रुपद चौताला ॥ प्यारी मुरली अधरन पै धारि कान्हइया ने बजाइ । घ

कित भयो उडुपति रथ नभ प्रताप ऐसो सुर छाइ ॥ प्यारी मुरली० ॥ ३८ ॥ जोड़ा । प्यारी अलकै सुतिअन सों गूथी कन्हाई सांवरी । गगन विच उडुगन झलकत प्रताप मानो निसिकारी ॥ प्यारी अलकैं सुतिअन सों गूथी० ॥ ३६ ॥

राग हमीर ध्रुपद चौताला ॥ गगन घन मंडि तरुन तमाल स्याम घन रस बस दोउ जमुनातट वृंदावन री गजगामिनी । सुही सेज हिलि मिलि कै रस राति कि लुठि चलियौ प्रताप समोहन जनु दमक दामिनी ॥ गगन० ४०

राग केदारा ध्रुपद चौताला । राधा वदन चन्द्र उपर वारैरि अमिति कला सरद चन्द्र सहज प्रकाश रूप रास लसत देखो सखि । रौद्र गन उपर कंज सारस मृग मीन खंज वद्दरज सिर चन्द्रिका जगजगात वांकि हसन दसन कुसुम कुन्द इंदु लखौ सखि ॥ हारवार उरझे अंग सिथिल कंकन कनक कर सोहै नासा मोति मन मोह झलक वुंद सेत वदन रासव्यमो तपित भगति जो चकोर चितवत चंद वार रहे इक टक माधुरी लुभान छवि प्रताप होत चित्त भए चतुर स्नम प्यारी हसत देखौ सखि ॥ ४१ ॥

जोड़ा । लाल कुञ्जनरास खेले उमिरि लटकि लटकि गते लेत धरै अधर मुरलि उवटत तायेइ । जोरी भुजन गौर स्याम विच विच गोपी कान्ह छवि देखि दुति दामिनि लजानि गति संगीत भेद न चंद वदन व्रज की वाम संग नचत तातायेइ ॥ हाव भाव करि कटाच्छ कलित कुण्डल कु

न्तल मुखराज बिथुरि बनि लटछाजैत करुकि मसकि रसि क लाल अंक भरतर जोवत न सरद चंद प्रफुलित कनक मदन गहरन मदू भूमिका जगमगात मिलि प्रताप गावत धाधिलंग धामदंग बिन वजत तातायेइ ॥ लाल० ॥ ६२ ॥

राग छायानट ख्याल तिताला। प्यारो सांवला कदंब तले जमुना के तीर तोषे चोखे मीठे सुरन बजावै सखि वेनु। लकुट प्रताप लिये कुण्डल डारे कान कसे कटि पट पीतहो कारी काजर घुमर टेरत चरावै छैला धेनु ॥ ४३॥

जोड़ा तिलाना का। तनदिरना तदारेदानि तारेदानि दिमतनधृत मततोमरदानि तादीरदानि दिम। तदरे तारे रा तदारे तारेदानि तनदीर दीना तदिम तुरुधृतुमत तोमरदानि तादिरदानि दिम ॥ तन दिरना तदारे० ॥ ६४ ॥

राग छायानट ख्याल तिताला। काली के फनन पर जमुना के बीच नाचै ताधेइ तातायेई थेइतता। सुमन प्रताप भारै मृदङ्ग बाजै नमधता ततकिट धुमकिट धाक डांकिटनकतिग धाधाकिट थुंकटतकधैलागनकधा ॥ काली० ४५

राग ईमन ख्याल तिताला। ना सुनोगी सांवरे की बँसुरिया। जादू भरी कै तंच भरीरे धुनि सुनि लरजत प्रान। कै बिष कै मद कैधों अमी रे कैधों मदन के वान ॥ ना० जड़ चेतन चेतन जड़ कीनी दसा भई कछु आन। चुभि चुभि निसरव वेधित हो मैं कैसी दई यह तान ॥ सो बन मंदिर रहौंगी ब्रज मैं सोई चतुर सुजान। और उपाव प्रताप नही कछु मेरी कही तू मान ॥ ना सुनोगी० ॥ ४६॥

राग ईमन ख्याल तिताला। घोर यह संसार सागर निप
ट अगम अपार रे। अहम मम दोउ कूल तृष्णा नीर द्वंद
के धार रे॥ शोक मोह विषाद ईर्षा अति प्रचण्ड बयारि
रे। घोर०॥ जन्म मरण तरङ्ग लहरी मोह मद घरिआर
रे॥ मगर मच्छ अनेक जामें असत संग विचार रे। घोर०
नाव नर तन कृष्ण करुना करि प्रताप निहार रे। सोई
वेड़ा पार है जेहि गुरू खेवन हार रे॥ घोर यह०॥ ४७॥
राग दरबारी कान्हरा ध्रुपद चौताला। उघटत गति सु
घंग डोलै कपोलन पै वंक लटै झिली कुण्डल झलकत।
नैन कमल सिर सज्यौ है मुकुट मोर लघुताइ गतिताइ
दोउ पगन भूमि परत नहिं जानत॥ उघटत०। झटकि
पटकि पद खलकि तुरप लेत मुसुकात चितै अनियार वांके
हगन। कटि मचकि लचकाय करि प्रताप भ्रू विलास चतु
राइ वो सुघराइ अति तीक्षण भाव नये नयेन आनत॥ उ
घटत गति सुघंग डोलै०॥ ४८॥ राग सहाना कान्हरा
ख्याल तिताला॥ लाड़िली भूलि न गहिये पिय सों मार।
कान्हर को कहा तू नहिं जानति युवतिन के चित चोर॥
हँसि मिलिये अब चुक बकसीये यह प्रताप की गोर। तू
प्रफुलित नित कवल मालती वे बन बन के भौंर॥ ४९॥
राग अड़ाना कान्हरा ख्याल तिताला। तेरे आगे लाल
एरी राधा कर जोरेरी कब के ठाढ़े। कब से तूं हाहा
दई भई ऐसी निरदई दई के निहोरे नेक हियरे लगाले

गाढ़े ॥ तेरे आगे लाल० ॥ ५० ॥ राग अड़ाना कान्हरा ख्याल तिताला । हारी रे मनाय कन्हैया प्यारी तेरी ऐसी ठानि । सुनि अनसुनि भई मानी नही बतियां बिनये प्रताप के धनुष सी भौंहे तानि ॥ हारी रे मनाय० ॥ ५१ ॥ राग अड़ाना कान्हरा ख्याल तिताला । लाई रे मनाइ सं वलिया आज राज हरवा पोउ । गरवा लगाइ राखो माल सी तूँ बनमाली प्यारे प्रताप के हो तो अब घरवा जाउ ॥ लाई रे० ॥५२॥ राग अड़ाना कान्हरा ख्याल तिताला । गरवा छाड़ि दै हो राज । मै तू पैया परो एहो राज । विनय प्रताप हमारी हरी हठ न करो तुम प्यारे ॥ गरवा० ॥ ५३ ॥ राग अड़ाना कान्हरा ख्याल तिताला । लाल अब जो गारी दैहो एक को दस पैहो । लाल० ॥ तुम बड़े प्रताप अनोखे हम बड़े महर की जाई ॥ ५४ ॥ राग आड़ाना कान्हरा ख्याल तिताला । जा री चली मैं अब हसन खेलन को न टूट गई अब वे बतियां । देखि चुको मैं अखियन अपने आज अली रिस बहुरि किये बतियां ॥ मोहन के गुन चित में गुनि गुनि भरि भरि आवत री बतियां । अब उनसे न मिलौंगी सपने ल्यावे प्रताप जो लाखन हूं पतियां ॥ जारी चली मैं हसन खेलन० ॥५५॥ राग अड़ाना कान्हरा ख्याल तिताला । प्यारी तेरी सौं हरि विकल न कहु डोलत कुञ्जन अंसुवा ढरि रहियां । कहुं मुरली कहुं मुकुट पीतपट राधे राधे रट रसना रट

रहियां । विकल भई सुनि पिय की गति गुनि चलि अली संग सुखमा झड़ रहियां ॥ ललित निकुञ्ज प्रताप मिले दोउ लाय लई उर पिय को गल बँहियां । प्यारी० ॥५६ ॥ राग अड़ाना कान्हरा ख्याल तिताला । स्याम मनावे प री पाय तजो हठ हाहा अरज मेरी मानु अलख लड़ी । छिनही छिन रूठति बिन कारन चन्द्र वदन पर वारी न प्रताप जाऊ ऐसी यह प्यारी तेरी कवन प्रकृत पडी ॥ स्याम मनावे० ॥ ५७ ॥ राग अड़ाना कान्हरा ख्याल तिताला । मुख झलकै जैसे चन्द गोल कपोल पर बिथुरि रही । अलकैं कलित ललित दुति दोउ कानन विच मनि कुण्डल लहकै ॥ री कैसे मुख झलकै ॥ बड़े बड़े दोउ नैन अञ्जन सर मैन देखि कै दृग ललकै । लखि प्रताप मुख राधा मोहन के पड़त नाहिन पलकै ॥ मुख झलकै जैसे चंद० ॥ ५८ ॥ राग अड़ाना खयाल तिताला । वरन ताल की आली । अलकान सांवला नू नैनो दीरे उलझादा नेह डा दिल मैं नू तू सोनाले अलवेली चालां चलदाक्य । ढंग सो रङ्ग चङ्ग यारंग साडे दिरनदिन्न तारे तादारे तनदिर तनादिरनतारे तनदिरना तनन्नदिर तारे तादनिरे तारे दानिरे तारे तननतनादिर तदेरना ॥ अलकान० । तारे दानीदेरा तनादिर देरा दिरनतन दिरत दरेना रे दानी तना तनादिरना दिन्न तदिन्ना तनन्नरे तनन ॥ अलकान० ॥ सानुही दीनुवेरी तनात दिन्नरेता दिरनतना

दनिता रेतदिरना दिन्न दिरन्ना दिरन्नरे दिरन । अल० ॥ सुघड़ां नंदें ढाडंक सुख वेन वजादा चंगे प्यारा प्रताप मांडा दिरन दिन्नतारेतदारे तनदिरतनादिरन तारे तन दीरना तनन्नदिरतारेता दनिरे तारे दानिरे तारे तनन तनादिरतदेरना ॥ अलकन० ॥ ५८ ॥ ध्यान के पद ।

राग अड़ाना कान्हरा ध्रुपद तिताला । निरख सखि आज ब्रजराज की छबि बनी । अतिहि रमनीय कमनीय सुखमा धनी । चरन मञ्जीर जञ्जीर जन प्रेम की रवत मिलि रास मधि मधुर अति कलधनी ॥ ललित जुग जंघ सुनितंब छवि केहरी कसे कटि छयल नट पीतपट काछनी । स्वच्छ अति वच्छ पर लच्छ लज्जित मदन नाभि रस ताल सोहै जाल कटि किंकिनी ॥ ललित बनमाल अरु माल मोतीन की मनि गुलुवंदवर लाल मानिक मनी । कनक कुण्डल कलित गंड मण्डित ललित विंदु श्रम दमक जनु चमक हीरा कनी ॥ अलक की झलक पर पड़त नहिं पलक सखि पर्यो जनु चंद बिच फंद छौना फनी । लसत सिर मोर पर खौर चन्दन दिये कमल कर वेनु सुख देन लोचन अनी ॥ ध्यावतु प्रताप सब काम पूरन करन सकल सुखधाम अभिराम राधा धनी । निरखि सखि० ॥ ६० ॥

राग अड़ाना कान्हरा ख्याल तिताला । नवल किशोरी रीस भूल गई रस बस । मनहि सिहानी सकुचानी बानी सुनि सुनि अंग न समानी उमगानी रंग रस मसि ॥ वि-

हँसि निहारी जब प्यारी बनवारी तन मिटि गई सब जिय मान की कसबस। पुलकि प्रताप अति रस अनुरागे पागे उमगि उमगि गरे लागे दोउ हँसि हँसि ॥ ६१ ॥

राग रासा कान्हरा ध्रुपद चौताला। आगे आग मुख मयङ्क आभा अमित शरद चंद करत प्रकास। पीछे पीछे कारी घटा सी भवर भीर सखि सब आस पास ॥ जुथ मोरवौ चकोर चहुंओर करे प्रकास। कहे प्रताप ऐसि भाति चलि राधे रूप रासि श्री ने कुञ्ज हरि नेवास ॥ ६२ ॥

जोड़ा। प्यारी तेरे इंदु भाल भाग के भवन हसत वेंदी लसत लाल। सोहत सोहाग अचल पीछे अनुराग कीन्हो रस वेलि आल बाल ॥ तूं री नवल वाल रूप के प्रताप जाल लटु होइ रहे लाल तेरे गरे के माल भै री गोपाल लाल ॥ प्यारी तेरे इंदु भाल भाग के भवन० ॥ ६३ ॥

राग जलधर कान्हरा ध्रुपद चौताला। री कीधों प्यारे हरि किधौं जलधर कारे झुकि आए देखत रही हौं चकमकानि। रीकीधों ॥ पीरोपट किधौं दामिनि मुकुता किधौं वकपांति मोर मुकुट सीस किधौं इन्द्र धनुष मयो तामें उदित आनि। रीकीधौं० ॥ निरखि निरखि थकित भई परखि परखि चकित आलि तूं तो अति चतुर सुघर समुझाय कहो तो पै जो लखा न अनुमान। दरवि की छटा छाये सोभा किधौं झरलाये होत मधुर नूपुर धुनि कहि प्रताप किधौं घन को घहरान ॥ रीकीधौं ॥ ६४ ॥

राग दरबारी कान्हरा चतुरंग। कालिय फन पर हरि नाचि रहे । अतीत अरु अनाघात सम विशम फनन प्रति परत आय। कालि०। स—सगमग—ध—पपमगरेस निनिधा निनिधा पपममगगरेसगरेस निनिधा निनिधा प मगरेसागसारेग म—प—निनिधानिनिधा—प—मगरेसा॥ कालिय० ओदनदीं तनुधृत्तं तरतोमरदानीनितनारे तिनारे नितारे नितारेधिरत्तुतादिरतोमरदानी तानादिर्दिरताना दिर्दिर किटकडांतिगधा किटकडांतिगधा किटकडांतिकधा किडनक्षतकधुमधिंतक धिधिगनधा किटकदिगनगिगिनकधा धाक डांकडांकझकिट किटथोंकिटथोंधृकिट किटथोंधृकिट किटथोंकिटधृकिटधागदिगनतकधा सुमन प्रताप करैं जु दृष्टि नभसुर विमान रहे गगन छाए॥ कालिय पर०॥६५॥

रागदरबारी कान्हरा ध्रुपदचौताला। शप्तसुरन के खंभ तिछन छाए वोनचास तान सो सप्त सो चारे ताके लगा दूक चारि कनगुरे तापे उपजक कलस अमल। लाग डांट धुजा तापे घनक धमक फहर सोइ प्रमान शप्तक असथाइ सोइ सुमे विमल॥ चिविधि मुरछन कि एकईस जो प्रकाश भेद सो गुमटि के जो पतिआर सुरति केर चरन चेइ नवा दिन रंगे चो ग्रामन के तिमहले रोहि वोरोहि के निशेनी से ढरन मोरन के चढ़न चलन पंचरंभ के लगन लसे सेवे जुगल जस प्रताप सकल राग विहरे शब्द ब्रह्म महल॥ सप्त सुरन के खंभ॥६६॥

राग मलार ख्याल तिताला। सुघड़ कान्हा गरे लग अ
छन अछन कै। नूपुर रनकै किंकिन झनकै बाजूबंद हार
कर कङ्कन पायल बिछुवान ठनकै॥ जागत हैं गुरुजन सब
घर के ननद बैरिनी मेरी अनकै। हौं तो प्रताप भई अब
तेरी मन वच कृम तन मन कै॥ सुघड़ कान्हा० ॥ ९७॥
जोड़ा गौड़ मलार का। छबि लखि मदन लजात माथे मु
कुट तिलक मुरली हाथ बनमाला काली फन पर राजै।
अनगन गतैं लेत तुरपन फन फन पैं गोपा नाचत तांडव
के गतिन गगन गंधव गावत सुर बिन मृदङ्ग बाजै॥ छबि
लखि०। कुसुम किरिन बर्षै देवता नभ निरखि रूप सुधा
सिंधु मोहि रहे सभ भये सुरति सुख में मगन फनन मैं
चै तालन तत साजै। कौल भार लादि कृष्ण नागरथे ज
मुन के जब तीर आय हर्ष को बढ़ाय निरखत ब्रज जनन
प्रताप छबि छाजै॥ छबि लखि मदन लजात० ॥ ९८॥
राग मलार ख्याल तिताला। सखि ये नयन मोहन सो अ
टके फंदि गये अलक लटन मैं वँट के। नैनन कल नहिं प
ड़त रयन दिन वेइ आंखन मैं खटके॥ अब प्रताप बीतत
निसि बासर जोहत सुख वहि नागर नटके। सखि०॥९९॥
राग देस ख्याल तिताला। अब कैसी कीजे प्यारे फिरि
बेनु बजी कहं बन से। आधी रात तीर जमुना के कान्ह
बजाई मन से॥ खुलि गई पलक उचट गई निंदिया सुधि
न रही कछु तन से। सुनत प्रताप भई गति मन की

ज्यों चातक कौ घन से ॥ अब कैसी कीजै प्यार० ॥ ७० ॥

राग देस सोरठ ख्याल तिताला । बाजै पायल झम झम झम नागति लचकि मचकि कान्ह नाचत नानु सुजान । निर्त्तत प्रताप नट नागर जमुन तट मुरली बजत तनन ॥ बाजै पायल० ॥ ७१ ॥ राग देस ख्याल तिताला । ए वीर बटोहिया मधुपुर लिए जा पाती हमार । हाहा पैंया मैं लागो तेहारे मानैंगी उपकार । विलमि बिदेस प्रताप रहे हरि जीवन प्राण अधार ॥ ए वीर बटोही० ॥ ७२ ॥

राग देस ख्याल तिताला । हो मीत कन्हैया नैया हमारी लगा दे पार । लहर प्रताप कठिन भव निधि की आन पड़ी मँझधार ॥ हो मीत० ॥ ७३ ॥ राग देस ख्याल तिताला । हे वेलरिया हमैं बता दे जहां कृष्ण हमार । मरत जिआवो हम दासी तेरी बेगि मिला दे हरि प्रान अधार ॥ हे वेलरिया० ॥ ७४ ॥ राग देस ख्याल तिताला री मोरे अँखिअन बसि रहे स्याम । कासौं दरद सुनाऊ टुक टक रहत पलक नहि लागत निसिदिन आठो जाम ॥ सुरति स्याम छबि सिंधु समानी जैसे व तैसे धाम । गिरि बन कुञ्ज प्रताप लता द्रुम जित देखौं तित स्याम ॥ री मोरे० ॥ ७५ ॥ राग देस लैदार तिताला । कोऊ नहि छैल कान्ह हटकै पनिघटवां जिय खटकै । निपट कपट यदु लपटि दपटि हठि मटकि सटकि झट चट पट आनि फिरि लटपट गहत न हटत हटके चट झट पट घर ——कै ।

कोऊ० । लँगर कन्हाइ सरमाइ न डेराइ दइ मग रोके आइ बरिआइ गरलाइ मुख मुख सो मिलाइ सटकै । रसिक प्रताप रस चसक चिसिकि गइ मिसिकि मिसिकि लुकि खिसिकि खिसकि चली सिसकत डरत लजाय छिपि जाय बन धरत कन्हाइ धाइ अँक भरि लाय लाय कसकि मसकि झटकै ॥ कोऊ नहि छैल कान्ह हटके ॥ ७६ ॥ राग देस आमेज तिताला । सजन तेरे दरस बिना मेरे तरसौ रहैं दोऊ नैन । ललित त्रभंग सांवरी . रति अधर कमल प्रबैन ॥ कब देखैं वह छबि नैनन भरि जो पावै जिय चैन । यहै प्रताप रही लगि आसा आठ पहर दिन रैन ॥ सजन तेरे ॥ ७७ ॥ राग देस ख्याल तिताला । मोहन तेरे पैंया परूं नेक गागरिया दे उठाय । पनिघट घाट निपट रपटीली बँहिया पकड़ि के निबाहि ॥ मोहन तेरे० । सघन कुञ्जबन आइ अकेली लै चलु संग लगाय । मोहन तेरे० ॥ वेसर से मेरी लट अरुझानी हाहा तनक सुरझाव । मोहन० ॥ कहे प्रताप वेसर सुरझावत नैन गये अरुझाय ॥ मोहन तेरे पैंया० ॥ ७८ ॥ राग देस ख्याल तिताला । मोहन मेरी गागरिया देख कांकरिया जिन मार । रंग रँगीली गागर मेरी मोतिन झालर दार ॥ मोहन० ॥ पहिलइ पहिल आज पनिघट मैं आइ नई पनिहार । मोहन० ॥ निरखि प्रताप रहे छकि मोहन ऐसी सुघड़ ब्रजनारि ॥ मोहन ॥ ७६ ॥

राग सोरठ ख्याल तिताला। बांसुरी सुनि प्यारे सजन की। चली बावरौसी ब्रज बनिता धुनि मारग गहि लौनि कुंजन की। अस्त व्यस्त भूषन पट पहिरे आंख अँजन एक बिना अँजन की॥ लोक वेद डर भय सब त्यागी सोच न कीनी गृह गुरुजन की। जाय प्रताप मिली मोहन सों व लिहारी ऐसे वेनु बजन की॥ बांसुरी सुनि० ॥ ८० ॥

जोड़ा। अबहि तू सांवरे रङ्ग रँगी। पुलक अंग सुख खिले कवल से नवल नेह रस पगी। अवहीं तू०॥ आवति है रँगि मगि कुञ्जन से मदन जोति जग मगी॥ अबहीं तू०॥ कित गिर गई भाल की बेंदी अङ्ग स्वेद सगबगी। अबहीं तू०॥ आज प्रताप दुराव बनत नहिं लाल ने कहा ठगी॥ अबहीं तू० ॥ ८१ ॥ राग सोरठ ख्याल तिताला। बँसुरिया थारी खूब बजी हो राज। रतन जटित धारे अधर कमल पै बहुतै नीकी सजी। जल थल जीव चराचर मोहे शिव विधि ध्यान तजी॥ सोलह सहस प्रताप गोपिका थारे सङ्ग रास रची॥ बँसुरिया थारी० ८२

राग सोरठ ख्याल तिताला॥ निपट अनोखि वो राज थारी प्रीत। जब लौं प्रफुल्लित कमल मालती तब लौं भौंरा मीत ॥ चिनगी चबत चकोर तऊ तेहि ससि दरसन से सीत । हमैं प्रताप सदा मोहन सङ्ग वन चातक की प्रीत॥ निपट अनोखि वो राज थारी प्रीत ॥ ८३ ॥

जोड़ा। नहिं भुला दी वो राज थारी नेह। थारी हँस

न मिलन बोलन वह कौनी उर में गेह ॥ जमुना गिरि गह्वर बेलिन द्रुम निरखत सुधि नहि देह । लगी प्रताप रही नैनन झर ज्यों सावन को मेह ॥ नहि भुला० ॥८४॥

राग सोरठ मलार ख्याल तिताला । तो विन को यह नेह निबाहै । ऐसी हित प्रतिपालन हारो तूही एक सदा है ॥ हँसे हंसत बोले बोलत हँसि मिले मिलन को उमा है । जोइ जोइ चाह प्रताप करत चित सोइ सोइ राज तूं चाहै ॥ तो विन को यह नेह निबाहै ॥ ८५ ॥

राग सोरठ कैदार ख्याल तिताला । सांवरो भयो री ह्मारे नयन को तारो । सोवत जागत स्वपन रैन दिन घरि पल छिन कहुं होत न न्यारो ॥ स्याम दृगन कै दृग ये स्याम में यह कछु सूझत नहि निरवारो । कुञ्जन प्रताप पत्र फल फूलन झलकत सखि वह बांसुरि वारो ॥ ॥ ८६ ॥

जोड़ा । आ मिल वो म्हाराज धनी । तड़फत नैन दरस देखे बिन ज्यों मनि हीन फनी । ललित कपोल कलित लट कुण्डल लोचन कोर अनी । लटक दृभङ्ग प्रताप बसी उर कोटि मदन कमनी ॥ आमिल वो म्हाराज धनी ॥ ८७ ॥

राग सोरठ ख्याल तिताला । सांवरे यह कैसी तेरी बान पड़ी रे । ब्रज गोपिन की प्रीति बिसारी कुवरी से अँखिया लड़ी रे ॥ घन प्रताप बरसत है गिरिविनि बूंदन बढ़िय बड़ी रे । एक बूंद कों पपिहा तरसत तड़फत घड़िय घड़ी रे ॥ सांवरे यह कैसी तेरी बान पड़ी रे ॥ ८८ ॥

राग सोरठ ख्या० तिताला । सांवरे तू कांइ ह्मारी सुद विसराई रे । कैतु हमारे जिय की न जानै हो कै जिय धरि निठुराई रे । सांवरे० ॥ विष जल ते सब गोप उबारे हो डूबत ब्रजहि बचाई रे । सोचि यहै जिय हो प्रताप के हँसै न तोहि चवाई रे ॥ सांवरे तू० ॥ ८८ ॥

राग सोरठ आमेज भजन । हे करुनानिधान प्रभु जी कछु सुनिए बिनती मेरी । चौरासी में भ्रमि आयो तब कैसहुं नर तन पायो अब इन्द्रिन मन लियो घेरी जहं ममता मोह अंधेरी ॥ हे करुना० ॥ यह कठिन तुह्मारी माया जिन सुर नर मुनि भरमाया तुम बिना लाल गिरधारी कहो कौन सकै निस्तारी । हे करुनानिधान० ॥ जब भाग्य काहु विधि जाग्यो तब आनि कै चरनन लाग्यो सुनि दीन प्रताप को भाषो सरनन की लाज राखो ॥ हे करुनानिधान प्रभु जी कछु सुनिए बिनती मेरी ॥ ९० ॥

राग षमाइच आमेज ख्याल तिताला । झुकि रही ललित जरकसी पाग कल करन फूल दोउ कानन मैं । खंजन से नयन अंजन जु दिए सो कहा छबि काम के बानन मैं ॥ नवरतन हार कंकन किङ्किनि लसै पायजेब दोउ पायन मैं । छबि कहै प्रताप वह मनमोहन मन हरयो बांसुरी तानन मैं ॥ झुकि रही ललित जरकसी पाग० ॥ ९१ ॥

राग षमाइच ख्याल तिताला । देखो देखो इन की वे लरिया कैसी छाई कदम्ब तमालन पै । फलि रहि फुलि

रहि फैलि रही झुकि रही भूमि नग लालन पै ॥ चहुओर मोर गन नाचि रहे अरु भवर नाचि रहे डालन पै । अनगन प्रताप सब ललित कुंज मिलि गुञ्ज मालती जालन पै ॥ देखो देखो ब्रज की वेलरिया कैसी० ॥ ६२ ॥ राग सिन्धु षमाइच ख्याल तिताला । भरन नहि पाऊं जमुना नीर । मग मैं ठाढ़ो छैल सांवरो लिये सखन की भीर । समझति नहि यह गति पनिघट की ननद बैरनि वे पीर ॥ भरन नहि पाऊं० ॥ घर की भइ ना भइ पनिघट की अब कैसी कीजै मेरी बीर । भरन० ॥ ऊपर रिस प्रताप अंतर उर बसि गयो स्याम अहीर ॥ भरन नहि पाऊं जमुना नीर ॥ ६३ ॥ राग षमाइच खेमटा एक ताला ॥

गोरी चली भरन जल जमुना । सारी सुरंग अङ्ग सोहै गहना । वेसर नथ बाजू बंद कर कँगना ॥ गोरी० ॥ घूंघट मारे सोने का सीर वैलना । पायल विछुवा बाजै छमछमना ॥ गोरी० ॥ कारी घटा में विजुली की झंम झंमना । सावन बरसै बूंदन रिम झिमना ॥ गोरी० ॥ भइ अति भीर पनिघट पर जमुना । ठानी प्रताप मोहन रस रमना ॥ गोरी० ॥ ६४ ॥ राग षमाइच खेमटा एकताला रास खेलैं जुगल मिलि वालन । जमुना तीर रास मण्डल जहां जड़ित भूमि नग लालन ॥ सोलह सहस चंद वदनी जहँ नाचैं दिये वेंदी भालन ॥ रास खेलैं० ॥ बीच बीच मोहन बिच गोरी पहिरे मनि मोती मालन । सोहत

जनु लिपटी मोतिन फलि कंचन वेलि तमालन ॥ रास० ॥ तुरप लेत निर्तत पिय प्यारी गति अति ललित उतालन । लचकत कटि उघटत थेइ तायेइ देत सखी सब तालन ॥ रास खेलैं० ॥ बाजत वीन मृदङ्ग बांसुरी उपज तान के जालन । कहि प्रताप मन ध्याव जुगल पद छाड़ि जगत जञ्जालन ॥ रास खेलैं जुगल मिलि वालन ॥ ९५ ॥

राग षमाइच ख्याल तिताला ॥ केसरिया रँगवाला मेरा राज । गोल कपोलन पर लटकारी मुख बीड़ा कानो विच वारी नग जगमग सिर पेच कलंगी सजि सूहा वागा क्या छैल बना वांका । केसरिया० ॥ नवल प्रताप बनावन वारी पग मेंहदी नैनो कजरारी धाधिन्या धिनताक धिनाधिन किडनकतक धिधिंतकधिन्ना दिदिगनधा ॥ केसरिया रंग वा ला मेरा राज ॥ ९६ ॥ जोड़ा । बँसुरिया तेरी बाजी कैसी आज ॥ अधरन पर बंसी धरि प्यारी मदन मंच फूं-की बनवारी तुमतनदिरनानातुमतननतादिरदानीतुमतनदे रनातादिमतननतुमतननननन । बँसुरिया० ॥ सुनत प्रताप सकल मृगनैनी चलि भुएडन कुञ्जन पिक बैनी कटि किंकिनि नूपुर पग पायल अनवट विछुवा बजत छमाछम भननननन ॥ बँसुरिया तेरी कैसी बाजी आज ॥ ९७ ॥

राग ऐजन ठुमरी ॥ सब बेनु सुनि अकुलाय के निकसी । मृगनैनी पिक बैनी बोलिया झलकत अङ्ग कनक सी ॥ सब बेनु० ॥ रमत प्रताप रास बनवारी सुर तानों की झ

नकारी जस छाई जग में रस के बन सो ॥ सब बेनु० ६८

राग षमाइच ख्याल तिताला ॥ नोखो रसिक रंगीलो तू छैल कान्ह । मुख कमल पै धरी बंसी तूं बजाइ बैन लेत दई तीखे तीखे तू मान । नोखो रसिक० ॥ अनियारे तेरे नयना ये प्रताप बने तूं तो ऐसेई रस बस करत प्रान ॥ नोखो रसिक रँगीलो तूं छैल कान्ह ॥६६॥ राग षमाइच ख्याल तिताला ॥ क्या सोचै तूं दिल दिवाने आसिकरा घर दूर छ । मिट्टी का सब बना खिलौना क्या परियां क्या हूर छ ॥ जिसका है सत न निकला महबूब निराला नूर छ ॥ पाकदिलां की इस्क जमा लो कांइ प्रताप गरूर छ । नैन कमल पर अलि उलझ्यो है कुछ समझै सो कूर छ ॥ क्या सोचै तूं दिल दिवाने आसिकरा घर दूर छ ॥ १०० ॥

राग षमाइच तीलाना तिताला ॥ तादिम तनादिर तनदिरना दिम तादीम तनन तुमतनदेरना । तादि० ॥ वोद निदम तनन तदारे तनदिर तनादेरा तानादिरना दानी दानी वोददानी दिरदिर ततोमरदानीधृतुं तननतुम तादिरना ॥ जे आवे चस्म मनगिल सुदवराहे इस्क मंजिल हन दानंताचेगुलहा बिसगुफत आखिर अजगीलहा । सरेगस्न पधनीनीधध पपनीधा ममगगरेरे सम पम गरेसा प्रताप मृदंतिगधातिगधागिदिगनधताकिडनकतकनककिडनकधिधिन्नाधा ॥ तादिमतना० ॥ १०१ ॥

राग षमाइच खेमटा एक ताला ॥ रास खेलै कन्हैया

वालन मैं । फूलन मैं औ फलन दलन मैं बिंब झलकै नग लालन मैं ॥ श्रम जल बिंदु रह्यो मुकता लौं लटकि लट कि लट जालन मैं । बीन मृदङ्ग पगन घुंघुरुन की बाजत मिलि सुर तालन मैं ॥ ललित निकुञ्ज प्रताप लता घन जमुना तीर तमालन मैं ॥ रास खेलै कन्हैया० ॥ १०२ ॥

राग षमाइच खेमटा एक ताला ॥ तेरे दोउ वांके नयन लड़े, श्री ब्रजराज दुलार । रतनारे प्यारे अनियारे उर में आनि अड़े ॥ लोट पोट भये चोट खाय सब घायल कै जु गिरे । जीति प्रताप आप तेरे हग दोउ रहि गये खेत खड़े ॥ तेरे दोउ वांके नैन लड़े श्री ब्रजराज० ॥ १०३ ॥

राग षमाइच ख्याल तिताला ॥ ठाढ़ो छैला कान्ह कदम की छहियां । नैनकमल कर कनकल टेरत हेरत हंसि नर्म सखा गलवहियां । जीवन प्रान प्रताप सांवरो चरण उरझि चित रहियां ॥ ठाढ़ो छैला कान्ह कदम की छैयां० ॥१०४॥

ठुमरी ॥ ना सहिहौं रे छयल तोरी गारी । एक एककी मैं लाख कहौंगी रे हम वरसाने की नारी । बहुत प्रताप सही मैं तेरी रे अब न सहौंगी बनवारी ॥ ना० ॥१०५

राग षमाइच ख्याल तिताला ॥ धीर समीर तीर जमुना के रमत रास रस बनवारी । झनक किङ्किनी कंकन नूपुर छाय रही कुञ्जन सारी ॥ बीच बीच नाचत मनमोहन नाचति बिच बिच ब्रजनारी । तुरप लेत झलकत है मानहु घन दामिनि की पतियां री ॥ बजत मृदङ्ग बीन

सारङ्गी तक्किटगदिगन तक्किटगदिगनकतारी। लटकिलाल उघटत संगीत गति लखि प्रताप तन मन वारी ॥ धीर स मीर तीर जमुना के रमत रास रस वनवारी ॥ १०६ ॥

राग विहाग ध्रुपद चौताला। मृग नैनी चंद वदनी वृ षण प्रिया वल्लभा राधे रानी। जाकी कला अंस रति रंभा भारती उमा रमा ब्रह्मानी॥ मृग०। जाहि जपत अन ईस ब्रह्मपर भयो सोई रासेश्वरि ध्यानी। मन वच क्रम प्र ताप को अब एक सरन चरन महरानी॥ मृग०॥ १०७॥

जोड़ा। पौढ़े दोउ सेज सुमन वतियां करत करत अल साने। प्रफुलित मालती कुंज डोलत पवन मंद सीतल म करंद साने॥ ढरत चंद रैन ज्यों ज्यों छाया द्रुम ढरत त्यों त्यों कालिंदी झरझराने। कुञ्ज द्वार ललितादिक भल नयना बैठी प्रताप रस साने॥ पौढ़े दोउ०॥ १०८॥

राग विहाग ख्याल तिताला। जाके उर बसे न श्री नदनन्द। मिटै न पटल तम ताकि उर को उगै जौं कोटिक चंद॥ मूरति ललित त्रभंग मनोहर सत चित घन आनँद। ता बिनु सुख न प्रताप तिहूंपुर समुझि देख मति मन्द॥ जाके उर बसे न श्री नदनन्द॥ १०६॥ राग विहाग ख्याल तिताला। हरि को कपट सेयानो हम नहि जानी। मंद हँसन तिरछी चितवन पर सब बिन दाम विकानी॥ हरि० हम भई दीन मीन बिन जल ज्यों सो कुबुजा भई महरा नी। नोखी प्रीति प्रताप स्याम की रहि गई नेह निसा

नी ॥ हरि को० ॥ ११० ॥ राग विहाग ख्याल तिताला। जोगिनि ह्वौं बनि जाऊं जो हरि को पाऊं। तजि गृह ग्राम बसो गिरि कंदर बन बन अलख जगाऊ ॥ जो हरि को०। करमाला धूनी मृग छाला भस्म अखण्ड रमाऊं। पहिरूं मुद्रा कंथा सेली सिंगी नाद बजाऊं ॥ तीन बंद नव नाड़ी सोधो अचल समाधि लगाऊं। परि परि चरन प्रताप स्याम के अपनी चूक बकसाऊं ॥ जो हरि०॥१११॥

राग विहाग ख्याल तिताला। कृष्ण प्रिया पटरानी जमुना महरानी। रिद्धि सिद्धि निधि दासी जाकी वृंदाबन रजधानी ॥ अर्थ धर्म अरु काम मोक्ष सुख सकल सुगति की दानी। कोटि सेष श्रुति महिमा जाकी रुकै न प्रताप बखानी ॥ कृष्ण प्रिया पटरानी जमुना महरानी ११२ ॥

राग विहाग ख्याल तिताला। ऊधो गोपिन को समुझावत ब्रह्म निरूपण ज्ञान। समुझि प्रताप जगत सब मिथ्या तज्यो मोह अज्ञान ॥ ११३॥ राग विहाग ख्याल तिताला नैनन मेरे बसे बनवारी। सांवली सूरति मोहन मूरति तन मन धन तापर सब वारी। गोल कपोल प्रताप मनोहर मोर मुकुट लट घूंघर वारी ॥ नैनन मेरे० ॥ ११४ ॥

राग विहाग सैन के पद ख्याल तिताला। फुलवन चुनि चुनि सेज बनाई। फूल महल मै पड़ि गय परदा खिलि रहि रूप जुन्हाई ॥ फुल०। रंगनि मग सुख लुटति सखी जन सूरति कला रस सुधि बिसराई। अमित प्रताप रसि

क रति दंपति पौढ़ हैं दोऊ लपटाइ॥ फुलवन० ॥ ११५॥
राग विहाग ख्याल तिताला। सुधि मति मोरी विसरै
वो हो साजन। गुन अवगुन सुख दुख विधि सब भइ सो
कछु चित में न लेयो हो साजन। बांह गहे की लाज नि
वहियो बिछुरे भुलि मति जैयो हो साजन॥ बिकल जानि
इन नैन चकोरन मुख ससि वेगि दिखैवो हो साजन। वि
नै प्रताप की बहु विधि तुम सों लिखि लिखि पतिया पठै
यो हो साजन॥ सुधि मति मोरी विसरैवो हो० ॥ ११६॥
राग विहाग ख्याल तिताला। बंसी वाला रे अब ना
मानौंगी तोरी बात। नयन कपोलन कहां रँगाये कहां गँ
वाए सारी रात। बंसी लटपट पाग ऊनींदी अंखियां रे
उझकि झपकि झकिजात॥ बंसी०। बिन गुनमाल प्रगट
गुन बरनत काहे को तूं सौंहैं खात। प्रीत प्रताप कपट
की निबाहन आये हमारे प्रात॥ बंसीवाला रे० ॥ ११७॥
राग सोरठ विहाग एकताला। मोहन प्यारा रे चित
चोर। मुरि मुसकाय चितै रस बस कियो भइ गति चन्द
चकोर॥ मोहन०। नटवर छैल रसिक रति नागर सुन्दर
नंद किशोर। नित प्रताप सुखधाम स्याम घन वारौं मैं
काम करोर॥ मोहन प्यारा रे चित चोर ॥ ११८ ॥
राग संकरा ख्याल तिताला। मानरी मान मनाए लाल
मनाए परि पायन। अब तू प्रताप कहा अब चाहति
नोखि हठीली ठकुराइनि॥ मानरी मान० ॥ ११९ ॥

राग संकरा ख्याल तिताला। प्रान सो प्रान नैन लगे रहैं नैन सो। सोच प्रताप तेरे चरनन अब लगि रहि आठो जाम सो॥ प्रान० ॥१२०॥ राग संकरा झपताला। इन्दिवरन सांवरे कमल नैन मेरी रे सुधि ना बिसारि रे। मन वचन कर्मन करि अब तो प्रताप गहि चरन शरन तेरि रे॥ इन्दिवरन सांवरे कमल नैन मेरी रे सुधि० ॥ १२१ ॥

राग प्रज विहाग ताल धमाल। जोवन रंग भिने दोउ पिउ प्यारे तैसो भीने रैन। तन मन मदन रङ्ग में इस्क में आछे भीने रैन॥ प्यारी भीनि स्याम रङ्ग में पिआ भिने तहँ चैन। भिने प्रताप अधरधरन रङ्गआरस भीने रैन १२२

जोड़ा। कहा के मदमाते आये हो लाड़िले बांधे लटपटि पाग। जावक पीक वदन रँग रँगि रहे खेले कहां कासों फाग॥ निरसनेह में भीनि रहो है अतिहि भरे अनुराग। धन्य प्रताप रैन यह धनि पिआ धनि धनि हमरो भाग॥ कहा के मदमाते आये हो लाड़िले बांधे० ॥ १२३ ॥

राग प्रज ख्याल तिताला। दोऊ कान कुण्डल झुलै लसै गरे बनमाल रे। उरपतिरपगति छम छम छम देति सखी सत्र ताल रे॥ बजत प्रताप वीन कर राधा नृत्य करत गोपाल रे। दोउ कान कुण्डल झुलै लसै गरे० ॥ १२४ ॥

राग कालिङ्गड़ा तिताला। कालि मदनगोपाल लाल अलिनाथ लै आइ। कमल भार त्रिविधि निरत करि जसोदा निहाल॥ कोटि कमल लिय जाय गोप दिय भेय

कंस उर साल । निरखि जल भरे ब्रज आ आनन्द छाये नित प्रताप नय ख्याल ॥ लाल अलिनाथ ले आय ॥ १२५ ॥

राग कालिङ्गड़ा तिताला । सरनागति गुरु चरन कमल को । मधु मकरंद विभूति मुक्ति म जोति कांति नख चंद विमल को ॥ मन वच करम सो गति एक मेरे सदा मीन को जस रह जल को । राखिय सरन प्रताप दीन को बिरद विचारि दीन वत्सल को ॥ १२६ ॥ जोड़ा । अब अवसर नहि देर करन को । पौंड़ि थको यह भौसागर में दीजिय प्रभु आलंब चरन को ॥ जो मेरे औगुनहि बिचारे तौ कहुं नहि निस्तार तरन को । कीजिय पार प्रताप दीन को रखिवो लाज ब्रजराज सरन को ॥ अब० ॥ १२७

राग जाजवंती ख्याल तिताला । बँसुरिया मत तूं बजाव रे मोहना रस बावरय नन्द सुवन जसुदा के लाल ए । सुनि प्रताप धुनि रहि न जात गुरजन रिसात कसकत सु गात परु पायन तेरे रे ऐसी तान न भरी ॥ ब० ॥ १२८ ॥

राग सोहनी ख्याल तिताला । बनवारी के रूप निहारी आइ रे । निरखि सरूप छकित भैइ ग्वालिनि तन मन धन सब वारी आइ रे ॥ बंसीवन कु विलासी मोहन सभ नैन रँगीले रँगाइ आइ रे । पुलकि प्रताप लता भुज नागरि नागर के गरे डारी आइ रे ॥ बनवारी के रूप निहारि आइ रे ॥ १२९ ॥ राग सोहनी ख्याल तिताला । ना बसौं गौ जसोदा तेहारी नगरी । भोर होत वीरहन लै आई

नन्द भवन गोपी सगरी ॥ नाब० ॥ नित प्रति रारी प्रताप करत ब्रज नहि मानत मोहर रगरी। चोली फारी तोरी हरवा लूटि लेइ दधि की गगरी ॥ ना बसोंगी० ॥ १३० ॥

राग मालकोस ख्याल तिताला। नइ नइ गति दिखावत दोऊ पियप्यारी उघटत संगीत रासमंडल मधि राजै। अतित अनाघात तुरप छमकि छमकि लेत हारव पर नारै जसुमारै होड़ बढ़ै हंसि हेरैं ताल भेद रीझि रीझि वारै न्रतत छाजै ॥ सुधंग गति दिखाइ लटकि ऊटकि पटकि पाय कुण्डल अति डोलै हिय खोलै मृदङ्ग वीन आदि सघन सिधीर ततसाज भांति भांति के लहरै मिल वाजै। कुंज महल के आंगन छके प्रताप न्रतत राधा श्याम निरखत आजै ॥ नइ नइ गति दिखावत दोउ० ॥ १३१ ॥

राग मालकोस ध्रुपद चौताला। सप्त स्वर्ग पाताल सप्त विधि ने जो रचे तिन तिन मधि जन्म कर्म सदाचार थापे अन्तर सकाम प्रकृति कला सक्ति तें संभार। स० ॥ त्रयगुन विवस ये सर्व जीव कर्मक फल न सुख दुख न नर्क स्वर्ग न भ्रम तजो पाप पुन्य भोगत को जानै छुटै विषै कारन कठिन निस्तार ॥ स० ॥ जल थल अग्नि वायु अकाश बुद्धि अहंकार मन जु येइ अष्ट अंत आदृत करिकै ब्रह्माण्ड दृढ़ गोलक वहिर पुनि ज्योति अरु काल तल फिरन्य निराधार ध्यान विराग विधान दान ध्यान जोग तप नेम मिलै पारस सतगुर ज्ञान नयन पाय उर वाद विवाद हया

जानी ससगगमसा गगमधनिनिसा निनिधधमगसा पार प्रताप लखावै आप प्रभु पारब्रह्म परम्पर ॥ सम॰ ॥१३२॥

राग हिंडोला ध्रुपद चौताला। सदा आनंद मई सर्व संपति दंपति राजत गौर स्याम दोउ कल्प तरवर सेवत हौं पद सुख को रासि अविकार ॥ सुजस जाको निरमल सब लोक लोक जो प्रकाशित आदि अनादि निवास को सब कौ सोइ अधार। पंडित विद्या वेद विचारै वह विधि अलख ब्रह्म सब ढूढ़त है विधि नेषद मुख ते भेद निस्तार। अनुदिन कालिंद्रि निकुञ्ज सदन औ ब्रिंदाबन सोइ आप प्रताप दोउ रास रमैं रस मैं बिलसैं सत चित आनंद जुगल मुरति विमल रस केल विहार॥ १३३ ॥

राग विहाग के मांझ ख्याल तिताला। क्या सोचत जिआ माह अब प्रभु। कवन विचार कौनि आगे तुम तीनि लोक के नाह॥ जो समरथ नहि निस्तारन को चरन कमल के छाह। तौ प्रताप शरनन कत राखन दै बीरा बरवाह ॥ १३४ ॥ राग मलार ख्याल तिताला ॥ लाल की छवि दृग न बसी री। मोर मुकुट कुण्डल कल राजै गोल कपोल अलक छबि छाजै गर मोतिन की माल विराजै नूपुर कत गिरि गङ्ग धसी री॥ कटि पट पीत काछनी काछे नटवर भेष बने अति आछे पद कमलन मनि नूपुर सोहै नख उपमा नहि कोटि ससी री। तन त्रिभङ्ग की लटक सुहाय कनक लकुट सो पग लपटाय ठाढ़े तरु तमाल तट छाय

मुरली अधर प्रताप लसी री ॥ लाल की छबि० ॥ १३५ ॥

अलाप ले जोड़ तिताला । जौने राग में बनावे तवने राग में सही । मान मान ठनगन मत ठान तू अरुन करन चरनन परसत प्रिय कलन पलन छिन ललन नेक लजिय दृगन लगन टकटकन लगन तुअ तनक निरखि हंसि अब का भौंहैं तान राधा मान ॥ मान मान ठनगन० ॥ १३६ ॥

राग विहाग के मांझ ख्याल तिताला । चरण शरण जानि जनहि पाहि राधिके, कीजिये कृपा कटाक्ष सूख आगाधिके । प्रेम रूप रासि कृष्णचित्त रंजनी, ललित मंद गति विलास हंस गंजनी ॥ चरण० ॥ स्वामिनि कृपामयी व्यथा निकंदनी, सदय हृदय सदा श्री वृषभान नंदनी । चरण० ॥ विनय जन प्रताप सुनिये भक्त भावनी, लीजै सुधि दीजै भक्ति विश्व पावनी ॥ चरण शरण० ॥ १३७ ॥

राग वसंत बहार ख्याल तिताला । बेलिया फुलि द्रुम छाइ । नयो नयो निकुञ्ज रितुराज सिंगारे अनना चलत पियारि पिया बिनु ठनगन । वन बिहार मौसम वहारि कुञ्ज कि गलि घेरे मदन लिय भौर भवर पिक छबि छाइ गे नै प्रताप नै वो बाग बन ॥ वेलिया फुलि० ॥ १३८ ॥

जोड़ा । प्यारि उमंगि उर आइ । अति चिहुंकि चकत बन कुञ्ज निहारे विनय मनाय गरे लागे हंसि घन तन । कनक वेलि लिपटी तमाल कामिनि लसि घेरे मदन लिय भौर भँवर पीक छबि छाइ उभै प्रताप करे केलि कुञ्ज

वन ॥ प्यारि उमगि उर आइ ॥ १३९ ॥ राग बसन्त ताल धमाल । राजत बसन्त दोउ राजैं राज, आज प्रथम वृन्दावन समाज । टेक ॥ बिबिधि बसन्ती तने वितान, फरस रंगीली बिछी आनि, मधि रतन सिंहासन पुञ्ज धाम, करि सिंगार बैठे राधा स्याम ॥ रा० ॥ लै लै आइ सब सखी बसंत, बीन मृदङ्ग सब वाद्य जंच, कर कमलन पूजे जुगल लाल, दै दै मौरैं झिलति बाल । रा० ॥ नृत्य गान की मची खेल, अँतर अबीरन रङ्ग रेल, यह प्रताप आसीस आज, नित नित हो ऐसो सुख समाज ॥ १४० ॥ राग बशन्त ताल धमाल । श्री वृन्दावन नित नव बसन्त, जहं विहरत श्रीराधा कन्त नित जमुना तट सुखद वन्त । नित लिपटि रहीं द्रुम वेलि जाल, नित प्रफुलित बन बौरे रिसाल ॥ श्री० ॥ जहँ नित्य फाग रस रास रङ्ग, नित जुगल केलि रस सुख तरङ्ग । तेहि निति मङ्गल आनन्द खान, जेहि नित प्रताप उर कुञ्जध्यान ॥ श्री० ॥१४१

राग बरवा पीलू फागु होली तिताला । हो घटा घन छाइ गुलालन की । दल बादल से डफ गरजत हैं झड़ लागी रंग लालन की । हो घटा० ॥ दामिनि सी गरजति व्रज नागरि वग पङ्गति मोती मालन की ॥ हो घटा० फाग प्रताप पौरी पोखर पै मचिरही गोपी ग्वालनकी ॥ हो घटा घन छाइ गुलालन की ॥ १४१ ॥

जोड़ा । गोरी गवन भुली मरालन की । सुधि नहिं तन

अंचल केशन की गिरि गई नग बेंदी भालन की। गोरी० फिरत भरत मारत पिचकारी रंगि दीनी मुख लालन की। रङ्गि गये बन प्रताप कुञ्जै सब जमुना तीर तमाल न की ॥ गोरी गवन भुली मरालन की ॥ १४३ ॥

राग धमार होली फागु कल्यान। वेसर थिरकि रही अरुझान मोती थिरकत जात । लखि प्रताप पिचकारि लाल जी के रहि गई हाथ की हाथ ॥ वेसर० ॥ १४४ ॥ जोड़ा। खेलत फागु रसिक वर मोहन तैसी चतुर ब्रजना री। चितवन पिचकारी रंग ऊपर रङ्ग प्रताप बनवारी ॥ खेलत फागु रसिक बर मोहन तैसी चतुर ब्रज० ॥ १४५ ॥

राग धमार कामोद फागु होरी ॥ हो हो राज पिच कारी मत मारो। लाख टके की अँगिया प्रताप नई पैंया परी हा हा रङ्ग न डारो ॥ होहो राज पिचकारी० १४६ जोड़ा ॥ छैल कान्ह मद ऐंठोइ डोलै। रङ्ग रँगीलो मद मतवारो लपकि झपकि पट घूंघट खोलै ॥ छैल० ॥ १४७ ॥

राग विहाग फागु होली तिताला ॥ ऐसो रङ्ग मचाइ कन्हाई वांसुरि वाला। रङ्ग मचाइ गुलाल अबीरन मह ल अटारिन छाई। कन्हाई० ॥ रङ्ग प्रताप छुटै पिचकारि न सावन घन झड़लाई ॥ कन्हाई वांसुरि वाला ॥ १४८ ॥

राग पीलू फागु होली तिताला ॥ बरसाने कि रंगीली रङ्ग होरी रे। एक ओर गोप सखा बनि आए एक ओर गोप किशोरी रे ॥ बरसत रङ्ग गुलाल घटाघन दामिनि

सी लसै गोरी रे। तामै प्रताप बीच विच झलकै राधा मोहन की जोरी रे॥ बरसाने को रङ्गीली० ॥ १४६॥

जोड़ा। अब सांवरे से खेलोंगी न होरी रे। औचक गहि मोसौ कीनी वरजोरी मैं तो दिनन की थोरी रे॥ अङ्गिया मसकि गई सारी रंगन भरी मोतिन की लर तोरी रे। अब घर जाय प्रताप कहोंगी कहा आई मैं सासु की चोरी रे॥ अब सांवरे से खेलोंगी न होरी रे॥ १५०॥

खेमटा सिंधु काफी॥ पिचकारी मेरे मुख पर मारि गयो रे ऐसो लँगर निडर वर ढीठ कन्हैया। भर भर मूठ गुलाल सांवरो अँखियन मैं मेरे डार गयो रे॥ पि० घूंघट झटकि मटकि मनमोहन लट गहि मुखड़ा निहार गयो रे। चुनि चुनि गाय प्रताप फागु वह येक येक तन निरवार गयो रे॥ ऐसो निडर वर ढीठ कन्हैया० ॥१५१॥

राग देस आमेज तिताला फागु॥ आज दाऊ कि सौं मैं न मानोगी। कोऊ लाख कहो कोऊ कोटि कहो आज०॥ आज मेरे फन्द पड़े हौ मोहन बदलौ लै सब छाड़ोंगी॥ कोऊ०॥ मुरली मुकुट उतारि पीत पट नथ चूनर पहिरावौंगी। नाच नचाय पौरी पोखर पै फागु प्रताप खेलावौंगी॥ कोऊ लाख कहो कोऊ०॥ १५२॥

राग सोरठ होली॥ हटजा रे तूं छैल गँवार होली तूं क्या जानै। लाख टके की चूनर मेरी तेरी कामरि टके की चार॥ होहो०। जो मेरी चोलि पै छीट पड़ैगी

पड़िहैं गुचों की मार । और ग्वालि सो प्रताप न जनो हम बरसाने की नारि ॥ हट जा रे तूं छैल० ॥ १५३ ॥

राग काफी तिताला ॥ हो हो बंभोलानाथ होली खेलि रहे । डमरू बजाय मुदित मन नाचत सैल सुता लिए साथा ॥ नन्दी भृङ्गी गण सब नाचत नाचत जोगिनि गाथा । हो हो० ॥ दीजै प्रताप को कृष्ण चरण रति कर कमल धरि माथा ॥ हो हो बंभोलानाथ होली० ॥ १५४ ॥

राग आमेज धमादूच ॥ कैसा होली में सांवला झलकै दैया कुण्डल दमकै डफ धमकै । टे० ॥ लिवे पिचकारी गुलाल घुमड़ मैं घन विच दामिनि चमकै ॥ दैया० ॥ झमकि झमकि तकि तकि रँग डारत पायल विछुवा छमकै । सुनत प्रताप श्रवन सो धुनि ऐसे काम दमामा धमकै ॥१५५॥

राग धमादूच तीताला ॥ कान्हा बनि ठनि आयो बरसाने । रङ्ग महल पर खड़ी लालिड़ी सखि पिचकारी ताने ॥ कान्हा० ॥ होय गय लाल गुलाल घटा घन रंगि गये महल अटारी । वीथिन बीच प्रताप कीचि भइ अँतर गुलाल केसर की भारी । डफ धुधुकन की धुनि चहुंदिसि छाई कोउ कोउ नहिं काऊ पहिचाने ॥ कान्हा० ॥ १५६ ॥

राग धमादूच तिताला होली । होली में ठनगन मत ठाने रे । कौन प्रकृति यह तेरी पड़ी अब रूठत है जो घड़िये घड़ी कहा ऐसी भई तूं जो लाल मनावे न माने ॥ होली० ॥ तूं जीवन तन मन धन पिय की पिय के जिय

को न माने । लखि कुण्डल की भलक कपोलन पै अलक केसर की तिलक लकक २ सो जोहि रहे मनमोहन तेरी पलक इक इक रोम के छवि पै प्रताप जाके कोटिन मदन लजाने हो ॥ होली मैं ठनगन मत ठाने ॥ १५७ ॥

राग देस आमेज होली ॥ छयल तेरे पैंया परूं मैं पिचकारी मत मार । नई चोली चूनर चटकीली या पर रङ्ग न डार ॥ छयल० ॥ हाहा सौंह तोहि नन्द बबा की अपनी वोर निहार । अब प्रताप घर जाने दे मोहन मानो गी उपकार ॥ छयल तेरे पैंया परूं मैं पिच० ॥ १५८ ॥

राग गारा कान्हरा ख्याल तिताला होली ॥ छवि पर वारि गई किन सांवरी नारि सिँगारी रे । वेंदी भाल बिन्दु वंदन दिये अँखिया सलोनी कजरारी रे ॥ छबि पर० गोल कपोलन श्रुति भूमक छवि ता ऊपर लट कारी रे । हार हुमेल चारु चोली कसि मोतिन मांग सँवारी रे ॥ नथ अनवट बिछुआ सारी सुहि अरु दुपटा गुलनारी रे । मोहि प्रताप लियो ब्रज नागरि जब मुसुकाय निहारी रे ॥ छवि पर वारि गई किन सांवरी नारि० ॥ १५९ ॥

राग गारा कान्हरा ख्याल तिताला ॥ मुख पर मारि गयो मेरे भरि केसर पिचकारी रे । अवचक लुकि भुकि कुञ्ज गलिन बिच रस चंचल बनवारी रे ॥ छीन लई मेरी भाल की वेंदी घूंघट पट भटकारी रे । फाग के मिसि प्रताप कान्हर देखो तकत सुघड़ ब्रजनारी रे ॥ १६० ॥

राग गारा कान्हरा ख्याल तिताला। अलबेली बिहारी पिचकारी न मारो। तास की मेरी अँगिया अहै रे लाख टके की सारी। जो यामे कहुं दाग लगैगी सास ननद देंगी गारी॥ पिचकारी न०॥ ऐसही ब्रज में कलंक लगावत तुम जो नेक निहारी। जानि प्रताप अजान होत कत चतुर सुघड़ बनवारी॥ पिचकारी न०॥ १६१॥

राग गारा कान्हरा तिताला॥ अँगिया तंग तेरी जालीदार सुरंग। चन्द्र कला सी कोर कुचन की जरी कोर के संग। गोरे गात मढ़ी अति गाढ़ी छवि की लेति तरङ्ग॥ अँगिया०॥ देखि प्रताप लटू भये मोहन उमगो प्रेम उमङ्ग। रहि गइ हाथ भरी पिचकारी भूलि गए सब ढंग॥ अँगिया तङ्ग तेरी जालीदार सुरंग॥ १६२॥

राग ब्रज होली तिताला॥ नेक खोल बदन अरविंद री तरसे तेरे दरस को लख्यो चन्द मलिंद री॥ कहा मान हठ छाड़ मानिनी मेटे बिरह दुख दंद। हिलि मिलि खेल फाग प्रिय के संग छाड़ मान छर छंद॥ घूंघट खोल प्रताप निरखि छवि तेरे बस नंदनंद। तुअ मुख चन्द चकोर बन्यो है तुव मुख कमल मलिंद॥ नेक खोल बदन०॥१६३॥

हिंडोला के पद॥ राग जाजवंती चौताला। हरी वेलि हरी भूमि हरे द्रुम रहे झूमि हरी हरी कुञ्ज हरे बागन सघन मैं। हरे हरे बूंद हरे बादर बरसाय रहे हरी हरी जमुना लहराय रही तन मैं॥ हरे छत्र हरे

चौंर हरी हरी सखियां सब हरी हरी झलकै प्रताप हरे मन मैं। हरे हरे फूल के सिंगार किये प्यारी पिय झूलत हिंडोरे हरे हरे हरे बन मैं॥ हरी०॥ १६४॥

राग जाजवंती चौताला हिंडोला॥ नैन लाल बैन लाल अधर लाल बिंदी लाल लाल लाल दसन हंसन की लगन मैं। चिरा लाल बागा लाल जरी को इजार लाल कलँगी सिरपेंज लाल मानिक नगन मैं॥ सेज लाल कुञ्ज लाल छत्र चौंर व्यजन लाल सुखमा प्रताप लाल बसी है दगन मैं। बांसुरि बुलाक लाल केसरकी खौर लाल लाल मेंहदी रची लाल के पगन मैं॥ नैनलाल०॥ १६५॥

राग मलार तिताला। सावन आयो यारे संग झूलौंगी राज। सघन जमुना तीर प्रफुलित बन भौरे डोलत समीर घिरे घिरे हौं चलौंगी राज॥ ठाढ़ी सब करजोरे ब्रज जुवती निहोरे ऐसी यह रितु भौरे भुले न भुलौंगी राज। पायन प्रताप परि सांवरे रसिक वर अङ्क भरि भरि गरे गर सौं मिलैंगी राज॥ सावन आयो यारे०॥१६६॥

राग मलार तिताला हिंडोला। देखो अनोखो पिउ प्यारी को झुलन बन। रतन जडित भूमि द्रुम बेली रही चूमि झूमि झूमि भार राते पीतरी फुलन बन। सांवरी बनी श्री राधा गोरे कान्ह श्री अगाधा लेत बांटि सुख आधा आधाही झुलन बन। प्यारी के मुकुट सोहे पीतम के बेना मोहे उपमा प्रताप जोहैं जोहैं न तुलन बन १६७

राग मलार ख्याल तिताला हिंडोला। झुलन आंई सब सखियां जहं रसिक छैल ब्रजचंद । वेनु बनावे अति बनि ठनि मृगनैनि ॥ हरित कुञ्ज बिच सुरङ्ग चूनरी नग न छाय रही कारी घटा झूलन छवि को कहै प्रताप नि रखत बनै । झूलन आंई सब सखियां जहं रसिक० ॥१६८॥

जोड़ा। छलन छाड़ि पिय बतियां । तुम हमसे न कहो सब सांचि बात ल लन दुरावो किन संग रहे सारी रैन। छलन० ॥ पलक पीक अधरन बिच अंजन लटक चाल की न्यारी छटा । निपट उनींदे हौ प्रताप कासीं लागे नैन ॥

राग मलार शोरठ ख्याल तिताला हिंडोला। झूलें सखि राधा मोहन । कुञ्जन मैं रंग उमगै मुकुट चमकै च न्द्रिका झमकत सावन। उमड़े घुमड़े घन फूलि रहे बन चहुं ओर मोर सोर करत सोहावन ॥ झूलें० । ठाढ़ि सह चरी गन नख सिष बनि ठनि त्रिविधि समीर पावन । म- धुर सुरन गावै उमँगि भरि झुलावै बजत प्रताप बीन बं सी मन भावन ॥ झूलें सखि राधा मोहन ॥ १७० ॥

राग मलार ध्रुपद चौताला हिंडोला । झूलत प्यारी पिउ दोउ उमग उमगे नए चोप नइ सखियां संग झमकि झमकि । नयो नेह नयो सावन नई लौन ये द्रुम गन नये बोनये घन प्रताप नइ दामिनी जाति दमकि दमकि ॥ झूलत प्यारी पिउ दोउ उमगे० ॥ १७१ ॥ राग मलार ख्याल तिताला । नइ रितु नइ सखियां नइ झूलन । नई प

वन डोलति अनुकूलन नयो सावन नये जमुना कूलन । नइ रितु० ॥ नइ कुञ्जै छाइ नये फूलन नये प्यारि पिय रसको झूलन झूलत दिये गरे गरभुज मूलन । नइ० ॥ नइ लगन नई नेह अतूलन नये प्रताप दामिनि की कौंधन बरषत घन रिमि झिमि नये बूंदन ॥ नइ रितु नइ स० ॥ १७२ ॥

जोड़ा । सांवरे के संग न झूलोंगी ऐसी झूलन । बार बार मोसों अंग मिलावत हंसि हंसि डारै मेरे गरभुज मूलन । रचि रचि हार प्रताप हिये पर पहिरावत रंग रंग के फूलन ॥ सांवरे के संग न झुलोंगी ऐसी झूलन ॥ १७३ ॥

राग मलार ख्याल तिताला । नित नइ छबि सरसान लगी । पावस रितु की रीति सोहावन चारो दिसि दरसान लगी ॥ बन कुञ्जन छाई हरिआली लता द्रुमन लिपटान लगी । झमकि झमकि दमकन लगि दामिनि गगन घटा घहरान लगी ॥ बोलन लगे मोर पिक दादुर बग पंक्ति फहरान लगी । उमड़ि घुमड़ि लागे घन बरसन कालिंदी लहरान लगी ॥ कर जोरे प्यारी जिके आगे उमँग भरी उमगान लगी । सब प्रताप सावन झूलन को सखियां हाहा खान लगी ॥ नित नइ छबि सरसान लगी ॥ १७४ ॥

जोड़ा । प्यारी तेरे नैनन रस बरसैं । आल वाल उर रसिक लाल के प्रेम बेलि दिन दिन सरसैं । प्यारी तेरे० ॥ गई पताल भेद जड़ जाकी तीनि लोक छाई दरसैं । रही झूलि आनन्द फूलि फलि रसिक भँवर झुकि लेत रसैं ॥

प्यारी० ॥ ललित चरित्र सुगंध फैलि रही कवित गुनि गंभव गरसैं । राग रागिनी संवत जाको जा रस को सारद तरसैं ॥ लगि रहि तेहि छाया के नीचे रसिक अनन्यन की फरसैं । नित प्रताप आनन्द उमग रस जगत ताप तेहि नहिं परसैं ॥ प्यारी तेरे नैनन रस बरसै ॥ १७५ ॥

राग मलार ख्याल तिताला । यह छबि यह झूलन यह सावन । यह वृन्दावन कुञ्ज सोहावन, यह दामिनि घुरवन को धावन, यह मोरन की सोर मचावन । यह छबि० ॥ यह प्यारी पिय की बतरावन, यह झोकन की दुति मनभावन, यह मुख पर अलकन को आवन ॥ यह छबि यह० यह सखियन को झमकि झुलावन, यह अति ललित मधुर सुर गावन, यह प्रताप रस को बरसावन । यह छबि यह झूलन यह सावन ॥ १७६ ॥ राग देस तिताला हिंडोला बनि बनि आइ सखी बनवां । एक से एक प्रवीन सुघर कलि कहत कटीली तनवां ॥ बढ़त हिंडोर अधिक छबि बाढ़ी कहि न जात तेहि छनवां । बजत प्रताप मृदङ्ग बीन घन टपकत घन सावनवां ॥ बनि बनि आइ सखी० ॥१७७॥

राग देस तिताला हिंडोला । पिउ प्यारी झूलत वट संकेत । दूकलो आनि मिले तहं दोऊ सावन रजनी सेत ॥ प्रेम सरोवर से तहं आई ललितादिक करि हेत । दिपि दिपि लतन वोट है निरखत तन मन निपट अँचेत ॥ मानिक खंभ पाट की डंडी नग जगमग छबि देत । बढ़त

हिंडोर प्रताप भिझिकि प्रिया पिय अंकम भरि लेत ॥

राग देस सोरठ तिताला हिंडोरा । दोउ झूलैं झूलैं झूलैं हो पिउ प्यारी दोऊ झूलैं । नान्हे बंद सावन घन टपकै मोर कुहुकै जमुना कूलैं ॥ मनि गन जटित पटुलिया डांड़ी दमकति दुति दामिनि भूलैं । छवि प्रताप दोउ लसत पींघ पर लचकि लचकि मचकन झूलैं ॥ दोउ० १७६ ॥

राग षमाइच तिताला हिंडोला । नयो बरसाने हो दोउ झूलत सुख सरसाने हो । प्रफुलित हरित ललित परवत पर गौर स्याम दरसाने हो ॥ परत बुंद दमकत दामिनि नभ सावन घन उमड़ाने हो । कुहकि कुहुकि नाचत मयूर गन करत कोकिला गाने हो ॥ बाजत वीन मृदङ्ग बांसुरी भँवर फिरत मेड़राने हो । उमग प्रताप समाज सखिन की लेति नई नइ तानें हो ॥ नयो० ॥ १८० ॥

राग षमाइच तिताला । ऐसी झूलन न झुलावै हो बालम । कबहुं अकास धरनि पर कबहूं सोचत हिय भरि आवै हो बालम । विनय प्रताप करत कर जोरे अब दावन न छोड़ावै हो बालम ॥ ऐसी झूलन न झुलावै० ॥ १८१ ॥

राग अड़ाना ख्याल तिताला हिंडोला । झूलति अलक लड़ी रतन जड़ी हो । कुञ्ज महल मैं लाल झुलावत सखियां कतार खड़ी ॥ वारत प्रान सँवारत भूषन छन छन घड़ी घड़ी । यह रस सुख प्रताप सोइ जानै जाके झुलक पड़ी ॥ झूलति अलक लड़ी रतन जड़ी हो ॥ १८२ ॥

राग अड़ाना हिंडोल तिताला। हो रंगीले झूलत नंदलाल किशोर। अङ्ग अङ्ग भूषण नग जगमग छवि की उठत झकोर॥ रंगीले०॥ ललत लता मंदिर वृन्दावन श्री जमुना कि हिलोर। झमक प्रताप दमक दामिनि सी बंधि है सखिन की कोर॥ हो रंगीले झूलत०॥ १८३॥

राग शोरठ ख्याल तिताला। बधैया बाजे आज सखी बरसाने। आनँद मगन सुमन सुर बरसैं सुर बधु नचत विमाने॥ बधैय०॥ धुजा वितान कनक महलन प्रति घर घर छाजे सामियाने। कहि न प्रताप सकै अगिनित सुख जो सुख श्री हरमाने॥ बधैया बाजे आज सखी०॥१८४॥

राग शोरठ केदार तिताला। हो बधैया बाजै बरसाने। प्रगटी भान कुमारि आय ब्रज सुखआनँद सरसाने॥ हो० रिद्धि सिद्धि सुख संपति पूरन ब्रज घर घर दरसाने। बरसत सुमन प्रताप विबुध नभ प्रमुदित हनत निसाने॥१८५॥

राग आमेज मलार झपताला। आनन्द मई आज गोकुल विराजि हरि अवतरे आय कमला धनी रे। जरी बादलों के अमितनहीं धुजा धाम नग मोतियन की बिताने तनी रे। अष्ट सिद्धि नवनिद्धि बरषत लुठत द्वार ब्रह्मादि सुर आये याचक बनी रे। छवि आज ब्रज की प्रताप न सकत गाय अगिनित फनीस कोटि कमलासनी रे १८६

राग गोड़ मलार एक ताला। नन्द महर जी के द्वार चलो री आज नौबत झड़ रहियां॥ विमल दिसा जैसे

कुमुदिनि फूली हरि मुख चन्द्र को छहियां ॥ नंद सुवन प्रगटे गोकुल में आनन्द वेलि उलहियां । फैलि प्रताप ति हु पुर फलि रहि फूलि रही डहाडहियां ॥ नंद० ॥१८७॥

राग देस ख्याल तिताला । वधैया लेन आइ सब ब्रज के ललना । चंचल चपल चन्द्रमुख श्रमजल हार हिए विच हलना ॥ कोउ मुख चूमि लाल उर लावत कोउ झुलावत पलना । अब श्री नन्द सुवन चिनु देखे छिन प्रताप कहुं कलना ॥ वधैया लेन आइ सब ब्रज के ललना ॥ १८८ ॥

राग पहाड़िया झिझौटि तिताला । चलो चलोरी खेलन रास कुञ्ज बन वेनु बजी । जमुना पुलिन सुभग वंसी वट रास रच्यो बनवारी । रतन जटित जगमग छबि राजै सरद रयन उंजियारी ॥ कुंज० ॥ ललिता चंपक लता विशाखा औ चन्द्रावलि प्यारी । लै लै नाम बोलावत सबको वंसी टेरि मुरारी ॥ कुञ्ज० ॥ बंसी टेर सुनत ब्रज बनिता तन को सुरति विसारी । लाज कानि कुल त्यागि चली सब कृष्ण प्रेम मतवारी ॥ कुञ्ज०, जरी बादले की सजि सारी आंचर कोर किनारी । कलीदार मोती दावन को सजि लहँगा गुलनारी ॥ कुञ्ज० ॥ बेंदी भाल जड़ाऊ बेना मोतिन मांग सँवारी । करनफूल बेसर नथ कंगना चंपक लो छबि न्यारी ॥ कुञ्ज० ॥ चन्द्र वदनि मृगनैनी नैनन अञ्जन रेख सँवारी । सुन्दर गोल कपोलन ऊपर छुटि रहि लट घुंघुरारी ॥ कुञ्ज० ॥ क्षुद्रघंटिका अनवट विछुवा

पायल की ठनकारी। जूथ जूथ बनि ठनि चलि बन कों उठत शब्द झनकारी॥ कुञ्ज०, देखि चांदनी औ छबि बन की छकित भई ब्रजनारी। मनि मइ भूमि भार फूलन के रहि झुकिझुकि द्रुम डारी॥ कुञ्ज, बोलत हंस कोकिला सारस मृग मयूर शुक सारी। चन्द्रकिरिन रंजित बन जग मग तहां मिले मदन विहारी॥ कुञ्ज०, वंसी अधर अलक लट मुख पर कमल नयन बनवारी। मोर मुकुट कटि काछनि काछे कोटि काम छबि वारी॥ कुञ्ज०, बोले बिहंसि रसिक मनमोहन कहो कुशल ब्रजनारी। निसि काहे बन कों उठि धाई कौन काज जिय धारी॥ कुञ्ज०, हम नहिं जानति कौन काज तुम वंसी टेरि पुकारी। हमहीं पूछति हैं यह तुम सों अहो सुघर बनवारी॥ कुञ्ज०, हम तो वंसी सदा बजावत रचति बात क्यों प्यारी। बन शोभा तुम देखि चुकी अब जाहु घरन ब्रजनारी॥ कुञ्ज०, कुण्डल अलक कलित मुख लखि कै चितवन हंसन निहारी। अब घर जाइ कवन बिन दामन बिकि गइ हाथ तिहारी॥ कुञ्ज०, हमसों प्रीति लगी तो भलि भइ सब कर प्यार हमारी। दूर कि प्रीति हमैं भावत है तुम घर जाहु सवारी॥ कुञ्ज०, दूर से प्रीति करन नहिं जानति हम सब ब्रज की न्वारी। तुमरे सङ्ग आज बन बसि कै ढंग सीखैंगी सब नारी॥ कुञ्ज०, तुम कुल वधू करो पतिसेवा धर्म की रीत विचारी। निसि बसिवो बन में पर पति संग

अपजस पातक भारी ॥ कुञ्ज०, सोरह सहस किये सिर नीचे निठुर बचन सुनि हारी । चरनन अँगुठन सों महि खोदति नैनन टपकत वारी ॥ कुंज०, नैन पोंछि आंचरन सुन्दरी साहस करि सुकुमारी । रस रिस प्रेम विराग आनन भरि गद गद वचन उचारी ॥ कुञ्ज०, निरखि सांवरी मूरति की छवि सुनि बंसी धुनि प्यारी । तजैं नहीं कुल ऐसो को है तीन लोक में नारी ॥ कुञ्ज० हम तप करि तुम को पति पायो हम हैं गोप कुमारी । चीर चोराय हमैं वर दीनो अब भये निठुर मुरारी ॥ कुञ्ज०, मदन ज्वाल प्रगटी बंसी से तन में लगी दिहारी । अधर सुधा दै सींचो मोहन अब हम सरन तहारी ॥ कुञ्ज०, जो न हि सम्भोग मनमोहन मन की पीर हमारी । सोलह सहस सांवरी छवि पर प्रान तजनी वारी ॥ कुञ्ज०, सुनतहि वचन मिले हँसि सब सों लिये भरि भरि अँकवारी । रास विलास करन लागे हरि हरखित भइ सब नारी ॥ कुंज०, बीच बीच नाचत मनमोहन लिये बिच बिच ब्रजनारी । मधि नायक श्री राधा मोहन लखि प्रताप बलिहारी ॥

इति श्री राधा मोहन चरित्र पवित्र समाप्त ॥

दोहा । सैलसुता पति पंच मुख बाणीपति मुख चार ।
पन्नगपति मुख सहस तें गावत लहत न पार ॥ १ ॥
सो लीला हरि राधिका बरन्यौ कछुक प्रताप ।
पढ़त सुनत आनँद बढ़ै नसै विषम त्रै ताप ॥ २ ॥

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध ।
२	५	श	शृ
२	१५	घीणा	वीणा
३	७	घविा	विद्या
१५	५	पुलचावत	पुलकावत
१७	१६	बढ़ाकै	बढ़ावै
१८	१९	संद्री	सुन्दरी
२१	२१	नभग	ननग
२५	१९	मुजा	भुजा
३८	९	तरे	करे
४५	३	विरैं	विहरैं
४५	२१	पंज	पुंज
५४	६	झलैं	झूलैं
६३	२१	लटौ	लूटौ
६४	१२	चक्रीधर	चक्रीधर
६७	६	तिरन्तर	निरन्तर
६७	७	मल	कमल
७२	८	लेय	लेप
७३	२२	सखे	सूखे
८७	२२	फलि	फुलि
९१	१७	झरझि	उरझि
९७	१९	सल	सूल
९८	८	सांवल	सांवला
१०१	१९	कछ	कछु
१०९	२२	०	पट घट पटकां
१२२	४	म	मैं
१२३	२	मोहर	मोहन
१२९	२	जनी	मानौ

